

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

زَايِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَاَبِ (آل عمران- ۱۳)

ये सज्जनिया की ज़ुंदगी के सामान है.
और अल्लाह के पास तो जहोत ही अरुण ठीजाना है.

મોમિન કા કિંમતી સરમાયા

હિસ્સા - ૨

ઈલમી, દીની ઓર ઈસ્લાહી ઈશાદાત,
મોજુદા દોર કે મિજાઝ કે મુતાબિક,
ઈમાન, યકીન ઓર અહેસાની
કે ફીયત પેદા કરનેકા
કિંમતી સરમાયા

h મુરત્તિબh

(મવ.) શમ્સુલ હક હાશીમ

સાંગા-૩૮૮ ૪૨૧.

જલ્લા- આણંદ. (ગુજરાત)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

زَا لِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ (آل عمران- ۱۳)

ये सप दुनिया की जुंदागी के सामान है.
और अल्लाह के पास तो जहोत ही अच्छा ठीकाना है.

મોમિન કા કિંમતી સરમાયા

હિસ્સા -૨

ઈલમી, દીની ઓર ઈસ્લાહી ઈશારાત,
મોજુદા દોર કે મિજાઝ કે મુતાબિક,
ઈમાન, યકીન ઓર અહેસાની
કે ફીયત પેદા કરનેકા
કિંમતી સરમાયા

* મુરત્તિબ *

(મવ.) શમ્સુલ હક હાશીમ

યાંગા-૩૮૯ ૪૨૧.

જુલ્લા- આણંદ. (ગુજરાત)

મોમિન કા કિંમતી સરમાયા હિસ્સા-૨

- મુરતિબ : મવ. શમ્સુલહક હાશીમ
ઇશાઅત : અવ્વલ
સકહાત (પેજ) : ૧૬૪
હદિયા :
ટાઇપ સેટીંગ : ઈમેજ ગ્રાફિક્સ, આણંદ.

-:મીલનેકા પતા:-

મવ. શમ્સુલ હક હાશીમ
મું- પો. ચાંગા-૩૮૮૪૨૧,
જ. આણંદ (ગુજરાત)
ફોન: ૯૯૨૫૫ ૪૨૩૨૦

किताब अेकनजर में

- (१) सही सोय
- (२) अज्लाक
- (३) आदाभे जवारिह
- (४) गलत सोय
- (५) लडार्थ-अघडा
- (६) लइजे काकिर
- (७) सुन्नते रसुल (स.अ.व.)
- (८) धस्लामी निकाह
- (९) तलाक
- (१०) औलाह की तरभियत
- (११) पर्दा करना
- (१२) नेक आतुन
- (१३) वक्त

* ईन्तिसाब (अर्पण) *

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ
 وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
 وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ (ابن حبان)

उन सब दीनी अलबाब की
 भिदमत में जे अल्लाह तआला के हुकमों
 को बजलाने और नबीये उम्मी सैय्यदीना
 उजरत मुहंमद सल्लल्लाहो अलयही
 वसल्लम की हिदायत और उसवअे
 उसनह की पैरवीही में अपनी और
 तमाम औलादे आदम (अल.) की
 नजातका यकीन करते है.

नोंध :- किताब में कौंस के अल्फाज को इस तरह पठें.

मिसाल :- (स.अ.व.) सल्लल्लाहो अलयही वसल्लम

(रही.) रहीयल्लाहु अन्हु वरहु अन्हु.

(अल.) अलयहीरसलाम.

(र.अ.) रहमतुल्लाही अलयही.

किताब अेकनजरमें

- (१) सही सोय
- (२) अज्लाक
- (३) आदाभे जवारिह
- (४) गलत सोय
- (५) लडार्थ-अघडा
- (६) लक्ष्जे काकिर
- (७) सुन्नतेरसुल (स.अ.व.)
- (८) धस्लामी निकाह
- (९) तलाक
- (१०) औलाह की तरभियत
- (११) पर्दा करना
- (१२) नेक भातुन
- (१३) वक्त

* ध्वितसलल (अरुणल) *

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ
 وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
 وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ (अन हलन)

उन सल धीनी अलललल की
 ढलदत में ढे अलललल तअललल के हुकुमों
 को लनललने और नललीये उडुडी सैय्यधीनल
 ललरत डुडंढद सलललललल अलललली
 वसललल की ललदलयत और उसवअे
 लसनल की डैरवीली में अडनी और
 तडलड औललदुे आदड (अल.) की
 ननलतकल डकीन करते है.

नोध :- कलतलड में कौंस के अलललल को धंस तरल डहें.

डलसलल :- (स.अ.व.) सलललललल अलललली वसलललड
 (रधी.) रधीयललललु अनलु वरदु अनलु.
 (अल.) अललललीरसललड.
 (र.अ.) रलडतुललली अलललली.

—: इहरिस्त :—

(१) सही सोच.....	१७
- भुद्य की पढेयान.....	१७
- धन्सानी मिजाज.....	१८
- गइवत का पर्दा.....	१८
- सीपने का मिजाज.....	२१
- धंभ्रत की सोच.....	२२
- हर वक्त युस्त और तैयार रहिये.....	२३
- नवानी का दौर कीमती है.....	२४
- सखी रूप से हटना.....	२४
- हक की पढेयान.....	२५
- भुद्य परस्त धन्सान.....	२६
- हकीकत का धन्कार.....	२७
- भा मकसद धन्सान का किरदार.....	२७
- काम का आदमी.....	२८
- दुस्ने जन.....	२८
- शिकायतों से बचना.....	३०
- धंभ्रत ह्यासिल करना.....	३१
- समाज्ज जलजला.....	३२
- शिकायत के बाबुबुद.....	३४
- शिकायत को कौरन पत्म करना.....	३६
- कोलीनुर डीरा.....	३७
- बुराईमें शिकत का अंजाम.....	३८
- हजरत मुह (अल.) का सभर.....	३८
- अहसान का बहवा.....	३८
- कमीनापन.....	३८
- नकरत.....	३८
- नका बपशी.....	४०
- धन्शाअव्लाह केहना.....	४०
(२) अप्लाड.....	४२
- अख्छे अप्लाड.....	४२
- दुजुर (स.अ.व.) के अप्लाड हरेना.....	४३
- तअजीम और अहब.....	४४
- सहाभा (र.दी.) का मामला.....	४८

-: इहेहरिस्त :-

- सदाबा (२.दी.) की पुंभीयां.....	४५
- ईस्वामी आदाब.....	४५
- आदाबे छंङ्गी.....	४८
- अज्वाकी बिमारी.....	४८
- गरम मिज्ज.....	४८
- पामोशी में नज्ज.....	४८
- अल्काळ की तासीर.....	५०
(३) आदाबे ज्वारिह.....	५२
- निगाह के आदाब.....	५२
- सुनने के आदाब.....	५२
- जवान के आदाब.....	५२
- छाथों के आदाब.....	५२
- पांव के आदाब.....	५२
(४) गलत सोच.....	५४
- बे इयादा बातें.....	५४
- उम्मत के जवाल की अलामत.....	५५
- गलत जेहनसाजी.....	५७
- तकब्बुर.....	५७
- अहले बातिल का मिज्ज.....	५८
- इफ्र और धमंड का नुकशान.....	५८
- गलत डेहमी.....	५८
- क्रिसागोई.....	६०
- तिलीस्माती कलानियां.....	६१
- भरकत का अकीदा.....	६२
- हर चीज में सबक.....	६४
- ईन्सान कित्ना सस्ता कित्ना किमती.....	६५
- अंदेशा (फोइ - डिक्कर).....	६६
- डिक्कर.....	६७
- कस्बी गमसे नज्ज.....	६७
- जयादा उम्मीदे जयादा मायुसी.....	६८
- दोस्त के रूप में शयतान.....	६८
- ईन्सानियत का बिगाड.....	७०
- नादानी का बुरा अंजाम.....	७१

-: इहरिस्त :-

- पाकी और सक्षार्थ.....	७१
- द्विल्ली यस्का.....	७२
- भेलकूट का भुत.....	७२
- नवजवान और गंठे रिसावे.....	७२
- शोपीन मिजळ लोग अल्वाड को पसंद नही.....	७४
- दुनिया आद्रियत की जगा है ही नहीं.....	७५
- टेवीडोन.....	७६
- लाजवाब मुकर्ररि.....	७७
- मुनाद्रिक आलीम.....	७८
- वअज और ईस्वाड की भिष्टमत.....	७८
- दीलों में दुरी का सबज.....	७८
- उसद.....	८०
- नजरे भद.....	८०
- पत्थरों को असर अंदाज समजना.....	८२
- गुमराही.....	८२
- जन्नात शरीअत की नजरमें.....	८२
- जन्नात की धमकी.....	८३
- जदु करना उराम है.....	८४
- जदु का शरई दुकम.....	८५
- तावीज.....	८५
(५) लडाई अघडा.....	८७
- लडाने वाले.....	८७
- कुदरत का कानुन.....	८८
- नये कित्ने.....	८८
- कित्नों के अस्बाब.....	८८
- बे इयदा लडाई.....	८२
- कान के कच्चे.....	८३
- दुश्मनी की वजह.....	८५
- असल कभी.....	८५
- परेशानी का सबज.....	८६
- असल बात से छटना.....	८६
- हिंदुस्तानी रिश्ता.....	८६

-: इहारेस्त :-

- वतन से मोडभत.....	८७
- इसाद.....	८७
- गुस्सा रोकना.....	८७
- दुश्मन से टकराव नली.....	८८
- पुर अमन शहरी.....	८८
- गुस्सा पीने वालों की इजीवत.....	१००
- बेहतरीन र्णसान.....	१०२
- दुनिया के इसाद का जम्मेदार मजलब नली.....	१०३
- शरीरत की ताबेदारी.....	१०४
- घरों मे इसाद.....	१०५
- सुलड-सफाई.....	१०६
(६) लइजे काफिर.....	१०७
- अलकामे कुई.....	१०७
- मुसलमान को काफिर केडने का वभाव.....	१०८
- काफिर और इसाक केडने का रिवाज.....	१०८
(७) सुन्नते रसुल (स.अ.व.).....	१११
- सुन्नत की पेरवी करना.....	१११
- बिदअत की पडेयान.....	१११
- बिदअत की पेदाईश.....	१११
- दीवों को इतड करने का राज.....	११३
- फुदा परस्ती नली.....	११३
- र्णव्रत की याबुक.....	११५
(८) र्स्लामी निकाह.....	११६
- निकाह करना आधा र्मान है.....	११६
- निकाह की दीनी अलमियत.....	११७
- निकाह करने से पडेवे.....	११८
- शादी अपने जेडे को निमाने का नाम है.....	१२०
- निकाह के बाद.....	१२१
- बीवी की फुबी तलाश करो.....	१२२
- बेहतरीन बीवी.....	१२३
- बीवी छो तो औसी.....	१२३
- बीवी के साथ डमईई.....	१२४

—: डेहरिस्त :-

- औरत का दर्जा.....	१२४
- भुसरावमें धंजळत.....	१२५
- दुसरा निकाह.....	१२६
- चार किस्म की भुरी औरतें.....	१२७
- छे किस्म की औरतों से शादी न करो.....	१२७
- आपस में शादीयां जवाब की अलामत.....	१२८
(९) तलाक.....	१२८
- तलाक देने का तरीका.....	१२८
- गुनाहवाली तलाक (यानी तीन तलाक देने).....	१३१
- उलावा.....	१३२
- जन भुजकर उलावा करना.....	१३२
(१०) औलाह की तरजियत.....	१३३
- आप की जम्मेदारी.....	१३३
- आजादी के नाम पर शरकशी.....	१३३
- औलाह की धस्वाह के वीये हुआ करना.....	१३४
- अरछे नाम.....	१३४
- बर्यों के वीये बेहतरीन तोहफा.....	१३६
- अपने वीये और बर्यों के वीये.....	१३६
- नेक लोगों की औलाह.....	१३८
- औरतों की जल्लत.....	१३८
- नवजवानों की बहलावी.....	१३८
- औरतों के वीये नज़री बातें.....	१४०
- औरतों और लडकीयों के पास आदाब.....	१४०
(११) पर्दा करना.....	१४१
- औरतों को पर्दा करना नज़री है.....	१४१
- पराध औरत को देभकर हीव गंदा डोती.....	१४२
- सख्यों का धमान.....	१४२
- सलाबा (र.दी.) का कश्क.....	१४३
- गौसुल आज़म (र.अ.) का कौब.....	१४४
- उलावते धमानी का नुस्खा.....	१४४
- बदनबरी का धलाव.....	१४५
- परा औरत को तन्हाधमें भीवने की मनाई.....	१४६

-: इहेरिस्त :-

- छन औरतों के शौहर सकरमें हो उनको मीवने की मनाई...	१४६
- पड़ोशी की बीवीसे जीना.....	१४७
- लरामी बय्या.....	१४८
(१२) नेक जातुन.....	१४९
- औरत की पुढीयां.....	१४९
- रोजाना की छंछगी.....	१५०
- मोमिनका घर.....	१५२
- तीन मरलवे (मंजीवे).....	१५४
(१३) वकत.....	१५८
- वकत की अलमीयत.....	१५८
- वकत की कहर कीख्ये.....	१५८
- सबसे बडा नुकशान.....	१६०
- अइसोस की नौबत.....	१६१
- वकत अक अखब नेअमत.....	१६१
- बुढापे में कमजोरी और मशगुली बढ जाती है.....	१६३
- वकत के बारे में पसंदीदा अशआर.....	१६४

-- ઈશદિ ગિરામી :-

-: ઇશદિ ગિરામી :-

--: ज़ुंदगी और मुश्कीलें:--

याद रभो ! ज़ुंदगी की ज़वाहिश है तो मुश्कीलातसे गलराना भेकार है. क्युं के मुश्कीलें जींदा और हरकत करने वाले धनसानों के लीये ही है. अेक भेइए लाश के लीये नही. आराम की ज़वाहिश है तो उस्की भलेतर जगह कभर है. भैठे रहोगे तो यकीनन ठोकर नही लगेगी लेकीन जब यलोगे तो ठोकरें भाना जर है.

(किश्कुले हसन - ३६)

--: याद रभिये:--

आदमी की हकीकत उस्का ज़ुस्म नही भलके उस्का दिभाग है. गोश्त और हड्डीयों का ढेर कोध हैसियत नही रभता. आदमी का दिभाग ही उसे सरभुलंद रभता है. दुनिया उस्के कदमों पर जुंक्ती है. और जब यही दिभाग नाकारा हो जाता है तो कदमो पर जुंक्ने वाले धसी गोश्त और हड्डीयोंके ढेर को पकड कर कीसी पागलभाने में भंढ करहेते है और वहां हो जैसे के आदमी उस पर उडे भरसाते है.

(किश्कुले हसन - ३५)

किताब को कैसे पढ़ें ?

याद रखीये ! मुसलमान की निर्यत बलौत ली जयादा अलमीयत रभती है. विडाळा पढने से पढेले ये निर्यत करवें के ईस किताब को ईस वीये पढ रडा हुं के अल्लाह तआला मुंऊसे राळी लो जये और ईन्शाअल्लाह उस पर अमल करने की पुरी कोशीश करूंगा ईस निर्यत से आप पढेंगे तो अल्लाह तआला अमल की तौईक जरूर अता इरमाअेंगे. जस बात पर अमल करना मुश्कील डोगा. आपकी नेक निर्यत और तलब की बरकत से उस पर अमल करना आसान इरमाअेंगे. और जल्ना वकत पढने में अर्य डोगा ईबाहत में शुमार डोगा. बुजुर्गाने दीन ने कुछ नसीहतें वीभी है. जे यहां वीभी जती है.

१. किताब पढनेसे पढेले ये हुआ जरूर करवें के या अल्लाह ईस किताब को मेरी खिदायत का जरीया बना वें.
२. अपने हिल ह्रिमाग और आंभों के परदों को ખोल वीजये.
३. किताब पढने के वीये जैसा वकत नीकाला जये जे उल्लनो या परेशानीयो से धीरा डुवा न लो. कभी.जैसा लोता है के उल्लन सवारथी कीसी और वजह से, और खुंभन महेसुस डोती है किताब के मजमून से.
४. पढेले तौबा, ईस्तीग्कार जरूर करवें ता के दील पर जे गुनाहों का गुबार छाया डुवा है वो हूर लो जये.
५. किताब के मुतावे के वकत अेक कलम साथ रखें और जून बातों में ખुद को कोताली करनेवाला महेसुस करें उस पर निशान लगा दें और उसको बारबार पढ़ें. और उसकी ईस्लाह के वीये ખुब हुआअें मांगे और अमल करने की कोशीष ली करें.
६. किताब पढने की ह्यवत हुसरों को ली दे. और किताब में जे ईमानी तरककी, अख्लाक की बडेतररी और सिफाते अवलीया (रह.) से बोई बात मीवे तो ईन ખुबीयो और सिफात की तरक हुसरे भाईओं को और अपने घर वालों को तवज्जुल दीवारें.

जून बुजुर्गों की किताबों की मद्दसे शायदा उठाकर ये मजमीन तैयार कीये है उनके लक में और ईस किताब को तैयार करने में ली कीसी तरह शरीक डोने वाले मद्दगारों के वीये ખुसुसी तौर पर हुआओं का अेडतिमाम करना.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ.

अपनी जात :-

मुसलमान वो कौम है जस्की ज्दगी परलेजगारी, जुशहाबी, काम्याबी और धज्जत आबइ सिई और सिई लुजुर नबीये करीम (स.अ.व.) के बाये लुवे दीन में है. न्ब तक ये दीन कामिल तौर पर धस उम्मत में बाकी रहा ये कौम धज्जत आबइ से जीदा रहडी, हाकीम रहडी. और उसकी शानों शौकत हुनियाबरमें डैली लुध थी. जस दीन से उरने अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की तावीमात को लडका समजा और उससे मुंड डीराया उसी दीन से उसका ज्वाल शुइ लो गया. अब दोबारा उस हावतको वापस लाने के बीये सिवाय धसके कोध यारा नली के धस पर मलेनत लो. के ये उम्मत अपने प्यारे नबी (स.अ.व.)की तावीमात को धर मामलेमें आगे रभकर यलें.

धर कौम की तरककी के कुछ अरबाब लोते है. उन्में ये ली है के वो अपने जडों को या ज्जके हाथों में ये पलती है या परवरीश पाती है उन्की ज्दगीयों में वो पाकीजा जुबीयां देभती है. ज्जसे उन्की तरककी लुध. तो कौम ली नइर उन्की जुबीयों के असर को कबुल करती है और ये जुबीयां उन्के बीये धस्वाडकी तामीर में पलेवी धंट का काम देती है. और ये जुबीयों लरा धस्वाडी माडौल का पलेवा सबक धरके महरसे में पढाया जाता है और येडी वो महरसा है ज्जकी पलेवी तरबीयतका सलेरा मा-के सरपर आता है.

लिडाजा ये महरसा (मा-की गोद) अगर धमानकी ललेरों से आबाद लो अज्वाक और कीरदार का इलदार दरभत लो और अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की सुन्नतों से आरास्ता लो तो डीर क्या मुशकील है के उसकी गोद में पलने वाला इरजंद दीन व धमान का पाबंद और अज्वाक से आरास्ता न बने.

अलकर के दील में अक अरसे से ये धरादा लो रहा था के कोध ऐसी किताब ज्जमें उम्मत की काम्याबी और धज्जत आबइ हासिल

કરને કા કામ્યાબ નુરખા તફસીલ સે લીખા ગયા હો. લિહાજા અલ્લાહ કે ભરોસે પર કિતાબોં કે મુતાલા કે ઝરીયે ઈલ્મી મજમીન અજીબોગરીબ નુકતે જમા કરના શુરૂ કીયે. જે એક કિતાબ કી શકલ મેં તૈયાર હો ગયા ઓર મોમિન કા કિમતી સરમાયા હિસ્સા-૧, ૨, ૩ કે નામ સે આપકી ખિદમત મેં પેશ કીયા જ રહા હે.

હકીકત મેં બંદે કી હૈસિયત ઈસ કિતાબ કી તાલીફ મેં તરજુમાન કી હે. બંદાને અપની તરફસે કુછ નહીં લીખા ઓર ન ઈસ કાબિલ હે અલબત્તા સિફ વોહી બાર્તે લીખી હે જીસ્કી સનદ કુઆનમજીદ, હદીસે પાક, ઓર તસવ્વુફ કી મુસ્તનદ કિતાબોં યા મશાઈખે કિરામ કે અકવાલ સે હો.

ઈસ્કે બાવજુદ કોઈ બાત યા કોઈ જુમ્લા અહેલે ઈલ્મ યા અહેલે કલમ પર ગીરાં ગુજરે ઓર ઉસ્કી તાવીલ ભી ન હો સકતી હો તો બરાહે કરમ ઈતિલાઅ ફરમા દે. બંદા અહેસાનમંદ હોગા.

અલ્લાહ તઆલા સે ઉમ્મીદ હે યે કિતાબ હર તબકે કે મુસલમાનોં ઓર ખાસ કરકે દીન કે આશિક મિજાઝ દોસ્તોં કે લીયે મુફીદ હોગી. જીન હઝરાત કો ઈસ કિતાબ સે નફા હો વો અહકર કે લીયે ઓર ઉસ્કે વાલેદેન ઓર ઉસ્કે ઉસ્તાઝોં ઓર બુઝુગોં કો અપની દુઆઓ મેં જરૂર યાદ ફરમાવે. વસ્સલામ.

અહકર: શમ્સુલહક હાશીમ.
યાંગા-જી. આગંદ-ગુજરાત
૧, મોહરમ-૧૪૨૪ હીજરી.

(१) सही सोय

पुढा की पहचान :-

अंबिया (अ.व.) ने ईन्सान को अल्लाहतआला की ज्ञत और सिफात और उसकी कुदरतका सही और यकीनी ईल्म अता किया था और ईस आलम की शुइ से आभिर तक और मौत के बाद ईन्सान को ज्हन अलवाव से वास्ता पेश आने वाला है. ईन सबका ईल्म अंबिया (अ.व.) के जरीये ईन्सानों तक बगैर मलेनत और अलेसान जताये पढायाया था. अंबिया (अ.व.) ने ईन्सानों की जैसे उलुममें रलेनुमाई इरमाई ज्हेके उसुव और बुन्यादे उन्को डसिल नही थी. अंबिया (अ.व.) ने ईन्सानो के वक्त और कुव्वत को बचा लीया और भटकने की राडों से बचा लीया और आभिरत की ज्हेङगीके वो डालात ज्हेस्को समजनेके लीये ईन्सान के डवास और अकल काम नही दे सकती थी उसकी तडकीक से इरसद देदी और "वडी" के जरीये उन्को तमाम तइसील बतादी.

लेकीन लोगोंने ईस बडी नेअमतका शुइ अदा न किया और बगैर जरुरत के बेकार सरइडी अपने सर ली. वो डकीकतें जे अंबिया (अ.व.) के जरीये उन्को बगैर मलेनतके डसिल डो गई थी. दोबारा उसकी तडकीक शुइकी. और इनिया आभिरतके ना मालुम डिस्सोमें सइर की शुइआतकी. ज्हेडं उन्के साथ न कोई रलेबर था. और न कोई उस रास्ते का ज्हेनकार. ईस्वीये वो ईस सइरमें जयादा बद किस्मत और कुजुव पसंद साबित डुजे. अल्लाहतआलाकी कुदरत से बना डुवा ईन्ना बडा आलम और उसकी डिक्मतें और आभिरतके गैबी अलेवाल को अपनी मुज्तसर उम्र वाला और मलेदुद (लीमीटेड) वसीले वाले ईन्सानकी मलेनतका अंजम ईस्के सिवा और क्या डो सकता है के थक कर रेल जये. और उसकी डिम्मत जवाब दे जये.

ज्हेन लोगोंने पुढाकी पहचान और उसकी कुदरतके बारे में बसीरत और रोशनी के बगैर कदम रखा तो उन्को उस्के बारे में सिवाय अलग अलग बातों और अधुरी मालुमात - और बेकार जयावात के कुइ डाय न लगा - पुढ सही राड जो बेठे. और इसरोंको भी मंजीवसे भटका

दीया.

सलाभा (२.दी.) दीन के बारे में बड़े भुशकिस्मत और सालीबे तौड़ीक थे. के दीनके बारेमें उन्डोंने रसुलुव्वाह (स.अ.व.) की तालीम और जबरों पर पुरा यकीन किया. और अल्वाहलतआलाकी मजरीकृत (पह्लेयान) में धोका जाने से मडेकुज रहे. उन्डोंने अपनी समजदारी और ताकत की डिहाजत की और अपनी कोशीष और अपने अवकते खंडगी को पुरे अलतियात के साथ दीन हुनिया के मुकीद कामोंमे भर्य किया. वो दीनके मज्बुत लडके को थाम कर यले ईस्का नतीज ये हुवा के अगर हुसरों के पास दीन की मालुमात थी तो उन्के पास दीनका मज्ज और लकीकत थी. (मुसलमानों के उइओ जवाबका असर - ११३)

ईन्सानी मिज्जः:-

भातें हो किस्मकी होती है ओक नसीहत हुसरे तइरीह (मनोरंजन) नसीहतकी बात जम्मेदारीका अलसास दीवाती है. वो आदमीसे कुछ करने और कुछ न करने को केहती है. ईसवीये हर जमाने में जलहत कम लोग जैसे हुअे है जे नसीहत की भातों से दीवयस्पी वे.

ईन्सानका आम मिज्ज लंमेशा ये रहा है के वो तइरीहकी भातों को जयादा पसंद करता है. वो "नसीहतकी किताब" के मुकाबलेमें उस किताबका जयादा जरीदार बनता है जस्मे उसके वीये लज्जत देनेवाली भातों का जयादा सामान हो और वो उससे कुछ करने के वीये न कहे.

सबसे बुरा मिज्ज घमंडी मिज्ज है. जे शम्स घमंडी मिज्ज वाला हो उसके सामने जब लक आयेगा तो वो अपने को बडा समजनेकी वजह से लक (सय्याई) को कुबुल नही करेगा - वो उसको लडका और बेकार समजकर मुंल ईर कर आगे बढ़ जयेगा .

जब के ईमान वालों को उन्का नसीहत पसंद मिज्ज उन्डे मज्जबुर करता है वो लक (सय्याई) का ईकरार करे और अपनी पुरी खंडगी उसके लवावे कर दे. (तजकीइल कुर्आन - ११३४)

हवा का नुस्खा जियारत के वीये नही ईस्तिमाव करने के वीये है. जैसे बिमारों के बारे में आपकी क्या राय होगी ? जस्को अपनी बिमारी मालुम हो. उसके पास डॉशियार तबीब का नुस्खा हो. उस नुस्खेकी

तासीर पर उसको यकीन हो. और वो कभी उस नुरुअे को मोड़बबत से द्देषलेता हो और कभी शंभु भी लेता हो.

लेकीन ये ँस नुरुअे को ँस्तिमाव नली करता..... अैसे बिमारकी ढलाकतमें शक शुभा कुं कर बाकी रेड सकता है ?

मुसवमानों के पास कुअानि मज्दकी शकलमें नुरुअे अिमीया भी है और उन्के सामने ँस नुरुअे अिमीयाको वानेवावी अजीम ढस्ती आकाअे नामदार लुजुर (स.अ.व.) की पाक सीरत भी है.

उन पर ये ज्ममेदारी थी के सारे ज्दानों के पालनढारके ँस नुरुअे को वो द्दुनिया के सामने ँन्सानियत के द्दर्द में ँलाज के तोर पर पेश करते- और रडमतुल वीलआवमीन के द्दर्दमंद उम्मती होने का सुबुत द्दते .

मगर अइसोस ! के उसीका अम्माजा (बदला) है के आज उन्हे ये शिकायत है के वो गैरों की साजीशों और अपनों की सतांश दानों के शिकार है.

ँस्का ढल यली है के मिल्वत दीवो जनसे कुअानि और सुन्नत और रसुवे अकरम (स.अ.व.) की सिरत को अपना रेडनुमा बनाये - और नेक निथ्यती से उन्मे अपने मसांल का ढल तवाश करे.

वरना उस बिमार की तरड ँस मिल्वत को भी कों तबाली और बरबादी से बया न सकेगा - जे द्दवाके नुरुअे को अकीदत और मोड़बबत और उम्मिद के साथ द्देष तो लेता हो. मगर उसे ँस्तेमाव नली करता.

गइलत का पर्दा :-

दुनिया डर दौर में तरक्की करती आगे बढती रही. ँन्सानने अकल और समजके बलबुते पर नं नं यीजें ँजद की. और अेशो-आराम और नुमांशकी यीजें बनाता रहा. पत्थरकी दुनियासे लेकर आजतक की ँजदत पर नजर डाली जये तो आदमी डैरतमें डुब जयेगा. और अब तो ँन्सानने पुदाकी पैदा की लुं यीजें और वसांल को काममें लाकर ँन्नी तेज रइतार तरक्की की है के डैरत के सिवा जवान से कुं नली कला ज सकता.

सायन्सने रेडीयो, टीवी, रॉकेट, टेवीडोन, ँन्टरनेट,

उवाँठलडाळ और दुसरी बेशुमार यीजें ँणद करके दुनियाके सामने पेश करदी- जैसे उथियार तैयार कर लीये के दम बरमें दुनियाको मौत की आगोशमें पहुँचाया जा सकता है. याँद पर पहुँच कर इत्ल का परयम बहराया. और पुकार पुकार कर कडा के डमने दुर दुर तक तुम्हारे भुदा को तलाश किया लेकिन उसका पता नहीं लग सका. गोया इत्ल और काम्याबीयों के नशे में भुदा के वजुद ही का ँन्कार कर बैठे - और भरने के बादकी छँदगी के अकीदे को ठोकर मार दी. ँन सब के भावुजुद कभी कभी भुदा सायन्स के देवताओं की आप्णें भोल देता है. मगर छन्की आप्णों पर गइलतका पर्दा पडा हो वो उकीकत तक भला कब पहुँच सकता है.?

जलजलों, बिमारीयों, सेलाओं और तुझन में वो भी बेबस और मजबुर दिभाँद देते है. और ँन आइतों पर काबु पाने में नाकाम रहते है. झीरली भुदाके वुजुद को मानने से कतराते है. उन्को ये बात याद रचना यादीये के काँनात के भुदाँ कानुनमें मामुली डेरडेर करना भी उन्के ँप्तिथारसे बाहर है. सय है ! ये बात-

“ भरसों इलसझी की थुंनता और थुंनी रडी
लेकीन भुदाकी बात जडांथी वडां रडी.”

भुदा जलीरी आप्णों से नजर नहीं आता. काँनात के भुबसुरत निजामको देभकर ही उसके वुजुद को तस्वीम किया जाता है. उवा-भुशु-करंट वगेरड को कीसने अपनी आप्णों से देभा है. ओललेदील और ओलले बसीरतको तो डर जगा और डर यीज में यडां तक के डरें डरें में भुदा का जलवा नजर आता है. वोही भुदा है छस्ने काँनात को दुस्नी जमाव भग्शा है. पडाओं, नदीयों, नालों और दरियाओमें और कुल पत्तीयों में उसकी कारीगरी नुमाया है. रंगीन नकशो निगार वाली भुबसुरत नमुनेदार सुरतों की कारीगरी का कमाव उसी जत पर भन्म है. साहीबे दीव डर यीज को कुदरते भुदावँदीका मजडर समजता है.

नंगलमें झींके सैरे सडरा देभुं - या मअदन व कोड व दशतो दरिया देभुं.

डरज तेरी कुदरतके है वाप्णों जल्वे - डेरां लुंके दो आप्णों से क्या क्या देभुं..

(कोड-पडाड)(दशत-नंगल)

ये काँनात टी.वी. है. अस्को भुद काँनात के आलीक ने कायम कीया है. दुनियाकी हरयीळ पढाडों और समंदरो से लेकर दरभत के पत्तों और सहराके जरों तक हर यीळ गोया ईस काँनात की अबर पढुंयाने के निळाम का टी.वी. सेट है. काँनात की हर यीळ हर घडी ये पयगाम दे रही है. के ये काँनात कीस लीये पैदा की गई है. ईन्सान की अम्मेदारीयां क्या है ? और ईन्सान का मुस्तकबीव आभीरकार कीस यीळ से वाबस्ता है.

ईन्सान की बनावट ईस ढंग पर लुई है के वो ईस आलमी अबर रसानी से भरपुर शायदा उका सके. ईन्सान को आंभे ईस्वीये दी गई है के वो ईस भुदाई टी.वी. के मनाअर (द्रश्यो) को देखे. ईन्सान को जे कान दीये गये है वो ईसलीये है के वो ईस नशरीयाती (ब्रोडकास्टिंग) निळामकी आवाजों को सुने. ईन्सानको हीमाग ईसलीये दीया गया है के वो देखने और सुनने का खिसाब करके उन्से सबक लासिल करे. ईन्सानको हाथ-पांव ईसलीये दीये गये है के वो ईन अबरों के मुताबिक पुरी तरह हरकतमें आ जये.

जन्मत उन लोगों के लीये है जे भुदा के ईस आलमी निळाम से रेडनुमाई लासिल करे. और अपनी अंहणी उस्के मुताबिक बनावे. और जलन्म उन लोगों के लीये है जे ईस तरहकी रेडनुमाई लेनेमें नाकाम रहे. जैसे लोग गोया अंधे और बेहरे है वो आभिरतकी अंभेशाकी अंहणीमें भी अंधे और बेहरे बने रहेंगे.-

सीपने का मिजाज :-

हजरत उमर (रही.) के बारेमें बताया जाता है के वो हर अक से कुछ न कुछ सीपते थे. ईस्की मिसाल अक रिवायतमें ईस तरह आयी है के अक बार आपने अक सलाबी (रही.) से पुछा के तकवा क्या है ? उन्होंने कंहा अय-अमीइल मुअमिनीन. क्या आप कल्मी जैसे रास्तेसे गुजरे है अस्के दोनों तरफ़ काटों की जाडीयां हों ? हजरत उमर (रही.) ने इरमाया हा. उन्होंने पुछा के इीर जैसे मौके पर आपने क्या कीया ? हजरत उमर (रही.) ने इरमाया के मैंने अपना दामन समेट लीया और अयता लुवा निकल गया. उन्होंने इरमाया के यही तकवा है.

उजरत उमर (रही) का यही तरीका आम मामलात में ली था-
वो उंट वालोंसे उंट की बात पुछते थे. और बकरी वालोंसे बकरी की
बात- इसी तरह उन्को जे शप्स ली भीवता उससे उसीके मैदानकी बात
पुछते. और उसकी मालुमात के दायरेमें सवाल करते. और उससे नयी
नयी बातें मालुम करते.

मौनुद्दा जमानेमें इसको “स्प्रीट ओफ़ ईन्कवायरी” कहा जाता
है. सायन्स की नजरमें इसकी बेहद अहमियत है. उकीकत ये है के वोही
लोग जयादा बडे आलीम बनते है. जन्के अंदर मालुम करनेकी स्प्रीट
मौनुद्दा हो. इस किस्मकी स्प्रीट हर अेक के लीये बेहद जरूरी है. याहो वो
अेक आम आदमी हो या कोई उंचे दर्जे का.

आम तौर पर अैसा होता है के लोग सुनने से जयादा सुनाने के
शोपीन होते है. मगर इस किस्मका मिजज ईल्म की तरककी में बडी
इकावट है. अैसे लोग कभी जयादा बडी ईल्मी तरककी लासिल नही कर
सकते.

जब आप बोलते है तो आप वही रेलते है. जहां आप है.
मगर जब आप सुनते है तो आप अपने ईल्ममें जयादती करते है. सही
ईल्मी मिजज ये है के आदमी बोलने से जयादा सुने वो जबलभी कीसीसे
भीले तो सवाल करके उससे मालुमात लेने की कोशीष करे.

मालुमात का पजाना हर तरफ़ हर जगह मौनुद्दा है. मगर वो
सिर्फ़ उस शप्सके डिस्सेमें आता है. जे उसको लेने के आदाब जानता
हो.

(अल रिसाला-जुलाई-८८)

ईबत की सोच :

उजरत अब्दुल्ला बीन उमर (र.दी.) ने इरमाया के अेक बुजुर्ग
का गुजर अेक आबिद के पास लुवा जे अैसी जगह भेठे लुअे थे के उन्के
अेक तरफ़ कब्रस्तान था और दुसरी तरफ़ टूटी लुई भराब थीअें और
क्यरा था. गुजरने वाले बुजुर्गने कहा के हुनिया के दो पजाने तुम्हारे
सामने है. अेक ईन्सानोंका पजाना ज्जस्को कब्रस्तान केहते है. दुसरा
माल दौलत का पजाना जे भराब होकर गंदगीकी सुरतमें पडा लुआ है.
अस ! ये दोनों पजाने ईबत के लीये काफ़ी है.

उत्तरत अब्दुल्लाह बीन उमर (र.दी.) अपने दीव की ईस्वाहके लीये शेरसे बाहर कीसी वेराना की तरफ़ निकल जते और वहां पहुंचकर के लते तेरे बसने वाले कहां गये ? झीर जुदही जवाब देते अल्लाहतआलाकी जत के सिवा हर चीज हलाक होनेवाली है.

(ईब्ने कसीर)

जस तरह अल्लाहतआलाकी मज्लुकमें गोरफ़िकर करके अल्लाहतआलाकी मअरिफ़त और हुनिया के क़ानी होनेका ईल्म हासिल करना अइजल ईबाहत और नुरेईमान है. ईसी तरह जुदाकी निशानीयों को देफ़ने के बावुजूद जुद मज्लुक की जहरेरी टीप टाप में उलजकर रेहजना और हुनिया की चीजों की मोहब्बत की वजह से अल्लाहतआलाकी सख़ी मअरिफ़त हासिल न करना सप्त नादानी और नादान बख़्यों जैसी हरकत है.

कुर्आन मज्दमें जैसे ही बेदीन पढे लीजे जहलीवों के बारेमें ईशाह क़र्आया है के “आस्मान और ज़मीन में किन्ती ही निशानीयां है. जन्से ये लोग मुंड मोडकर गुजर जते है. उनकी हकीकत और कारीगरी और उनके पैदा करने वाले की तरफ़ तवज्जुह नही देते”.

وَكَايِنَ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ (ب ۱۳ . ۵۷)

वो दीन बलहत जल्दी आनेवाला है जब के हम में से हर शख्स जुदावंदे आलम के सामने जडा लोगा. उस दीन आभिरत पुरी हकीकतके साथ जुव जुकी होगी. जुबसुरत अल्लाजकी दीवारें जे आज लोगोंने अपने आसपास जडी कर रभी है सब उस रोज़ टूट पड़ेगी. लोग ईस तरह नंगे हो जयेगें के हरपत के पत्ते ली न होंगे जन्से वो अपने आप को छुपा सके.

हर वक्त युस्त और तैयार रहीये :-

अकलमंदी का तकाजा ये है के आदमी हर वक्त आभिरत के लीये तैयार रहे. और आजका काम कल पर न टावे. बल्के ज़ंघीमें जल्ती नेकीयां समेटी जसकती है. कमसे कम वक्त में समेटवे. क्युं के पता नही झीर ये मौका हाथ आये न आये.

उत्तरत अब्दुल्लाह ईब्ने उमर (र.दी.) इरमाया करते थे के जब तुं

शाम करे तो सुब्ब का धन्तिजार मत कर - और जब सुब्ब करे तो शा...
 धन्तिजार न कर. और सेहत के जमाने में बिमारी के वक्त का भी काम
 करवे. (यानी सेहत के वक्त आमाव का जभीरा जमा करवे जे बिमारी
 में काम आये) और जूँदगी में मरने के बाद के लीये जभीरा जमा करवे.
 (बुजारी शरीफ - ६४१६)

जवानी का दौर किंमती है :-

लोग आम तौर पर जवानी के जमाने को भेल कुद और तइरीख
 में भरबाद कर देते हैं. डालां के ये धन्ना किंमती जमाना है के धर्ममें धबादत
 का सवाल बुढापे की धबादत से कहीं जयादा है.

अक उहीसे कुदसी में है के अल्लाहतआला धबादत गुजर मुक्तकी
 नवजवान से पितान कर के इरमाता है के तेरा मुकाम मेरी नजरमें आज
 इरिशतो के बराबर है. (किताबु जजोउद - ११७)

अक और रिवायतमें है के जे नवजवान दुनियाकी लजजता और
 भेलकुद को सिर्फ अल्लाहतआला की रजामंदी डालिब करने के लीये छोड
 देतो अल्लाहतआला उसको ७२ सिद्धीन के बराबर अनर अता इरमाता
 है. (किताबु जजोउद - ११७)

अक रिवायतमें है के धबादत गुजर नवजवान को मयदाने लशरमें
 अर्शे खुदावंदी का साया अता किया जयेगा.

मतलब ये के ये निडायत किंमती जमाना आम तौर पर गइलतमें
 भरबाद कर दीया जाता है. और उसके नुक्शानकी परवा नही की जाती-
 यही डाल भावदारी और इरसद और अेश की जूँदगी का है. जरूरत इस
 बातकी है के डम गाइब न रहे. बडके पुरी इकर के साथ आभिरतकी
 तैयारी करते रहे. (अल्लाड से शरम कीजये - ४२२)

सही इप्न से हटना :-

डर कामके लीये अक सही इप्न होता है. और अक गलत. आदमी
 सही इप्न पर चलकर मंजील पर पहुंचता है और गलत इप्न पर चल कर
 धंधर उधर भटक जाता है- मिसाल के तौर पर तिजरत में काम्याबी का
 राज मेहनत और दीयानतदारी है. अब ताज्जर के लीये अमल का सही
 इप्न ये होगा के वो मेहनत और दीयानतदारी का सुबुत देकर तिजरती

काम्याबी ढासिल करने की कोशीष करे. ये ताछर का सही तिजरती रूभ पर यलना है और जे सही रूभ पर यले वो नरर अक न अक दीन काम्याब लोगा और उसके भिलाइ अगर वो ये करे के बाजार के दूसरे ताछरों की बरबादी पर अपनी तिजरती तरक्री की बुन्याद रभना याडे. या बेंको में डाका डालकर अयानक करोडपती बनने का प्वाब देभे तो ये सब उसके वीये गलत रूभ पर लटकने की सुरते होगी. जैसा ताछर कभी काम्याब नही हो सकता. ये तमाम सुरते कीसी ताछरके वीये रूभसे बे रूभ होने की सुरते है. और जे शप्स रूभसे बे रूभ हो जये उसके वीये षस दूनियामें कोई काम्याबी नही.

यही मामला दीन का भी है. दीन अकसिराते मुस्तकीम है और दूसरे उसमें लटकने के रास्ते भी है. सिराते मुस्तकीम पर यलने को कुर्आन में "ईकामते दीन" कहा गया है. और ईधर उधर के रास्तों में लटकने को त्कुईक कीदीन (दीन से बूदाई) कहा गया है. (सुर अे शुरा - १३)

सिराते मुस्तकीम पर कायम होना ये है के आदमी अक अल्लाह को अपना सबकुछ बनाये उसको सबसे जयादा इिकर आपिरत की हो. वो हर मामले को आपिरत के नुक्तअे नजर से देभे. उसका सबसे बडा मस्अला ये हो के वो जलन्नम के अजाबसे कैसे बय जये. उसकी सबसे बडी तलब ये हो के जुदा उसको जन्नतमें दाखिल कर दे. वो दूनियामें जभमेदाराना ज्दगी गुजरे. लोगों के साथ मामला करने में अेदतियात और तकवा का प्याब रभता हो. आजादी और बेदीनी का मामला न करें. ये दीन का सीधा रास्ता है. जे षस पर यलेगा वो नरर जुदा को पालेगा. वो उसकी रदमत और नुसरत में खिस्सेदार बनाया जयेगा. सीधा रास्ता ही आदमीको मंजीब तक पहुंचाता है.

ईसवीये नररी है के ईस्लाम का निदायत गेदराई से मुतावा कीया जये ताके आदमी सही रास्ते से लटकने से बये और सही तरीकेसे दीनको अपनी ज्दगीमें ईप्तियार करनेवाला बने.

हक की पहेंयान :-

वो शप्स जैदरी नही. जे हीरो को सिई उस वक्त पहेंयाने जब के वो अपने डार में लगा हुआ हो. जैदरी वो है जे हीरो को अपने डार

में ली पहुँचाने और दूसरे के डार में ली. ईसी तरल डक को पहुँचानेने 'वा
 वो ले जे डक को डर डाल में पहुँचान ले. याडे वो उस्के आपने डक के
 अंदर डो या उस्के डक के बाडर.

पुढ परस्त ईन्सान :-

शरही के मौसममें साप लीपटा डुवा पडा डोता है. जडीरमें वो
 कावी रस्सीका टुकडा मालुम डोता है. मगर जब आप उस्को छुते है तो
 अयानक वो झीन निकाव कर भडा डो जाता है. यही डाल डर आदमीका
 है. डर आदमी जडीर में अेक अरछा आदमी है. मगर जब उस्को
 छोडीये तो अयानक वो औसा बन जायेगा जैसे उस्के अंदर बुराईके सिवा
 और कोई चीज मौजूद नही है.

अेक शम्स देपने में बिलकुल हीक मालुम डोगा. आम तअल्लुक
 में वो दीनदार- अज्वाकवाला नजर आयेगा लेकिन अगर ईस्को आपसे
 कोई शिकायत डो जाये. आपसे उस्को कोई ठेस पडॉय जाये तो वो अगले
 डी लम्हे दूसरा ईन्सान बन जायेगा. अब औसा मालुम डोगा गोया
 उस्को दीन और अज्वाक से कोई वास्ता डी नही.

अेक शम्स अरछी बातें करेगा. वो सख्याईका ताबील दीजाई
 देगा - लेकिन अगर आप उस्को औसी बात केड दीज्जे जे उस्को पसंद
 न डो तो वो झौरन बिडर उठेगा.

अेक शम्स डी नजरमें आप ताकतवर है - आपके अंदर वो
 दुन्यवी अलमीयतकी चीज देपता है. औसी डालतमें वो आपका
 जबरदस्त कहरदान डोगा - आप उस्को बडे नजर आयेगे - और अगर
 आप उस्की निगाडमें कमजोर डो. आप से उस्का कोई झायदा न डो तो
 उस्की नजरमें आप बे किमत डोगें. आपका ईज्वास उस्को बेवकुडी
 दीभेगा - आपकी अरछी बात उस्को बे किमत मालुम डोने लगेगी.

अेक शम्सके साथ आपका कोई मामला नही पडा. उससे आपके
 डुरके तअल्लुकात है. औसी डालतमें वो बिलकुल सडी बना रहेगा -
 लेकिन अगर उससे मामला पेश आ जाये आपके कीसी अमल में उस्का
 झायदा टूट जाये तो उस्के बाद वो औसा बन जायेगा जैसे वो जडीरी
 ईन्सानकी शकलमें डैयवान. अब वो आपके सामने अेक अलग किसमके

ईन्सानके इपमें जलीर डोगा. डीर वो अेक अैसा ईन्सान बन जयेगा
जे जूद, और गुस्सा और बदला लेने के सिवा कुछ जनता डी नडी.

डकीकत ये डे के दूनियामें भुदपरस्त ईन्सान जयादा पाये जते डे.
और भुद परस्त बडोत कम.

हकीकत का ईन्कार :-

काईनात का अेक भुद डे. जे उस्का आलीक और मालीक डे.
भुदाने अेक भास स्कीम के साथ डम को पैदा कीया डे. जूस्का ईल्म वो
अपने भास बंदो के जरीये डमतक भेजता डे. जून्को डम रसुल केडते डे.
डजरत मडंमद (स.अ.व.) ईस सिलसिलेके आपरी रसुल डे. और तमाम
दूनियाको आपकी पेरवी करनी डे. जे शप्स आपकी दअवतको पाये और
डीर उस्को कुबुल न करे. वो सिई आपडीका ईन्कार नडी करता बडके
डकीकतमें वो भुदाके तमाम नबीयोंका ईन्कार कर डैता डे. अैसा शप्स
भुद का वझदार बंदा नडी बडके उस्का बागी डे और भुदाकी रडमतोंमें
उस्का कोई डिस्सा नडी. (अवरिसाला - १/१८८४/३५)

जा मकसद ईन्सान का किरदार :-

डजरत सुडैब बीन सनान इमी (र.दी.) अव्वल दौर के
मुसलमानोंमें से डे. उन्की पैदाईश मुसील में डुई. और मदीना शरीफमें
डीजरी-३८ में वझत पाई- वझत के वक्त उन्की उम्र ७० सालकी थी.
उन्से तीनसो डदीसे रिवायत की गई डे. उन्के बारे में रसुले अकरम
(स.अ.व.) ने इरमाया **إِنَّا سَابِقُ الْعَرَبِ وَصُحْبِ سَابِقِ الرُّومِ**

तारीअ ईबने असाकीर की रिवायतसे मालुम डोता डे के सुडैब
इमी (र.दी.) अेक ईये भानदान के आदमी थे. डीर वो मक्कामें तिजरत
करने लगे और तिजरत में काई दौलत कमाई.

.डुजुर (स.अ.व.) ने जब मक्कासे मदीना के बीये डिजरत
इरमाई तो सुडैब इमी (र.दी.) ने भी डिजरतका ईस्वा कीया - उन्की
डिजरतकी भबर लोर्गों को डोगई. सुंनाये कुरैश के कुछ नवजुवान उन्के
पास आये और कडा के तुमने ये सारा माल मक्कामें डसिल किया डे.
उस्को लेकर डम तुमको मदीना नडी जने डेंगे. सुडैब इमी (र.दी.) ने कडा
के अगर में तुमको अपना माल देडूं तो क्या तुम मुजको जने डेंगे. ? उन्डोने

कहा डा. उसके बाद सुलेब इमी (र.दी.) ने अपना सारा माल बन्दे उवाले कर दीया.

अपना माल कुरैशके उवाले कर के सुलेब इमी (र.दी.) मदीना के वीये रवाना हुआ. वो मदीना पहुँचे और आप (स.अ.व.) से भीले और आपको मक्का का पुरा वाकेआ बताया. उसको सुनकर रसुले अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया से अबु यलया तुम्हारी तिजरत काम्याब रही.

अेक दुसरी रिवायत में ये अल्लहाज है “सुलेब की तिजरत काम्याब रही”. “सुलेब की तिजरत काम्याब रही”.

(अलबिदाया वन्नीहायल - ३/१७३)

उजरत सुलेब इमी (र.दी.) के मामले की हुआर (स.अ.व.) ने तस्दीक इरमाई ईससे मालुम होता है के बा मकसद ईन्सानका किरदार क्या होना चाहीये के वो अपने मकसद के अलावा दुसरी चीजको सानवी (सेकन्द) के दर्ज पर रणे. वो अपने मकसदको बयाने के भातीर दर दुसरी चीज को कुर्बान करने के वीये तैयार रहे.

उजरत सुलेब इमी (र.दी.) ने मेलसुस कीया के अगर माल के वीये टकराव कइ तो ये कोई अकलमंती न होगी. ये माल के वीये मकसदको कुर्बान करनेकी बात होगी- युंनाने उन्होंने मकसदको बयाने के भातीर माल को कुर्बान कर दीया- और उसको छोडकर मदीना चले गये.

ईस तरल के जधडे वाले मामलोमें आम ईन्सानकी ये बात होती है के हम अपना लक क्युं छोडे ?, हम ईन्साइ क्युं न मांगे?, मगर बा मकसद ईन्सान की सोच ये होती है के दुन्यवी लक को लेने की कोशीष में वो रब्बानी लक से मेलइम हो जायेगा, दुन्यवी ईन्साइ को हासिल करनेकी लडाईमें वो आभिरत के ईन्साइ की तराजुं में अपने आपको बे कीमत कर लेगा. सोचने का ये इर्क दोनों के अमल में इर्क पैदा कर देता है. अेक दुनिया के भातिर आभिरत को गुमा देता है. और दुसरा आभिरत की भातीर दुन्याको गुमा देता है.

काम का आदमी :-

उजरत उमर (र.दी.) ने अपने अस्हाब से इरमाया के तुम लोग अपनी तमन्ना बयान करो. उन्मे से अेक शप्सने कहा. मेरी तमन्ना है के

ये घर हीरलूम से ढरा डुवा डोता तो में उन्को अल्लाड के रास्तेमें भय करता. डजरत उमर (रही.) ने डरमाया और तमन्ना करो. दुसरे शप्सने कडा के मेरी तमन्ना डे के ईस घर के बराबर सोना डोता तो में उस्को अल्लाडके रास्ते में भय करता. डजरत उमर (रही.) ने डरमाया और तमन्ना करो. अक और शप्सने कडा के मेरी तमन्ना डे के ईस घर के बराबर ज्वाडिरात डोते तो में उन्को अल्लाडके रास्तेमें भय करता. डजरत उमर (रही.) ने डरमाया और तमन्ना करो. वोगों ने कडा ईस्के भाड डमारी तमन्ना नडी.

डजरत उमर (रही.) ने डरमाया मगर में ये तमन्ना करताडुं के ये घर अबुं उडैडल बीन जर्गल (रही.) और मआज बिन जवव (रही.) और डुजैडल बिन यमान (रही.) जैसे आदमीयों से ढरा डुवा रडेता और में उन्को अल्लाडकी राड में ईस्तिमाल करता.

(बुभारी डीतारीडीस्सगीर)

काम का अक आदमी ईस दुनियाका सब से कीमती सरमाया डे. वो आदमी जस्की अक राय डो मगर वो अपनी राय मनवाने पर ईसरार न करे. जे अपने पिलाड तन्कीड ली ईस तरड सुने जस तरड वो अपनी तारीडको सुनता डो. जे सडी उसुवोंसे मुंड न डेरे.

हुस्ने जन :- (अथ्ठा गुमान रभना)

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशरिड डरमाया के अल्लाडतआवा डरमाता डे के "मेरा अंदा मेरे बारेमें जैसा गुमान करता डे में ईसीके करीब डोता डुं. में उस्के पास डोता डुं. जब वो मुजे याड करता डे. (बुभारी शरीड)

डुजुर (स.अ.व.) ने अपनी वक़तसे तीन दीन पडेवे ये ईशरिड डरमाया "तुम में से कीसी ली शप्स की मौत आये तो ईस डाल में आये के वो जरूर अल्लाडतआवा से हुस्ने जन (अथ्ठा गुमान) रभता डो.

(मुस्लिम शरीड)

अल्लाडतआवा से हुस्ने जन का मतवब ये नडी डे के आदमी जूडगी लर मनमानी करता डीरे और जुडके भौड से बे नियाज डोकर सारे काम अंजम डे. और आपिरतमें अल्लाडतआवा से ये उम्मीड लगा डेठे के वो उस्के गुनाडों को माड करके उसे जन्नतुव डीरदौसमें

पहुंचा देगा. ये नादानी और ज़लावत ली नही बल्के अल्लाहतआवा की बारगाह में गुस्ताफी है. सही बात ये है के ईन्सान का हीव अल्लाहतआवा के दरसे बरा हुवा हो और वो ईससे दर कर दर कामको अंजाम दे. और जब छंदगी ખत्म हो रही हो तो ये समझे के वो जबिर और ज़लीम बादशाह के दरबार में नही बल्के रलीम और करीम मौलाकी भिदमतमें लाखर हो रहा है. और उसके बारे में ये लुत्नेजन रभे के वो उसके साथ सप्तीका नही बल्के लुत्कोकरम का और मोलुब्बत का मामला करेगा.

(अलफुरकान - १२/१८८१/३१)

शिकायतों से बचना :-

मेरे मोहतरम् ! ईस ज़लीव दुनिया में लज्जत और राहतके मुस्तलीक नेक और बवे लोग होते तो सबसे ज़यादा नेअमत और राहतमें छंदगी बसर करनेवाले लज्जते अंबिया (अ.व.) होते. मगर उन्हीकी पाक छंदगी देपीये. वो सबसे ज़यादा सप्त तकवीर्कोमें नजर आते है. बस ! तकवीर्को से गबराना नही याहीये. और ज़बान पर शिकायत ली नही वानी याहीये. बल्के शुक्र करना याहीये के अल्लाहतआवा ने हमको वो चीज़ अता इरमाई है जे अंबिया (अ.व.) और ખास अवलिया (र.अ.) को अता इरमाई है. अल्लाहतआवा की कुदरत में ईस मुसीबत से बढकर सप्त मुसीबतें थी मगर उन्से मेल्कुज़ रफ़ा. और छोटी मुसीबतमें मुब्तवा कीया. अगर शुक्र न कर सके तो कम अज़कम सब्र तो ज़रूरी करे. रोने धोने और शिकायतों से बचें. (सुबुके तरीकत - १७८)

समजदार आदमी चीज़ों पर गौर करता है और उसकी लकीकतकी गहराई तक पहुँचता है. वो चीज़ों को अंदर की लकीकत के अतिबार से ज़न लेता है.

आदमी अपनी ज़त के अतिबारसे देखे. आदमी अेक छंदा वजुदकी हेसियतसे ज़मीन पर चलता ड़ीरता है. वो तरल तरलकी ज़ेडनी और ज़स्मानी सवालीयतों का मालीक है.

समजदार आदमी अपने वुजुद को देखकर ये सोचेगा के मेरा ये वुजुद कहां से आ गया?. मैं जुद तो अपने आपको पैदा नही कर सकता था. ड़ीरमें कैसे अेक मुकम्मल ईन्सानकी सुरत में दुनियामें मौजूद हो गया. ?

ये सोच उसको एस लकीकत तक पलुंयायेगी के एस्का पैदा करनेवाला जुदा है. ये जनकारी उसको जुदाके आगे जुंका देगी- वो केल उठेगा जुदा तेरा शुक्र है के तुंने मुझे एन्सान बनाकर पैदा कीया है. डावां के में जुद अपने आपको पैदा नही कर सकता था. (अलरिसाला - १२/१८८१/१७)

ईबत हासिल करना :-

शेभ एमीदुदीन (७३७ - डीनरी) अपने वालिद सुलतान अलाउद्दीन के एन्तिकाव के बाद सल्तनत पर बैठे. और २१ साल तक हुकुमत की.

“जिके किराम” में एन्का वाकेआ लीजा है के शेभ एमीदुदीन के साथ अेक छोटासा वाकेआ पेश आया जस्ने एन्की ज्दगीका रूप बदल दीया और सुलतान के बजये “शेभ” बना दीया.

शेभ एमीदुदीन अपनी हुकुमतके जमानेमें दोपहर को अपने बागमें क्यबुलुल किया करते थे. एस बागमें एन्का अेक मलेल था. उस मलेलकी निगरानी अेक आदीमा के लवाले थी. उसके जम्मे ये काम था के दररोज वक्त पर बिस्तर बिछा दे. ताके शेभ उस पर आराम कर सके. अेक रोज शेभ के आने से पहले आदीमा ने बिस्तर बिछाया वो उसको बलौत अरछा लगा. वो उसपर कुछ देर के लीये बेट गध. अभी वो बिस्तर से उठी नही थी के उसको निंद आगध. शेभ एमीदुदीन जब आराम करने के लीये मलेलमें पलुंये तो देजा के आदीमा बिस्तर पर पडी सो रली है. शाही बिस्तर पर आदीमा को सोया हुवा देखकर एन्हे गुस्सा आ गया. एन्होंने हुकुम दीया के एस गुस्तापी पर आदीमा को सो कोडों की सजा दी जये.

हुकुम की झौरन तामील हुध. और आदीमा को कोडे मारे जाने लगे. मगर शेभ को ये देखकर तअज्जुब हुवा के आदीमा यिल्लाने के बजये दर कोडे पर लंस रली है. एन्होंने सजा रूकवाकर आदीमा को बुलवाया और उसने की वजल पुछी आदीमा ने निडायत संजदगीसे जवाब दीया :

मुझे ज्याल आया के जब एस नरम बिस्तर पर अेकबार बे एज्तिथार निंद की ये सजा है. तो उन लोगोंका क्या अंजम डोगा जे

रोजाना एस नरम बिस्तर पर आराम करते है.

भादीमा के एस जवाब का शेप पर एन्ना असर लुवा के उन्की छुंछगी बिलकुल बदल गय. वो दुनिया और उस्की लजजतों से बे रगबत लोगये. और दुरवेशी की छुंछगी एप्पितयार करवी. सलतनत छोडकर शेप लमीदुदीन लाडोर आये. यहाँ लजरत सैयद अलमद (जे उन्के नाना भी लोते है) की भिदमतमें लाज्जर लोकर उन्के लाथ पर बयअत की और मुज्जलिदों के बाद उन्के पवीक्षा लुअे. शेपने १६७ साल की उमर पाए. आपिर उम्र में वो सिअर के एलवाकेमें तब्वीग का काम करते रहे. एस एलवाकेमें बलोतसे लोग उन्के लाथ पर एमान लाये.

(तज्जीर अे सुईया अे पंजब)

आदमी की इतरत जिंदा लोतो अेक लुम्बा उस्को तडपानेके लीये काक्षी है. और अगर इतरत मुर्दा लो जये तो लजारों तकरीरें भी उस्की लरकतमें लानेमें नाकाम साबित लोती है. (एमानी ताकात - ३२)

समाज्ज ललजला :-

ललजला कुदरतकी अेक निशानी है. दुनियाके अकसर लिस्सोंमें ललजले आते रेलेते है. पलेले ललजले आते थे तो बलोत नुकशान लोता था. मगर अब तरक्की याइता मुल्कों में जपान, केवीकोनीया वगेरल में ललजला आता है तो बलोत कम आदमी मरते है.

एस्की वजल ये है के वहाँ के लोगों ने तज्जुरअे से जना के ललजले में जनका नुकशान मकानों के गीरने से लोता ल. उस्का लल जयादा पक्के और मज्जुत मकान बनाना नली है. क्युं के ललजलेके मुकाबलेमें कोए भी मकान मज्जुत नली. एसी तरल उस्का लल ये भी नली के ललजले के भिलाइ शिकायत और लंगामा पडा डिया जये. क्युं के ललजला कुदरतके इस्लें से आता है. और कुदरत के भिलाइ शौर बकोर और लंगामा से कोए इयादा नली.

एस्का लल लोगों ने ये निकाला के अपने मकान जयादा पक्के और मज्जुत बनाने के बज्जये लके बनाने लगे. वहाँ ललजला अब भी आता है. मगर अब ललजले के लटके के वकत मकान सिई लील कर रेल जते है. वो टूटकर गीरते नली. एस तरल एन्सानों के मरने की नौबत नली

आती. क्रुं के ँन्सान मकानों के गीरने से दबकर मरते है न के जलजले के जटकों से.

यही मामला ँन्सानों का भी है. दर आदमी अपने सीने के अंदर एक पतरनाक जलजला छुपाये हुआ है. ये गुस्सा और बदला लेने का जलजला है. एक आदमी को जब दूसरे आदमी से कोई ठेस पड़ोयती है या कीसी आदमी से कोई जटका लगता है तो उसके बाद उसके अंदर गुस्सेकी आग लडक उठती है. उसके सीने में बदला लेने का जलजला आ जाता है. यही वो वक्त होता है जबके एक आदमी दूसरे आदमीको कत्व कर देता है. एक आदमी दूसरे आदमी के घर और दुकानमें आग लगा देता है. एक आदमी दूसरे आदमी के नुकशान करने के पीछे लग जाता है.

गोया ये एक समाज जलजला है. ये जलजलाभी कुदरतकी एक निशानी है. हम उसको मिटानेकी ताकत नहीं रखते. यहां भी हम यही कर सकते है के हकीमाना तदबीरसे अपने आपको उसके नुकशान से बचावे. और अपनी अकल ईस्तिमाव करके अपने आपको उसकी जदमें न आने दे.

ईसी समाज जलजले के मुकाबलेकी हकीमाना तदबीर ये है के टकराव के मौके पर अवोईउ (टावना) करना. आपको कोई बुरा कले तो असर न लीजये. कीसीकी तरफसे कोई लडकाने वाली बात आपके कानमें पडे तो उसको अनसुनी कर दीजये. मतलबके नापुशगवार बातों को बुलाकर आप अपना सफ़रे उयात जारी रखीये -

जमीनी जलजले कभी बंद नहीं होंगे सिर्फ़ ये मुम्कीन है के हम उनके नुकशानसे अपने आपको बचावे. ईसी तरह ँन्सानी या समाज जलजले भी कभी भत्म होनेवाले नहीं. यहां भी जे यीज मुम्कीन है वो सिर्फ़ ये के हम बरदाशत और सबर की तदबीर को ईस्तिमाव करके अपने आपको उनकी जद में न आने दे. और अपने आपको उनके नुकशान से मेहकुज रखे.

यानी टकराव से मुंड करेना, छोटे नुकशानको बरदाशत कर लेना. लडकाने के भावुबुद न लडकना. दूसरोंसे मुतावला करने के बजये भुद अपने सही कामों पर तवजुड देना. मसाईल को नजर अंदाज करके

भौके और ईम्कान को ईस्तिमाव करना.

उकीमाना तदबीर हर मस्अवे का डल है. अकलमंदी की तदबीर हर नुकशान से बचने का यकीनी नुस्खा है. आप उकीमाना तदबीर को अपना उसुल बना लीजिये और झीर आपको कीसीसे कोई शिकायत नही होगी.

(अवरिसावा - ८/१८८४/८)

उजरत उमर झुझक (रही.) का कौल है के अकलमंद वो नही ले जे ये जने के जैर क्या है ? और बुरा क्या है ? बल्के अकलमंद वो है जे ये जनेके दो बुराईयो में कौनसी बुराई बेउतर (कम) है.

(अल अबकरीआतीव ईस्वामियड-५०५)

ईस कौल से मालुम होता है के हर आदमी के पास सिई दो ईडरिस्ते है. अेक जैर की और दुसरी बुराईयोकी. जैसा आदमी आलिम तो हो सकता है मगर अकलमंद नही हो सकता. अकलमंद होने के लीये आदमीको ये जनना याहीये के दो बुराईयोमें से बेउतर बुराई यानी कम नुकशान वाली कौनसी है, यानी छोटी बुराई (Lesser evil)

आम आदमी मामलात में सिई दो यीजों को जनता है. जैर के पड़ेलुं को और बुराई के पड़ेलुं को. मगर अकलमंद वो है जे बुराईको दो क्रिस्मों में तकसीम कर सके. झीर दोनों में जे बुराई कम नुकशान देनेवाली हो उस्को बरदाशत कर ले ताके जयादा बुरे नतीजे से बच सके.

शिकायत के जापुजुद :-

सईद कपडे पर कोई दाग लग जये तो आदमी झीरन उस्को धोकर साइ करता है. क्युं के वो जनता है के अगर झीं न उस्को साइ न किया तो दाग नही मीटेगा. और कपडा दागदार हो न वेगा.

कुछ जैसाही मामला आदमी के जेहन का है. समाजमें रेलते दुजे बार-बार आदमी के जेहनमें कोई न कोई बात आती रहती है. जैसा के भदवा बेनेका जजबा. उसद का जजबा, शिकायतका जजबा, नइरतका जजबा वगेरड. ईस कीसमके जजबात और जेहसास बार बार हर मर्द - औरत के जेहन में सुजुद शाम आते रहते है. वो आदमी को गलत रास्ते पर चलनेमें मुज्तवा करते रहते है.

जैसा हर तजुरबा नइस को पुश करने का दाग है ईस दाग को दुर

करनेके लीये वोही करना है जे कपड़ों के टाग को दूर करनेके लीये करता है। हर औरत और मर्द को याहीये के जब ठस कीस्मका टाग आदमी के जेहन पर लगे तो झैरन उस्को अपने दीवो हिमागसे निकाल दे। कोथ सझाई वाली बात करके झैरन अपने आपको ठस्का असर लेने से बचावे। जे मर्द और औरत जैसा न करे उस्को जैसा न करने की ल्पारी किंमत अदा करनी पडेगी- वो टाग उस्की उल्जनका अेक छिस्सा बन जयेगा। और दीव हिमागको लंमेशा के लीये टागदार कर देगा।

जदीद मुताला ये बताता है के ठन्सान के दीमागके दो छिस्से है। अेक जींदा जेहन और दुसरा सोया लुवा जेहन। जब कोथ बात आदमीके जेहन में टाभील छोती है तो पहले दीन उस्के जींदा जेहन में रेलती है। उस्के बाद आदमी जब रातको सोता है तो नींद की लावतमें ठन्सानके दीमागका कुहरती निजाम उस बात को जींदा हिमागसे निकाल कर सोये लुअे जेहनमें पलुंया देता है। और जब जैसा लो जये तो झैर आदमी के पुरे बदनका छिस्सा बन जाता है। झैर उस्को जेहनसे निकालना बलोट मुश्कील लो जाता है।

लम देपते है के आम तौर पर मर्द और औरत को अेक दुसरे के बारे में शिकायत छोती रेलती है। मगर वोही मर्द - औरत अपने भेटे-भेटी के लीये लंमेशा सली और नरम सोय में रेलते है। लावां के मा-बाप को अपनी औलाद से शिकायत छोती है। मगर तजुरबा बताता है के शिकायतों के बापुजुद लोग अपनी औलाद के बारे में बराबर रेलते है। जब के यही लोग दुसरोंकी मामुली शिकायतों को लेकर उस्के पिवाङ्क लंमेशा के लीये नझरतमें मुब्तला लो जते है।

ठस इर्क का सबब ये है के लोग ठन दोनों मामले में दो अलग अलग अंदाज ठज्जियार करते है। उन्को जब अपनी औलादकी तरङ्कसे शिकायत छोती है तो उस्की कोथ न कोथ सझाई करके उस्को अत्म कर देते है। अपनी औलाद के पिवाङ्क शिकायत को वो अपने जेहन से झैरन निकाल देते है। जब के दुसरों से कोथ शिकायत पेश आ जये तो वो उस्को अपने जेहन में भीठा लेते है। वो उस्को याद करते रेलते है। वो लोगों से उस्का यर्था करते है। और कीसी न कीसी बलाने से हररोज उस्को अपने

अेडन में ताळा करते रैडते डे.

ईस वीये डर आदमी को दुसरो के मामले में डेसा डोना याडीये ये बात बडी अडम डे. उस्को ऐसा डी डोना याडीये जैसा वो अपने डेटा डेटी के मामले में करता डे. जब भी कीसीके पिवाइ कोई बुरा भ्याव पैदा डो तो डौरन उस्को अेडनसे निकाल डे. कीसी भी डालमें उस्को अपने अेडन का मुस्तकभील डिस्सा न बनने डे.

(अवरिसाला - १-२००२/८)

शिकायत को डौरन अत्म करना :-

शिकायती मिजळ अेक कातिल मिजळ डे. शिकायती मिजळ आदमी के अंहर गलत सोय पैदा करता डे. वो आदमी को सडी सोय से डेडडुम कर डेता डे. ईस डिस्मका मिजळ डेशक तमाम बुराईयो की जड डे. अकसर लडाई अघडों के पीछे शिकायती मिजळ डी काम करता डुवा नवर आता डे.

दुनियाका निजाम कुछ ईस तरड बना डुवा डे के यडं जर अेक को दुसरे से शिकायत पैदा डोती रैडती डे. ऐसे डौके पर करनेका काम ये डे के शिकायत का भ्याव आते डी डौरन उस्को अपने डिमागसे निकाल डीया जये. शिकायत जब पैदा डोती डे तो पडेले अेडनमें डोती डे. अगर उस्को याद रअकर बारबार डोडराया जये तो धीरे धीरे आदमी के अेडनमें डनभुत डोती यवी जती डे; और ऐसी डेठ जती डे के डौर कीसी तरड उस्को निकाला नडी ज सकता.

ऐसी डालत में अकलडंटी ये डे के शिकायत पैदा डोते डी डौरन उस्को अत्म कर डीया जये अगर पडेलेडी वकत में उस्को अत्म न डिया गया तो धीरे धीरे आदमी की सोय डिगड जं गी. वो दुसरोको अपना दुश्डन सडनेगा. और डौका डीलने पर वो लडाई अघडे पर उतर आयेगा. याडे डौर उस्का नतीजा कीन्नाडी उवटा कुं जडीर न डो.

शिकायत को पडेले डी वकतमें अत्म करनेका ईलाज कुआन डजुद में ईस तरड डे. (५६ . २५) وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ

“यानी जे मुसीबत भी तुडपर आती डे वो तुडडारे अपने डार्यों की कडार्ड का नतीज डे” ईस्का डतलड ये डे के जब भी आपको

दुसरेके पिवाइ शिकायत पैदा हो तो झोरन आपको ये करना याहीये के शिकायतका रूप अपनी तरफ करवे. मामलेको भत्म करनेकी कोई बात सोये. ज्जस्में कुसुर भुद आपका निकलता हो. जब आपको ओडसास डोगा के कौताही भुद अपनी है तो आप अपनी कौताही दुर करनेमें लग जायेगे. और अपने दुश्मनके पिवाइ इरियाद और जघडे में वक्त को बरबाद करने से बच जायेगे.

कोहीनुर हीरा :-

उस्की तारीफ में ईफ्तिलाइ है. आम तौर पर ये माना जाता है के ईरान के नादिरशाह ने जब ई.स. १७३८ में दीव्ही को बुंटा. तो वो कोहीनुर हीरे को अपने साथ ले गया. उस्के मरने के बाद वो उस्के झेज सरदार अलमदशाह दुरानी (अइघानीस्तान) को भीवा और उस्के बाद शाह शुजाअ को.

शाह शुजाअ कोहीनुर को लंमेशा अपनी पघडीमें रभता था अके बार महाराज रागुजतसींग ने अपने यहाँ शाह शुजाअ और दुसरी रियासत के वावीयों को दअवत दी जब सब लोग आकर बेठ गये तो महाराज रागुजतसींगने कडा : आज में शाह शुजाअ का दस्तार बदल भाई अनुंगा. शाह शुजाअने कडा अय कोर यश्म, में जानता हुं तुं क्या यादता है.? उस्के बाद उन्हींने अपनी दस्तार से हीरा नीकावा और महाराज रागुजतसींगको दे दीया. ई.स. १८४८ में जब पंजाब को ब्रिटीश ईन्डीआ में भीवा दीया गया तो उस्के बाद रागुजतसींग के लउके दीवीपसींग कोहीनुर को लेकर लंडन गये. वहाँ उन्हीं ने उस्को मवीका भरतानीया विकटोरीया के डवाले कर दीया. उस्के बाद से वो ताजे भरतानीया का डिस्सा है.

केमीकल रीसर्च बताता है के हीरा कोयले से तैयार होता है. करोड़ों सालके झीतरी अमलके बाद सियाल कोयला का अके टूकडा यमकदार हीरा बन जाता है.

हीरा ખાલીસ કાર્બન હોતા હે. ઉસ્કી બનાવટ વોહી હે જે કોયલા કી હે. મગર કોયલા કાલા હોતા હે ઓર હીરા બેહદ ચમકદાર. નીજ હીરા તમામ ચીઝોંમેં સબસે જયાદા સખ્ત હોતા હે. પુરાને ઝમાનેમેં

लीरा सिर्फ़ जीनतकी यीज़ समज् जताथा. मगर मौजूदा ज़माने में लीरा अपनी बेवहद सान्ती की वजह से वो मुफ्तवीक़ सनअती (कारीगरी) के मकसद में इस्तिमाल होता है.

लीरा और कोयला का ये क़र्क़ अलामती तौर पर लकीकी इन्सान और गेरलकी की इन्सान के क़र्क़ को बताता है. दोनों की ख़दगी असल इसी तरह अक़ है, ज़स तरह लीरे और कोयला की असल अक़ है.

इसी तरह लकीकी इन्सान जुदकी दुनिया में लीरा इन्सान होता है और गेर लकीकी इन्सान सिर्फ़ अक़ कोयला इन्सान.

दीनका काम हो या दुनिया का काम. हर अक़ के वीये लीरा इन्सान हरकार होते है. कोयला इन्सान न दीन के काम का है न दुनिया के काम का.

(अलरिसाला - २/१८४८/२८)

बुराई में शिकत का अंजाम :-

लज़रत उमर बीन अ.अज़ीज़ (२.अ.) ने अक़ भरतबा यंद लोगों को इस गुनाह में गिरफ़्तार किया के वो शराब पी रहे थे. उनमें से अक़ शम्स के बारे में साबीत हुवा के वो रोज़ा रभे हुअे है. उसने शराब नही पी लेकीन उनकी मन्वीस में शरीक था. लज़रत उमर बीन अ.अज़ीज़ (२.अ.) ने उसको भी सज़ा दी के वो उनकी मन्वीस में क्युं बेठा हुवा था?

(अदरे मोडीत - ३/३७५)

हज़रते नुह (अल.) का सजर :-

लज़रत नुह (अल.) की ज़त जुद अक़ मोअज्ज़ा थी सादे नवसो सालकी उम्र आपको अता की गई थी. आपका कोई दांत नही गीरा था न आपका कोई बाल सड़द हुवा. आपकी ज़स्मानी ताकत में कोई कमी नही हुई. और पुरी उम्र अपनी कौं की तकवीक़ पलौयानेकी सब्र के साथ सेवते रहे.

(मज़हरी)

ओहसान का बदला :-

अक़ शम्सने बाज़ार में इमाम अबु लनीक़ल (२.अ.) को गालीयां दी लज़रत इमाम आज़म (२.अ.) ने गुस्से पर काबुं इरमाया. और उसको कुछ नही क़ला. और घर आकर काफ़ी हिरलम और हिनार लेकर उस शम्स के घर तशरीक़ ले गये. दरवाजे पर पदुंयकर उसको आवाज़

दी. ये शम्स बाहर आया. तो हिरडम उसके सामने ये केलेते लुअे पेश करमाये के आज तुमने मुंज पर बडा अेलसान कीया. अपनी नेकीयां मुअे दे दी. में एस अेलसान का बढवा देने के लीये ये तोडका पेश कर रहा हुं. एमाम सालबके एस मामलेका उसके दीव पर असर डोनाली था. के उसने एस बुरी अस्वतसे लंमेशा के लीये तौबा करली. एमाम सालबसे माझी मागी. और आपकी सोडबतमें रेलकर एलम डालिव करने लगा. यहाँ तक के आपके शार्गिदो में अेक बडे आलिवकी हैसियत एप्तियार करली.

(म.कृ.२/१८०)

कमीनापन :-

“भोमिन गवती कर सकता है. मगर वो कमीनापन नहीं कर सकता”. गवती तो वो है के जे जजबात में आकर डोणये. झीर जब गुस्सा ढंडा पड जये तो आदमी को अपनी गवतीका अेलसास डो. वो शरमीदा डो के मुअसे अैसा क्युं डोगया.? जेस्के साथ गवती डो गध है उस से मीव कर माझी मागे. और गवती का बढवा अदा करे. अगर ये मुअकीन डो तो उसके लीये द्रुआ करे के या अल्लाड तुं मेरी गवती को माझ करमा. और मेरी तरफसे उसके डक में बेडतर ईस्वा करमा.

कमीनापन अलग थीज है. कमीने आदमीको शरमीदगी नहीं डोती. वो माझी नहीं मागता. बल्के वो जयादा तकलीईं पडोयाकर भुश डोना खाडता है. कमीना आदमी का तअल्लुक जब कीसीसे बिगाडता है तो सिई तअल्लुक छोडनेको काझी नहीं समजता. बल्के उस पर जुठे एलजाम लगाता है. उसके पिलाइ साज्शे करता है. जुठे मुकदममें यवाता है. उसको बरबाद करनेका मन्सुबा बनाता है. वो उसकी डर थीजको गवत साबित करनेमें लगजता है. वो दुरसरोको उससे बदगुमान करता है. उसके बनते लुअे कामों को बिगाडता है. ये सब कमीनापनकी सुरतें है. और ये भुदाका अटल कानुन है के कमीनापन और दीन दौनो अेक साथ कीसी शम्सके अंदर जमा नहीं डो सकता- अैसा आदमी भुदासे दुर और शयतानसे करीब डोता है.

(अलरिसाला - ७/१४८१/४३)

नईरत :-

नईरत का अम तमाम अर्यों से जयादा अतरनाक है. वो एलना

ताकतवर है के कोर सुपर पावर भी इससे मेडकुल नही.

नहरत अक सुपर बम है. जससे अमरिकाभी निपट नही सकत।

Hatred is a Super bomb which even America can't handle.

नफ़ा बपशी :-

हदीस में है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया : के तुममें से जो शपस अपने भाई को इयादा पलुंया सके वो जरूर उसको इयादा पलुंयाये.

(मुस्लिम शरीफ़)

नफ़ा बपश बनने के वीये इसकी जरूरत नही के आदमी बलोट जयादा अस्बाब और वसाईल का मालीक हो. हर आदमी अपनी हैसीयत के दायरे में दुसरों के वीये नफ़ा बपश बन सकत। है. जेसा के कीसी के लक में जैर ज्वाली का अक कल्मा भी उसको नफ़ा पलुंयाता है. इसी तरल अक अरफ़ा मशवरा देना, कीसी का बौज ठहा देना, कीसीके काममें अपनी मदद शामिल कर देना. कीसी लटके लुअे को रास्ता दीखाना. हैसियत के मुताबिक कीसीकी माली मदद करना. रास्तेकी इकावटोंको दूर करना वगेरल सब नफ़ा बपशीमें शामिल है.

अगर कोर शपस कीसी भी क्रिस्मकी मदद पलुंयाने की पोलीशन में न हो तो वो अपने भाई के लक में नेक दुआ करे. ये भी नफ़ा पलुंयानेका अक काम होग।

(हीने ईन्सानियत - ७२)

ईन्शाअल्लाह कहेना :-

जब आदमी कीसी काम का ईरादा ज़लीर करे तो उसके साथ ईन्शाअल्लाह (अगर अल्लाहने याहा) भी जरूर कले.

ईस लकीकत को ध्यानमें रखना याहीये के मेरी यादत सिर्फ़ ईस वक्त पुरी होगी जब उसमें अल्लाह की यादत भी शामिल हो जये.

ईन्सान ईरादा करत। है और उसके मुताबिक कोशीष करत। है मगर नतीजा उस वक्त नीलकता है जब उसके साथ अल्लाह की रज़ामंदी भी शामिल हो जये. इसको अरबीमें ईस तरल कला गया है के “कोशीष मेरी तरफ़से है और उसकी तकमील अल्लाहकी तरफ़से”

ईस ऐअतिबारसे जुदा और बंटे का मामला गे. रा दंडानेदार पलीया (Cog wheel) का मामला है. अक पलीया जुदाका है और

દુસરા પહીયા ઈન્સાનકા. જબ દોનો કે દંદાને (દાંતે) એક દુસરે મેં મીલ જાતે હૈ ઉસ્કે બાદ જીંદગી કી મશીન ચલ પડતી હૈ. ઈન્સાન અગર એસા કરે કે ખુદાકે પહીયેસે અલગ હોકર અપના પહીયા ચલાના ચાહે તો હરકતકે બાવુબુદ વો બે ફાયદા હોગા. ક્યુંકે પુરી મશીન ચલને કે લીયે જરૂરીયા કે ખુદાકે પહીયેકા દંદાનાભી ઈન્સાનકે પહીયેકે સાથ શામિલ હો-

“ઈન્શા અલ્લાહ” કા કલ્મા એક દુઆ હૈ. ઈસ્કા મતલબ યે હૈ કે ઈન્સાન અપને કામકો શુરૂ કરતે હુએ અલ્લાહતઆલા સે દરખાસ્ત કરતા હૈ વો ઈન્સાન કે કાગ (દાંતે) મેં અપના કાગ મીલાદે. તાકે જીંદગી કી મશીન ચલ પડે. ઓર અપને અંજમ તક પહુંચે. “ઈન્શા અલ્લાહ” કહેના ગોયા જીંદગી કે સફર મેં માલીકે કાઈનાત કો અપને સાથ લેના હૈ. ઓર જીસ આદમી કા હાલ યે હો કે ખુદ માલીકે કાઈનાત ઉસ્કે સફર કા સાથી હો જાયે ઉસ્કો મંઝીલ તક પહુંચને સે કૌન રોક સકતા હૈ ?

(દીને ઈન્સાનિયત - ૧૫૫)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(२) अप्लाक

अरखे अप्लाक :-

उजरत अण्डुल्लाह एब्ने अम्र (रही.) से रिवायत हे के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने एर्शाह इरमाया : तुममे सभसे अरखे वो लोग हे जन्के अप्लाक अरखे हे. (बुधारी - मुस्लिम)

उजरत अबु हरैरह (रही.) से रिवायत हे के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया : एमान वालों में जयादा कामील एमानवाले वो लोग हे जे अप्लाकमें जयादा अरखे हे. (अबु दाउद)

याद रहे के एमान के बगैर अप्लाक और कीसी अमल का यहाँ तक के एबाहत का भी कोई अतिबार नही हर अमल और हर नेकी के लीये एमान इह और जिन के हर्जे में हे. एसलीये अगर कोई शप्स अल्लाह और रसुल (स.अ.व.) पर एमान लाये बगैर अप्लाक वाला नजर आये तो वो डकीकी अप्लाक नही हे बल्के अप्लाक की सुरत हे. एसलीये अल्लाह के यहाँ उस्की कोई कीमत नही हे.

(मआरिफुल हदीस - २/१६५)

अगर एन्सान के अप्लाक अरखे हो तो उस्की ज्हांगीभी सकुन और भुश गवारी के साथ गुनरेगी और दुसरों के लीये भी उस्का पुजुद रहमत और चैनका सामान डोगा- और अगर आदमी के अप्लाक बुरे हो तो पुद भी ज्हांगी के लुन्ह और भुशीयों से भेडरूम रहेगा. और जन्से उस्का वास्ता और तअल्लुक डोगा उन्की ज्हांगीया भी बे मजा और कडवी डोगी.

ये तो अरखे अप्लाक और बद अप्लाकी के वो नकद नतीजे हे जन्का एम रोजाना तजुर्बा करते रहेते हे. बेकीन मरने के बाह वाली हंमेशाकी ज्हांगीमें एन दोनोंके नतीजे बडोत जयादा अहम निकलने वाले हे.

आभिरत में अरखे अप्लाक का नतीजा अल्लाहतआला की रजा और जन्नत हे. और बद अप्ला की का अंजाम पुदावदे कलडार का गजब और दौजब की आग हे. (अल्लाडकी पनाह)

अप्लाक से मुराह आपस का सुलुक है. अप्लाक ईस बरतावका नाम है जे रोजाना की छंदगी में अेक आदमी दूसरे आदमी के साथ करता है.

अप्लाक का सादा उसुल ये है के तुम दूसरों के लीये वोलीया लो जे तुम अपने लीयेया लते लो. तुम दूसरों के साथ वैसा ली बरताव करो जैसा बरताव तुम अपने लीये पसंद करते लो.

लदीस में है के लोगों में सभसे अरुछा वो है जेके अप्लाक सभसे अरुछे लो.

हुजुर (स.अ.व.) के अप्लाके हरना :-

लउरत अली (रदी.) इरमाते है के रसुले करीम (स.अ.व.) के जेम्मे अेक यलुदी का कर्ज था. उस्ने आकर अपना कर्ज मागा आप (स.अ.व.) ने इरमाया के ईस वक्त मेरे पास कुछ नली कुछ मोललत दौ. यलुदीने सप्ती के साथ मुतालीबा कीया. और कला के मैं आपको ईस वक्त तक नली छोडुंगा जबतक मेरा कर्ज अदा न कर दौ. लुजुर (स.अ.व.) ने इरमाया. ये तुमको ईप्तेयार है. मैं तुम्हारे पास बेठ जल. युंनारये लुजुर (स.अ.व.) उसी जगा बेठ गये और ललोर, असर, मगरीब, ईशां की नमाजें और अगले दीन इउरकी नमाजली यली अदा इरमाई. सलाबा (र.दी.) ये मंजर देभकर रंजदा और गजबनाक लो रले ये. और आलुिस्ता आलुिस्ता यलुदीको उरा धमका कर येया लते ये के वो रसुले अकरम (स.अ.व.) को छोड दे. लुजुर (स.अ.व.) ने मामलेको ताड लीया. और सलाबा (रदी.) से पुछा ये क्या करते लो? सलाबा (रदी.) ने अर्ज कीया. या रसुलुल्लाड (स.अ.व.) लम ईस्को कैसे बरदाशत करे? अेक यलुदी आपको कैद करे. आप (स.अ.व.) ने इरमाया के मुजे मेरे रबने मना इरमाया है के कीसी अलद करनेवाले पर जुल्म करे. यलुदी ये सभ मानरा देभ और सुन रला था.

सुजल लोते ली यलुदी ने कला. “अशलदु अल्ला ईलाला ईल्लल्लाडुं वअशलदु अन्नक रसुलुल्लाड”. ईस तरल ईस्लाम कुबुल इरमाकर उस्ने कला या रसुलुल्लाड (स.अ.व.) मैं ने आधा माल अल्लाड के रास्ते में दे दीया. और कसम है अल्लाडतआला की के मैंने ईस वक्त जे

कुछ किया उसका मकसद सिर्फ़ ईभ्तेखान करना था. के तौरात में जे आपकी सिफ़ात (जुबीयां) बताई गई है. वो आप मे सही तौर मौजूद है या नहीं?. मैंने तौरात में आपके बारे में ये अल्फ़ाज़ पढ़े है.

मुहंमद बिन अब्दुल्लाह, उन्की पैदाईश मक्का में होगी. और खिजरत तैयबल की तरफ़ और मुल्क उन्का शाम होगी. न वो सप्त मिजाज़ होंगे. न सप्त बात करने वाले, न बाजारोंमें शोर करने वाले और बेइयाई से दूर होंगे.

अब मैं ने इन तमाम सिफ़ात का ईभ्तेखान करके आपको उरमे सही पाया. ईसवीये शहादत देता हूं के अल्लाह के सिवा कोई माअबुद नहीं और आप अल्लाह के रसुल है. और ये मेरा आधा माल है. आपकी ईभ्तेयार है जस तरल याहे अर्थ इरमाये. ये यहुदी बहोत मालदार था. आधा मालभी अेक बडी दौलत थी.

(म.कु. ४/८०)(तइसीरेमजहरी-बयहकी)

तअजीम और अदब :-

हजरत अम्र बिन आस (रही.) इरमाते है के रसुले अकरम (स.अ.व.) से जयादा कोई मुजे हुनिया में भेजबुज न था. और मेरा डाल ये थाके मैं आपकी तरफ़ नजर भर कर देण ली नहीं सकता था और अगर कोई मुजसे आपका हुलिया मुबारक पुछता तो मैं बयान करने पर ईसवीये काहीर नहीं के मैंने कभी आप (स.अ.व.) को नजरभर कर देणा ही नहीं.

तिमीर्ज़ानि हजरत अनस (रही.) से नकल किया है के मजलीसे सहाबा (रही.) में जब आप तशरीफ़ लाते थे तो सब नजर नीची करके बैठते थे सिर्फ़ हजरत अबुबक सिदीक (रही.) और इाउके आजम (रही.) आपकी तरफ़ नजर करते और आप (स.अ.व.) उन्की तरफ़ नजर इरमाकर तबस्सुम इरमाते.

हजरत मुगीरा बिन शुअबा (रही.) की हदीस में है के जब आप (स.अ.व.) घरमें तशरीफ़ इरमा होते थे. तो सहाबा (रही.) बाहरसे आवाज़ देकर आप (स.अ.व.) को बुलाना बेअदबी समजते थे दरवाणे पर हस्तकभी सिर्फ़ नापुन से देते थे. ताके जयादा आवाज़ और शोर नहीं.

आप (स.अ.व.) की वक़्त के बाद ली सहाबा (रही.) और ताबेर्नन का मामुल था के मस्छटे नबवी (स.अ.व.) में कभी बुवंद आवाज से बात करना तो दरकिनार कोर्ष वअज और तकरीर ली बुवंद आवाज से पसंद न करते थे. अकसर हजरतका ये आलम था के जब कीसीने छुजुर (स.अ.व.) का नाम मुबारक लीया तो रोने लगे और हयबतजदा हो गये.

ईसी तअजीम और अहब की बरकत थी के उन हजरत को कमावाते नबुव्वत से भास खिस्सा मीला और अल्वाहतआवा ने उन्को अंबिया (अ.ल.) के बाद सबसे उंचा मुकाम अता इरमाया.

(म.कु.- ४/८८)

सहाबा (रही.) का मामला :-

उरवह बीन मस्उद को मक्का वालोंने जसुस बनाकर मुसलमानों का डाल मालुम करने के लीये मदीना भेजा. उस्ने सहाबा (रही.) को परवाना वार छुजुर (स.अ.व.) पर गीरता और झीदा होता हुवा देभकर वापसी में ये रीपोर्ट दी के मैंने क्यसर और किसरा के दरबार ली देभे छे और नज्जशी बादशाह से ली मीला हुं. मगर जे डाल मैंने अस्डाबे मुहंमद (स.अ.व.) का देभा वो कहीं नही देभा. मेरा ज्याल छे के तुम लोग उन्के मुकाबलेमें हरगीज काम्याब न होंगे. (म.कु. ४/८८)

सहाबा (रही.) की जुंजीयां :-

सहाबा (रही.) के अंदर नसीहत करने का जजबा पुरी तरह मौजूद था और नसीहत सुनने का ली. हजरत उमर फ़ा़क़ (रही.) ने अेक मामलेमें अेक बार इस्वा दीया. हजरत अली (रही.) को ईस इस्वेमें गल्ती नजर आई. उन्होंने ईस पर टोका, हजरत उमर (रही.) अगरये ખલીफ़ा और डाक़िम थे. उन्होंने इ़ौरन उस्को मान लीया. और कडा अगर अली (रही.) न होते तो उमर (रही.) हलाक हो जाता.

(अवरिसावा - १०/१८८२/१४)

ईस्लामी आदाब :-

जब तुम अपने घर में दाजील हो या बाहर निकलो तो दरवाजे को जेर से धक्का न दो. और न ही अपने आप जेर से बंद होने दो. क्युं

કે યે ચીઝે ઈસ્લામ કે મિજાઝ કે ખિલાફ હે. દરવાઝેકો અપને હાથ સે બડી નરમી ઓર આહિસ્તા સે બંદ કરના ચાહીયે. શાયદ તુમને વો હદીસ મુની હોગી જે હઝરત આઈશા (રદી.) સે રિવાયત હે કે આપ (સ.અ.વ.) ને ઈર્શાદ ફરમાયા.

હર ચીઝ કી રૌનક ઉસ્કી નરમી મેં હોતી હે. અગર કીસી ચીઝસે નરમી કો છીન લીયા જયે તો વો ઉસે એબદાર બના દેતી હે.

(મુસ્લિમ થરીફ)

જબ તુમ અપને ઘર મેં દાખીલ હો યા બાહર નીકલો તો ઘરમેં મૌબુદ મર્દ, ઔરતોં કો, છોટોં ઔર બડોં કો સલામ કીયા કરો. જે ઈન અલ્ફાઝ મેં હોના ચાહીયે. “અસ્સલામું અલયકુમ વરહમતુલ્લાહી વબરકાતુલ્લું” ઔર ઈસ્લામી સલામ કો બદલ કર સલામકે દુસરે કલિમાત Good Morning, Welcome યા ઉન્કે અલાવા દુસરે અલ્ફાઝ સલામ કે લીયે મત કહો ક્યું કે ઈસ્લામાં સલામ છોડ કર દુસરે કલિમાત કો અપનાને મેં ઈસ્લામી શેઆર કો બરબાદ કરના લાઝીમ આવેગા.

હઝરત અનસ (રદી.) ફરમાતે હે કે રસુલે અક્રમ (સ.અ.વ.) ને મુઝસે ફરમાયા.

મેરે ખ્યારે ! જબ તુમ અપને ઘરવાલોં કે પાસ જયા કરો તો ઉન્હે સલામ કીયા કરો. યે તુમ્હારે ઔર ઘરવાલોં કે લીયે ખૈર ઔર બરકતકા સબબ બનેગા.

(તીમીઝી)

હઝરત કતાદહ (ર.અ.) (મશહુર તાબેઈ) ને ફરમાયા, જબતુમ અપને ઘર મેં દાખિલ હુવા કરો તો ઘરવાલોં કો સલામ કીયા કરો. ક્યું કે તુમ્હારે સલામ કે વો ઝયાદા હકદાર હૈ જન્કો તુમ સલામ કીયા કરતે હો ક્યું કે યે તુમ્હારે ઘરવાલે હૈ.

હઝરત અબુ હરૈરહ (રદી.) સે રિવાયત હે કે હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા. જબ તુમ મેં સે કોઈ શખ્સ કીસી મજલીસ મેં જયે તો મજલીસ વાલોં કો સલામ કરે. ઔર જબ વહાં સે ઉઠને કા ઈરાદા કરે તો ભી સલામ કરકે મજલીસ સે નીકલા કરે.

જબ તુમ અપને ઘર જાને કા ઈરાદા કરો તો ઘર મેં પહોંચને સે પહેલે ઘરવાલોં કો અપને અંદર આને કા એહસાસ દીલાકર ઘર મેં જયા

करो औसा न हो के तुम्हारे अयानक पहुँच जाने से वो कीसी वजह से गबरा जाये. या उन्हे औसा मेहसुस न हो के तुम उन्की टोह (फोन) में लगे हुआ हो. या उन्की कोतालीयों का पता लगाने के यक्कर में धरमें चुपके से दाभील हो रहे हो.

ईमाम अलमद बिन उम्बल (२.अ.) इरमाते ले के :

जब आदमी घर में जाये तो उसके वीये मुस्तहब है के भंभारे या अपने नुतों को डरकत दे. ताके घरवालों को उसके आनेका पता चल जाये. ईमाम अलमद (२.अ.) के साहबज्जदे अब्दुल्लाह (२.अ.) इरमाते ले के :

हमारे वालीद जब मस्जिद से घर को वोटते तो घर में दाभील होने से पहले अपने पैर को जमीन पर मारते. ताके घरवाले नुतेकी आवाज सुनकर ये समज ले के आप घर में दाभील हो रहे है. जयादातर भंभार कर ली आप घरमें दाभील होते ताके घरवालों को आपकी आमद की ખबर हो जाये.

जब तुमको अपने भाई, दोस्त या कीसी दुसरे के दरवाजे पर दस्तक देने हो तो उस अंदाज से दस्तक दो जिस से दरवाजे पर कीसी दस्तक देनेवाले का पता चल जाये. न के तुम दरवाजे को जलीमों और पुवीसवालों के धक्का देने के मानीन्त. निहायत सज्जी से और जेर से दस्तक न दो. क्युं के औसा करने से मकानवाला ખौश जदा होगा. और ये बेअदबी की डरकत है .

ईमाम बुभारी (२.अ.) नं रिवायत कीया है के उजरते सलाभा (रही.) हुआर (स.अ.व.) के दरवाजे पर अपने नाभुन से दस्तक दीया करते थे ईन उजरत का ये अमल हुआर (स.अ.व.) के साथ बलोट जयादा अदब की वजहसे था.

औसी उल्की दस्तक जैसे घरवालों के वीये है जन्की रहाईश दरवाजे के करीब हो, लेकिन जन्की रहाईश दरवाजे से थोड़ी दूर होतो वहां दस्तक ईस कदर जेरसे दी जाये के घरवाले सुनले. ईर ली सज्जी से दस्तक देने से परहेज करे.

मुनासीब ये है के दो दस्तकों के दरम्यान थोडासा वक्फा रखा जाये.

अगर कोई वुजुं कर रहा है. तो वोल् अपने वुंजुसे झारिग लो जये या अगर नमाज पढ रहा हो तो सुकुन से नमाज पुरी करले और अगर पाना पा रहा है तो लुकमा अच्छी तरह निगल ले.

ऐल्माअे किराम ने दो दस्तकों के दरम्यान धन्तिगर की मुदत यार रकात पढनेके ब कदर बतायी है. क्युं के ये मुम्कीन है के जस वक्त आपने दस्तक देना शुर् कीया हो उसने उसी वक्त नमाज शुर् की हो.

जब तुमने झारवे से तीन बार दस्तक दे दी और तुम्हारे दील में ये प्याल आया के वो डाल्जर लोता तो जर्जर निकल आता. ऐसी सुरत में तुम्को वापस लोट जना याहीये. क्युंके लुजुर (स.अ.व.) ने झरमाया के.

जब तुम में से कोई शप्स तीन बार धज्जत तलब करे और उसे धज्जत न मीले तो उसे वापस लोट जना याहीये.

(बुभारी - मुस्लिम)

धज्जत तलब करते वक्त दरवाजे के सामने पडे नही होना याहीये बल्के दरवाजेके दार्ध या बाध तरफ पडा होना याहीये क्युं के रसुले अकरम (स.अ.व.) का मामुल था के जब आप कीसीके दरवाजे पर तशरीफ ले जते तो अपने येदरे मुबारक से उसके सामना न झरमाते बल्के या तो आप उसके दार्ध तरफ पडे लोते या बाध तरफ. (अबु दावुद शरीफ)

आदावे जुंङगी :-

आदावे मुआशिरत (रिखन सेखन) में यार थींजे जिक की गध है.

१. लोर्गोसे बातचीत और मुलाकातमें तकब्बुरके अंदाजसे मुंङ डेरकर बात करना मना है.
२. जमीन पर धतरा कर खलना मना है.
३. दरम्यानी खाल खलने की खिदायत है.
४. जेर से शोर मचा कर बोल्ना मना है.

लुजुर (स.अ.व.) की मुबारक आदते धस तरह थी. आप (स.अ.व.) लुंमेशा पुशो पुर्रम मालुम लोते थे. आपके अप्लाकमें नरमी और सलुवत पसंद थी. आप शोर न मचाते थे. और न गंटी बात करते. कीसी पर ऐब न लगाते. अभीवी न करते. जे थीळ न लाती उससे गइवत भरतते. तीन थींजे आपने बिलकुल छोड रप्पी थी.

(१) जघडना (२) तकब्बुर करना (३) जे चीज काम की न हो उसमे मशगुल न होना (म.कु. ७/४०)

अप्लाकी बिमारी :-

क्षत्र, नाज और गुजर और पुष्ट पसंदी ये सब ओक ही जेडनी डेक्लियत के मुफ्तवीक नाम है. अरबी में उसको उलज कहा जाता है.

उलज (घमंड) बेशक सबसे बडी बुरी अप्लाकी बिमारी है. वो दीन और अप्लाक और ईन्सानियत हर चीज की कातिल है. वो अल्लाह के सामने सरकशी से जयादा बडा जुर्म ईस दुनिया में और कोई नही.

गरम मिजाज :-

बाज लोग डाक्लिजे कुआिन और कोलेज के प्रिन्सीपल होते है और वो निहायत गरम मिजाज होते है. वो अपनी गरम मिजाजी का सबब अल्लाह के क्लाम को सीने में भेलकुज होना बताते है. लकीकत ये है के अल्लाह के क्लाम से गरम मिजाजी और बट मिजाजी नही आती संकती. उसको तो रहुमत और आक्लियत का सबब बनना चाहीये. सली पोजीशन से आगाह होने की जरूरत है.

अल्लाह तआला ने लजरत आदम (अ.व.) का फमीर मुठीभर मीट्टी से बनाया. ये मीट्टी कुल इअे जमीन से ली गई थी. जगा जगा की मीट्टी का औलाहे आदम पर ये असर हुआ के उसकी मीट्टी जहां की थी. नसबे आदम का रंग इप उसके मुताबिक काला, सफेद, लाल हुआ. मिजाज में गरमी, नरमी और दरम्यानापन उसीका नतीजा है. अरछी बुरी आदत और तबीयत और दरम्यानापन सब ईसी मीट्टीका असर है.

(अबु दावुद - २/५२५)

जामोशी में नजात :-

जब तुम कीसी औसे शप्स को ट्रेपो जसे दुनिया से बेरगबती और बातचीत कम करनेसे नवाजा गया है तो तुम उसके करीब हो जाओ क्युं के वो खिकमतकी बातें करता है. (ईब्ने माज-४०८१)

हुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के “ जे शप्स युप रहा उसने नजात पाई”

(तिमीजी)

ईस्का मतवब ये नडी है के आदमी बोलना छोड दे और बिलकुल आमोश रहे. बल्के उस्का मतवब ये है के आदमी आमोश रह कर सोये. वो पेडले आमोश रहकर मामलेकी समझे. उस्के बाद बोले. ये बेशक अेक बेहतरीन तरीका है.

आदमी को याडीये के वो अपनी तरबियत करके ये आदत डाले के वो बोलने से जयादा आमोश रहे. वो बोले तो उस वक्त बोले जबके वो सोयनेका काम कर चुका हो.

ये तरबियत ईस तरह की जा सकती है के मामुल की बातथीत में कोशीष करके अपने आपकोउस्का आदी बनाये. अगर आदमी रोजाना की बातथीत में ये आदत डाल ले तो आदत की बीना पर वो उस वक्त भी ऐसा ही करेगा.

आम तौर पर लोग ये करते है के जब उनके सामने कोई बात आती है तो झोरन उस्का जे जवाब जेहन में आता है उस्को बोलना शुरु कर देते है. ये तरीका दुरुस्त नही. सही तरीका ये है के पेडले सोयनेका अमल किया जाये उस्के बाद बोलना शुरु किया जाये. जे लोग ऐसा करे वो अपने बोले लुअे अल्हाज पर पछताने से बच जायेगे और अपनी कही लुई बातको लौटाना नही पडेगा. क्युं के कहा लुवा बोल दोबारा उस्की तरफ लोटने वाला नही.

दुनिया में अकसर कितने अल्हाज बोलनेसे पैदा होते है. कुछ अल्हाज नफरत और सप्तीकी लडकाते है. जबके अरछे अल्हाज अमन और ईन्सानियत का माडोल कायम करते है. अगर आदमी सिर्फ ईत्ना करे के बोलने से पेडले सोये और अपने जजबात को काबुं में रभकर बोले तो कितना पैदा होनेसे पेडले ही भत्म हो जायेगा.

आदमी को याडीये के कीसी की बात का झौरन जवाब न दे बल्के सोये के केडने वाले की बात का बेहतर जवाब क्या हो सकता है ? झीर वो पत्थर का जवाब पत्थर से देने के बजाये पत्थर का जवाब कुल से देने में काम्याब हो जायेगा.

अल्हाज की तासीर :-

अरछे और बुरे अप्लाक का जयादा तअल्लुक जमान से होता

है. कडवा बोल बह अफ्लाकी की अलामत है और मीठा बोल पुश अफ्लाकी की अलामत है. जवान से निकले लुवे कुछ अल्काज अक शप्स को आपका दुश्मन बना सकते है और उसी जवान से निकले लुवे कुछ अल्काज का ये असर हो सकता है के उन्को सुनने वाला आपका दोस्त बन जाये.

जवानको सबसे ज्यादा अलमियत हांसिल है. छोटी सी जवान अगर दुरस्त चलती रहे तो बडोत बडा दर्ज हांसिल होनेका जरीया बनती है. और अगर ये बेडया बन जाये तो अल्वाडके पौइ से बेनियाज डोकर बुरी बातें बकने लगती है तो ईन्सान बहबपत और मेडरुम बन जाता है.

उजरत अबु सईद (रही.) लुजुर (स.अ.व.) का ईशाद नकल इरमाते है के जब आदमी सो कर उठता है तो तमाम आज्ञा जवान के सामने आञ्जी करते लुवे केडते है के डमारे वीये अल्वाड से उरती रहे. ईसवीये के डम तेरे साथ है. अगर तुं सीधी रहे तो डम सीधे रहेंगे अगर तुं टेडी लुई तो डम टेरे हो जायेंगे.

(तिर्माजी-२-६६)

अक मौके पर लुजुर (स.अ.व.) ने उजरत अबुजर गिदारी (रही.) को पिताब करते लुवे ईशाद इरमाया

अय ! अबुजर क्या ? में तुम्हें ऐसी दो आदतें न बताऊँ ? जे करनेमें आसान और अमल की तराजू में भारी है. मैंने अर्ज किया जरूर बतायें. तो आप (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया

(१) लंबी जामोशी (२) पुश अफ्लाकी

कसम है उस जातकी ज्जस्के कब्जे में मेरी जान है. मज्लुक ने ईन हो आदतों से बढकर कोई अमल नहीं किया. (मिशकत-२-४१५)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كَلِمِهِم

(३) आदाबे ज्वारेह रि

ईन्सान के डर उजव के कुछ आदाब है जन्का विडाज करना जरूरी है.

निगाह के आदाब :-

जब भी अपने भाई पर नजर डालो तो उसे मोलुबतसे देखो. उसकी बेहतर चीज पर निगाह रभो. और जब वो तुमसे बात चीत कर रहा हो तो अपनी निगाहें उसकी तरफ़ मुतवज्जये रभो.

सुनने के आदाब :-

जब कोई तुमसे बातचीत कर रहा हो तो उसकी बातों में अपनी दीवयस्पी को ज़लीर करो और बातचीत के दौरान अपना ध्यान और निगाह दोनों उसीकी तरफ़ रभो और बात काटने से परहेज करो और अगर मजबुरीसे उन्मे कुछ करना पड़े तो उससे मजज़ीरत तबल करवो.

मजान के आदाब :-

अपने दोस्त से औसी ही बात करो जैसे वो ईस वक़्त सुनना पसंद करे मगर उस बातचीत में कमावे होंशियारी से कोई अख़ी बात या नसीहत कर दो ज्जस्मे उसकी त्वाहल हो और जे बातें उसे नापसंद हो उन्से परहेज करो. उन्से तेज़ आवाज से बात न करो और वली बात करो ज्जस्का वो ईल्म रभते हो और वो आसानी से उसको समज सके.

हाथों के आदाब :-

अपने भाईयों और दोस्तों के वीये हंमेशा नेकी और तअव्वुक के वीये हाथ बढाओ. उन्के वीये अपने हाथ कल्मी तंग न करो उन्की मद्द करनेसे अपने हाथ कल्मी पीछे न डटावो.

पांव के आदाब :-

अपने भाईयों के साथ ईस तरह से चलो जैसे के तुम उन्के ताबे हो. आगे आगे मत चलो. अगर तुम्हे अपने से करीब करे तो सिर्फ़ जरूरत के मुताबिक उन्के करीब ज़ओ. डीर वापस अपनी जग़ा पर आ ज़ओ दोस्ती और भाई यारा पर त्मरोंसा करके अपने और भाईयों के लुकुक की अदायगी में कोताली न करो.

જબ ઉન્કો આતે દેખોતો ઈસ્તિકબાલ કે લીયે ખડે હો જઓ જબ તક વો લોગ ન બેઠ જયે તુમ્હે ભી નહી બેઠના ચાહીયે ઓર વહી બેઠો જહાં વો તુમ્હે બીઠાયે. (હકીમાના અકવાલ - ૯૭)

ઈસ્લામ અપને માનને વાલોંકો ઉસ અલ્લાહસે જો અલીમ ઓર ખબીર હૈ. ઉસસે શરમ કરને કી તલ્કીન કરતા હૈ. જો જહીર ઓર પોશીદા, હાજર ઓર ગાઈબ હર ચીઝ કો અચ્છી તરહ જનનેવાલા હૈ. ઉસસે શરમકા તકાઝા યે હૈ કે જો કામભી ઉસ્કી નજર મેં ખુરા હો ઉસે કીસી હાલમેં હરગીઝ ન કીયા જાયે. ઓર અપને તમામ આઝા કો ઈસ્કા પાબંદ બનાયા જાયે કે ઉન્સે કભીભી ઐસે કામકો ન હોને દીયા જાયે જો અલ્લાહ સે શરમકે ખિલાફ હો. યુનાંચે હુજુર (સ.અ.વ.) ને ઈર્શાદ ફરમાયા,

અલ્લાહતઆલાસે ઈત્ની શરમ કરો જીત્ની ઉસસે શરમ કરને કા હક હૈ. સહાબા (રદી.) ને અર્ઝ કીયા તમામ તારીફે અલ્લાહ કે લીયે હૈ. અય અલ્લાહકે નબી (સ.અ.વ.) હમ અલ્લાહસે શરમ તો કરતે હૈ. તો આપ (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા યે મુરાદ નહી બલકે જો શખ્સ અલ્લાહસે શરમાને કે હક કો અદા કરેગા તો ઉસે ત્રીન કામ કરને હાંગે.

- (૧) અપને સરકી હિફાઝત કરેં ઓર ઉસ ચીઝ કી જીસ્કો સરને જમા કીયા.
- (૨) પેટ કી હિફાઝત કરેં ઓર ઉસ ચીઝકી જો પેટ સે લગી હુઈ હૈ.
- (૩) મોતકો ઓર મોતકે બાદ કે હાલાતકો યાદ કરે. વો દુનિયાકી ઝેબોઝિનત છોડ દે.

બસ ! જો ઐસા કરેગા વો અલ્લાહસે હયા કરને કા હક અદા કરેગા. (મિશકાત - ૧-૧૪૦)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(૪) ગલત સોચ

બે ફાયદા બાતે :-

હજરત મૌલાના અશરફ અલી ધાનવી (ર.અ.) ૧૮૬૩-૧૯૪૩) કો એક શખ્સ ને ખત લીખા ઓર યે દરયાફત ક્રિયા કે ફલાં શરીયત કે મસ્અલે કી હિકમત ક્યા હે ? મૌલાના ધાનવી (ર.અ.) ને જવાબ મેં લીખાકે હિકમત કા સવાલ કરને મેં ક્યા હિકમત હે ? તુમ ખુદાકે હુકમ કી હિકમત હમસે પુછતે હો. હમ તુમહારે સવાલ કી હિકમત તુમસે પુછતે હે.

બહોત સે લોગોં કા યે અજબ મિજાઝ હોતા હે કે વો ગેર જરૂરી સવાલ કરતે રહેતે હે. ઉન્હે ઉસ્કી તૌફીક નહી હોતી કે અપના હિસાબ કરે. અપની જામ્હેદારીયોં પર ધ્યાન દે. અલબત્તા ખારજ મસાઈલ મેં બાલ કી ખાલ નિકાલને ઓર ઉન્કી હિકમતેં માલુમ કરનેકા ઉન્કો શોક હોતા હે. યે ઝેહન યકીનન ગેર ઈસ્લામી હે. જન લોગોં કા ઝેહની ઢાંચા ઈસ કિસમકા બન જાયે વો કભી હક કો પાનેમેં કામ્યાબ નહી હો સકતે.

કમાને ઓર ઘર બનાને કા મામલા હોતો હર આદમી અપને બારે મેં સોચતા હે. હર આદમીકો સબસે જયાદા ફિકર યે હોતી હે કે ઉસ્કી કમાઈ અચ્છી હો. ઉસ્કા મકાન અચ્છા બન જાયે મગર દીન ઓર આખિરતકે બારેમેં હર આદમી ઐસે મસાઈલ પર બહસ કરના પસંદ કરતા હે જીસ્કા તઅલ્લુક અપની જાતસે ન હો.

એક બુઝુર્ગ જીન્હોને એક બડે ઈદારેમેં ૩૦ સાલ તક ફત્વા લીખનેકા કામ કીયા થા ઉન્હોને કહા કે ઈસ પુરી મુદ્દતમેં હમારે પાસ જો ફત્વે સવાલમેં આતે રહે વો જયાદાતર દુસરોંકે બારે મેં થે. અપને બારેમેં બહોત કમ હમસે કીસીને સવાલ કીયે. ફલાં કી જાયદાદમેં મેરા કિત્ના હિસ્સા બનતા હે. ફલાં શખ્સ જો ઐસા વેસા હે ઉસ્કે પીછે નમાઝ જાઈઝ હે યા નાજાઈઝ વગેરહ.

આદમી દુસરોંમેં ગુમ રેહતા હે. હાલાં કે ઉસ્કો અપને આપમેં ગુમ રેહના ચાહીયે. વો દુસરોં કે દીન વ ઈમાન કો નાપતા હે હાલાં કે ઉસ્કો અપના દીન વ ઈમાન નાપના ચાહીયે. દુસરોંકી બુરાઈ કી ખબર

સબકો હે લેકીન અપને ગુસ્સે ઓર બદલા લેનેકા ભુત દિમાગ મેં સવાર હે. ઉસ્કી કીસી કો ખબર નહી. (અલરિસાલા - ૩/૧૯૮૧/૫)

ઉમ્મત કે ઝવાલ કી અલામત :-

હઝરત મઆજબીન અનસ (રદી.) હુઝુર (સ.અ.વ.) કા ઈશાદિ નકલ ફરમાતે હે કે યે ઉમ્મત શરીઅત પર કાયમ રહેગી. જબ તક કે ઉન્મે તીન ચીઝે જહીર ન હો.

- (૧) જબતક ઉન્સે ઈલ્મ (ઔર ઉલ્મા કિરામ) કો ન ઉઠા લીયા જાયે.
- (૨) ઉન્મેં ના જઈઝ ઔલાદ કી કસરત ન હો જાયે.
- (૩) ઔર લઅનત બાઝ લોગ પૈદા ન હો જાયે.

સહાબા (રદી.) ને અર્ઝ કિયા “લઅનતબાઝો” સે ક્યા મુરાદ હે ? ફરમાયા : આખરી ઝમાને મેં એસે લોગ હોગે, જે મુલાકાત કે વક્ત સલામ કે બજાયે લઅનત ઔર ગાલી ગલોચ કા તબાદલા કીયા કરેગે.

(દરે મન્સુર - ૬/૫૫)

મુસલમાન અપને દીન કે બારે મેં બહોત જોશીલે હોતે હે લેકીન અમલી જીંદગી મેં હમારી જોશ વાલી જીંદગી સિફ ઝબાની જમા ખર્ચ ઔર ધુમધામ તક રેહ જાતી હે. જબ અમલ કા વક્ત આતા હે ઔર દુન્યવી ફાયદા દીન સે ટકરાતા હે તો અકસર હમારા મઝહબી જોશ દબ જાતા હે ઔર દુન્યવી નફા ગાલિબ આજાતા હે. ઈસ અફસોસનાક સુરતે હાલ કે લીયે મિસાલે પેશ કરનેકી જરૂરત નહી હે. હર આદમી અપની જીંદગીમેં ઈસ જોશ કે ટકરાવ કા મુશાહિદા કર સકતા હે. ફીર ભી યે ટકરાવ યા નિફાક નીચે લીખે ગયે મૌકોં પર દેખને મેં આતા હે.

અગર કોઈ અજનબી શખ્સ દીન કે ખિલાફ કોઈ હરકત કરતા હે તો હમારે જઝબાત કુછ ઔર કિસ્મકે હોતે હે ઔર વહી શરીયત ખિલાફ કામ અગર અપના કોઈ રિશ્તેદાર યા દોસ્ત કરતા હે તો હમારે જઝબાતકા અંદાઝ કુછ દુસરા હોતા હે.

અયાનક આનેવાલી આફત ઔર મુસીબત હમારે જઝબાતમેં જોશકા સબબ બનતી હે. મગર મુસીબત ટલ જાનેકે બાદ હમારે દીની જઝબાત ઠંડે પડ જાતે હે ઔર ઉન્મે યુસ્તી ઔર કોશિષ કરના બાકી નહી રેહતા ઔર ઉસ્કા હમેં અપની જીંદગીમેં તબુરબા હોતા રેહતા હે.

मिसालके तौर पर कही इसाए होता है या कोई आस्मान्नी आइत नाजीव होती है तो मरुछे आबाए हो जाती है और दीन के नारे बुवंड होने लगते है. मगर जहां अमन काईम हुवा झीर वही गइलत और कोताही बोट आती है.

ईसी तरल अगर हमारे दीनी अलकाम में हुकुमत या कीसी और पार्टी की तरफसे दीनी आमाव में एभलगीरी होने लगे तो हमारे दीनी जज्जबात ईस कहर जेश में आते है के हम अपनी ज्ञनकी परवा कीये बगैर बहला लेने पर तुलते है और अगर हम पुए दीनी आमाव में सुस्ती करे तो हमारा दीनी जज्जबा जेशमें क्या आता?. अइसोस बी नही होता. जइसे नतीजे में हम और हमारे घर के लोग नमाज और ईबाहत से दूर हो तो हमारा दीनी जज्जबा सोया हुआ रेहता है और हम घरमें होनेवाली अल्लाहतआवाकी जुली नाइरमान्नी देभकरबी भाभोश तमाशाई बने रेहते है.

हुजुर (स.अ.व.) से हमारी मोलुब्बत का जज्जबा बडा अज्जब है. कोई दुसरा शप्स आपकी शानमें अहना गुस्ताभी करे तो वो उस्की नजरमें वाज्जुब कत्व करार पाता है. लेकिन जब हम पुएही अपनी दरकतों और आमाव से आपकी शानमें गुस्ताभी और तकलीफ देनेवाले काम करे तो आपसे हमारी मोलुब्बतका जज्जबा सिई ढोंग बनकर रेह जाता है. उस्की मिसाले सर से पांच तक आज हमारे अंदर पायी जाती है.

मोलुब्बते रसुल (स.अ.व.) के दावे के बावुजूए पुरी बे लयाई के साथ दाढी मुंडवाना, नंगे सर रेहना, ખડे ખડे या खलते झीरते ખाना, ખડे હોकर पेशाब करना, सुन्नत के बिवाइ काम करना वगैरह ये सब दरकतें गलत जज्जबे को साबित कर रहे है. ये तो थोडी मिसाले है वरना देखा जाये तो जइंगीके दर मौंड पर हम ईस गलत और मुખालिइ जज्जबातके शिकार है और ये बिमारी कौम के दर तब्केमें पायी जाती है और यही बिमारी आज हमारी कौमी जल्लत और बरबादीका सबब है. जबतक ईस्लामी समाज ईस गलत और मुખालिइ जज्जबेसे मेहुकुअथा काम्याबी उन्के कदम युंमती रही और जबसे ये गलत जज्जबा

हमारे अंदर पैदा हो गया है जबसे बराबर कौम के जवाब के अस्वाभाव पैदा हो रहे हैं और अस्वाभाव से दूरी और उसकी मद्दत से मेहड़मी की शकलें जलद हो रही हैं.

गलत जेहन साजी :-

मुसलमान अपने मस्जिदों का हल कुआन मजहब में नहीं ढूंढते. वो दूसरों की बातें सुनकर अपनी राय बनाते हैं. ईस्लाम उनकी जेहनगी का एक रस्मी हिस्सा है. ईस्लाम उनका कौमी कल्चर है. वो उनका दीन नहीं. मौजूदा मुसलमानोंकी ईजतिमाई सोच, उनकी मिली-जुली कुआन के मुताबिक नहीं.

ईजतिमाई पार्टीओं के बयानात, ह्युमन राईट्स, कमीशनकी रिपोर्टें, तालीम याइता तबके का ईजलारे ब्याव, यही मुसलमानों की जेहन साजी के जरीये हैं. वो डालत को कानून और मन्तीक की नजर से देखते हैं.

बंदा और गुलामका इर्ज है के वो अपने आका और मौलाकी भुशी और रजामंदी में राख हो ईसी की रात दीन में कोशीष करनी चाहीये. दीव में कीसी अतिराज को जगा देना. बंदा और बंदा की शान के बिलाइ है. अस्वाभावतआला शानलुं के डिक्मतवाले ईस्ले पर सद्मा और नाराजगी जलद करना बलोट जयादा बे अदबी और गुस्तापी की बात है. हमारा इर्ज है के हम दीव और जमान से ईस शेअर की तस्दीक करने वाले बने.

राख है हम ईस्मे भुदा - जस्मे के है तेरी रजा.

(सुलुके तरीकत - १४४)

तकब्बुर :-

तकब्बुर का एक दर्ज तो ये है के माल, अवलाह, अकल में भुद को दूसरों से बड़ा और दूसरों को लकीर और जलीव समझे. ईन चीजों में तकब्बुर बलोट बड़ी बेवकुई और नादानी है. ईसवीये के ईन सब चीजों के असल मालीक तो उकतआला शानलुं है. बंदा को तो ये नेअमते सिई आरख तौरपर ईम्तिहान के वीये अता लुई है. जब वो चालें शौरन छीन लेंगे या कुछ दीनों के बाह मौत तो यकीनन ईन चीजों

को छुडा ली देगी. झीर तकब्बुर की गुंजईश कहां ?

कोशीष करे के अल्लाहतआवा के साथ तअल्लुक और नजदीकी में जे ईज्जत और बडाई है उसको दुनिया के बडे बडे बादशाह भी मानते है और ईन इकीरों की जुतीयां उठाने को इफ्र समजते है. विडाऊ ईल्मो अमल पर जे तकब्बुर लोगा वो भी सबसे बडा लोगा. जे बेवकुफी और नादानी की आपरी छे है.

झीर तकब्बुर कभी सिई दीव में छोता है ये ईस्तिकबार के लवाता है. कभी ऊबान से भी जलीर छोता है. उसको इफ्र और शोभी जतानेवाला कडा जता है. ये सब छराम है. युंनये अल्लाहतआवा का ईशाद है (प . १ . ३६)

ईसी तरह दुनिया में तकब्बुर करनेवाला अपनेको मुतकब्बीर नही समजता बल्के जल्नी ये बिमारी अंदरमें छोती है ईत्नाही वो ईस्का ईन्कार करता है और बेइकिर छोता है. क्युंके तकब्बुर की छकीकत ही ये है के आदमी अपने तमाम कामों और आमाव और इकिरो ज्यावात को अरछा समजे और जब अरछा ही समज रहा है तो इकिरकी क्या जरूरत ? . जबतक तकब्बुर की अलामतों पर गौर न करे या कोई हुसरा दोस्त आगाह न करे पता नही चलता.

ईसवीये जरूरी है के जुदको मतकब्बीर अनकर छंढगीबर उस्के ईलाज की तरह ध्यान दे और हुसरों के तकब्बुरी के औब तवाश करने में न रहे और उन्को मुतकब्बीर न समजे. क्युंके ईस सुरत में ये जुद ही तकब्बुरी का शिकार हो जयेगा. क्युंके हुसरों की औब तवाश करना अक मुस्तकीव बिमारी है. ईस अनमोल नसीहत को पुरी तरह याद रणो जे शेख सअदी (२.अ.) को उन्के शेख शिडायुदीन सडरवरदी (२.अ.) ने इरमाईथी.

शेख सअदी (२.अ.) इरमाते है मेरे शेख शिडायुदीन (कहदससर्रुं) ने कश्ती में बेठे लुअे मुअे दो नसीहतें इरमाईथी.

- (१) अपने बारेमें कभी जुदभीनी (तकब्बुर, धमंड) मे मुन्तला न होना और जुदको हुसरों से बेहतर न समजना.
- (२) हुसरों को छकीर और जलीव समजनेवाला न बनना.

ये नसीहत निहायत अलम और कीमती है. लुजुर (स.अ.व.) ने लउरत अबुजर (२.दी.) को नसीहत इरमाईथी के अपने और्षों पर नजर करना तुम्हे दुरसरो पर नजर करनेसे रोकदे.

(निदाअे शाडी - ५-१८८३/१८)

अहले बातिल का मिजाज :-

अहले बातिल इफ्र-घमंड के जज्बात में जते है. वो शोहरत और सरदारी के मुकाम पर बेठकर पुश लोते है. जब वो बोलते है तो उन्का हर बोल तकब्बुरीसे बरा लुवा लोता है. वो यलते है तो उन्का यलना नाज (घमंड) का यलना लोता है. वो सबकुछ अपने आपको समजते है. वो सिर्फ उस वक्त मुतमईन लोते है. जब के वो अपने आपको उंची कुर्सी पर बिकाने में काम्याब लोजये.

लेकीन आदमी को ईस बातका पुरा यकीन लो जये के उसके यारों तरफ़ पुदाकी पोवीस लगी लुई है. जे हर लम्हा उसकी निगरानी कर रली है और उसकी हर छोटी बडी कारवाईका रेकार्ड तैयार करनेमें मशगुल है. तो उसकी तमाम सरकशी अत्म लो जये. ये अहसास पैदा लोतेही आदमी अेक अेदतियात वाला ईन्सान बन जयेगा. वो अपनी छंदगीके हर मामलेमें सली मामला ईफ्तियार करेगा. ईन्सानका बिगाड ईस्का नाम है के वो ईस लकीकत से बेअबर लो. ईन्सानकी ईस्लाह ये है केउस्को ईस संगीन लकीकत का जीदा अेदसास लो जये.

इफ्र और घमंड का नुकशान :-

इफ्र और घमंड में जे आदमी मुज्तवा लोगा. वो अपने बारेमें गलत अंदाजेका शिकार रहेगा. वो अलम मामले में कीसी से मशवरा लेनेकी जरूरत नही समजेगा. वो गेर जरूरी तौर पर लोगों से टकरायेगा और अपनी नादानी की लरकतोंसे लोगोंको ज्वामज्वाल अपना दुरमन बनाता रहेगा. उन लोगों के अंदर अेसी लरकते लो उन्के लीये पुदाकी ईस दुनियामें ललाकत के सिवा और कोई अंजम नही.

गलत डेहमी :-

छंदगीमें गलत डेहमी पैदा लोना अेक आम बात है. कीसी ली शज्स को कीसी के बिलाइ गलत डेहमी पैदा लो सकती है. ईसलीये गलत

इंलमी पैदा ङोना कोरु गुनाल नली. गुनाल ये ङे के गलत इंलमी पैदा ङोनेके बाद वो दुरुस्त रवैया ँप्तिथार न करे.

अगर कीसीको कीसीसे गलत इंलमी पैदा ङो ङये तो सिई गलत इंलमीकी बुनियाद पर उसे मान लेना नली यालीये बल्के उसको यालीये के वो ढुले ङेढनके साथ मामलेकी तलकीक करे. तलकीक के बाद अगर वो बात गलत साबित ङो तो उस पर ईर्ज ङे के वो मुकम्मल तौर पर अपने दीलसे गलत इंलमी को निकाल दे.

गलत इंलमी की तलकीक से पहले उसका यर्था करना सप्त गुनाल ङै. अेक आदमीके बारेमें तलकीक के बगैर लली बाततो केल सकते ङै मगर तलकीक के बगैर बुरी बात केढना ङराम ङै. ङैसी ङरकतों पर अल्लाढतआला के यढां सप्त पकड का अंदेशा ङै.

ढुदाका पसंदीदा मुआशरा वो ङे ङुस्में लोगोंके आपसके तअल्लुक ङस्नेढन (अरुढे गुमान) की बुनियाद पर कायम ङो. कीसीके बारेमें कोरु बुरी बात मालुम ङो तो उसको तलकीक के बगैर ङी रद कर दीया ङये. ँस कीसमकी बातें सीधे तौरपर आढिरतसे तअल्लुक रढती ङे.

ढदीसमें आया ङे के ङे आदमी लोगों के ङैबोंकी पर्दापोशी (छुपाया) करे ढुदा आढिरत में उसकी पर्दापोशी करेगा.

दुसरोके साथ बेढतर सुलुक करना अेक किसमकी अमली दुआ ङे. ङैसे आदमीका ये अमल गोया ये बतताता ङे के ढुदावंदतआला मैंने तेरे बंदो के साथ बेढतर मामला कीया तुं ली मेरे साथ बेढतर मामला इरमा. दुनियामें ली और आढिरतमें ली .

किस्सा गोर्द :-

पुराने ङमाने में प्रिन्टींग प्रेस मौढुद नली थे. ँस बीना पर नाविल और अइसाने आम तौर नली पाये ङते थे. टी.वी सिनेमा ङैसी तइरीढी यीर्ज ली मौढुद नलीथी युंनाये पुराने ङमाने में ङर ङगा कुछ लोग ङैसे लुवा करते थे ङुको किस्सा गो (Story Teller) कढा ङता था. ये अइराद लोगों के लीये तइरीढ का सामान इरालम करते थे. प्रेस के दौर से पहले ँस किस्म के अइराद ङर समाढ में ङर मुकाम पर

लुवा करते थे. जे बर्यो और बडो को जमा कर के अजबो गरीब किस्से सुनाया करते थे. ये इर्जी (बनावटी) किस्से छिन्ने दीव यस्प छोते थे के आदमी घंटो सुनने के बावुबुद छिठता थकता नही था.

कुतुलात के बाद जब छस्वाम शाम, छरान और मिसर, छराक वगेर छ जैसे मुक्को में दाभील लुवा तो वहां छस किसम के बछोत से किस्सागो मौबुद थे छन लोगो के असर से मुसलमानो में भी किस्सागो की टोली पैदा हो गछ. छन लोगोने जयादा ये काम कीया के किस्सागो छ को छस्वामाछज करलीया.

यानी अजबो गरीब कीसमकी कलानीयो को रसुलुव्वाड (स.अ.व.) और सलाबा (रही.) और बुजुगाने छीन के डवावे से बयान करने लगे. ये किस्सा गोछ चुंके अरबी जबान में छोती थी छसलीये छिन्का मजमुआ किताबी शकल में मुस्तब हो कर डेला तो लोग छिस्को सयमुय छदीस की तरड मुकदस समजने लगे. ये इर्जी (बनावटी) कीसम की मुकदस कलानीयां मुस्लिम दुनिया में डेवल गछ. और डीर वो तरजुमा होकर छिंदुस्तान जैसे मुक्को में पछुंय गछ.

छस किस्मकी पुर असरार और अजबो गरीब कलानियां सरासर बे असल डे. वो मुसलमानो के जेहन बिगाडती डे. वो मुसलमानो से सली छीनी स्पीट अत्म कर देने वाली डे. छन अनोभी कलानियो में दुनिया की भी तबाली डे. और आछिरत की भी तबाली.

दुनिया की तबाली छसलीये के ऐसी कलानियो से आदमी के अंदर गेर छकीकत पसंदी का मिजज पैदा छोता डे. और आछिरत में तबाली छसलीये के आदमी छस जुठे छ्रम में मुत्तवा हो जता डे के छकीकी अमल के बगैर सस्ते अमल करके वो जन्तत छसिल कर सकता डे.

तिलीस्माती कहानीयां :-

बाज प्रोग्रामो में अजबो गरीब कलानीयां सुनाछ जती डे. जैसे के छे औरते अक बुजुर्ग के यहां आयी छोनो का मस्अवा ये था के उन्के यहां बर्या पैदा नही लुवा था. बुजुर्ग ने छोनो को अक अक पुजुर दी और कला के उस्को निगल कर आ लेना. उस्के बाद अक औरत

के यहाँ बर्या पैदा हुआ और दूसरे के यहाँ बर्या पैदा नहीं हुआ।

हीर कुछ अरसे के बाद वो औरतें दोबारा उस बुजुर्ग के पास आयीं। बुजुर्ग ने देखा के अके औरतकी गोद में बर्या है और दूसरी औरत की गोद में बर्या नहीं। पुछने पर मालुम हुआ के अके औरत ने ખજુર को ખा लीया था यूनाना ये उसके यहाँ बर्या पैदा हुआ। दूसरी औरत ने ખજुર को ताक में रખ दीया और उसने नहीं ખाया बुजुर्ग ने उस औरत से कडाके तुमने इस ખजुर को ખजुर समजकर ताक में रખ दीया असल में वो बर्या था। अब दोबारा जकर तुम उसे देखो। उसके बाद औरत अपने घर वापस आयी और ખजुर को तोड कर देखा तो उसके अंदर लकीकत में अके बर्या मौजूद था।

बेशक ये अके लुडी कलानी है मगर इस कीस्म की बे असल और बे बुनियाद कलानीयों पर बुजुर्गी और बरकतका कारोबार कायम है। जे हिंदु और मुसलमान दोनों के यहाँ बराबरी में जरी है। दर मुकद्दस बुजुर्ग और दर मुकद्दस जमाअत के आसपास बे बुनियाद किस्म की कलानीयों का अके तिलीस्माती जल भीछा दीया गया है। इन अइसानवी (मन घडत) दास्तानों को ईत्ना जयादा दोहराया जाता है के लोग उस पर यकीन कर लेते हैं।

तजुर्बे से ये बात मालुम हुई है के इस दुनिया में सबसे जयादा जस यीज की कमी है वो “ईल्मी तर्ज ईकर” है। ये जहालत मजकुरा किस्म के लोगों के लीये निहायत जरूजेज जमीन की हेसियत रખती है। ईस्लाम इस ज्वाली मजलब को अत्म करने आया था मगर मुसलमानों ने अपनी ज्वालीशात के जरीये अपनी मेजबुज शप्सीयतों और जमाअतों के आसपास वलम की वो पुरी दुनिया आबाद करली जे न सिर्फ गेर लकीकी है बल्के वो ईस्लाम की असल स्पीट को लुब्ज करनेके बराबर है।

बरकतका अडीदा :-

मशहुर जलीयानवाला बाग अमृतसरमें है, जहाँ अंग्रेज डौऊने (ई.स. १८१८) में अके सियासी जल्से पर गोली चला दी थी जस्में सैकड़ो आदमी मर गये थे।

जलीयानवाला बाग (ई.स. १८१८) जल के यहाँ जनरल डायर ने गोली चलाई थी उस वक्त वो पार्क ही सुरतमें था. ईस क्षयरंग में उ७८ लोग मरे थे और १२०० आदमी ज़म्मी हुए थे.

गोली चलाने का सबल अक जिलाई कानून जल्सा था जे मना करनेके बाबुहुए किया गया था.

अमृतसरका गोल्डन टेम्पल अक की.मी. के रकबेमें वाकेअ है. वो २४ घंटे खुला रहता है. यहाँ हर रोज़ तकरीबन दैठ लाख आदमीयों को तीनों वक्त लंगर में जाना भीलाया जाता है. आप रातहीन जूस वक्तभी वहाँ जाये वो ईन्सानोंसे आबाद भीलेगा.

वहाँ कोई शम्स टोकनेवाला या नजराना मांगनेवाला दीभाई नही देता. उसके गेट पर इकीरों की कतारें भी नही भीवती. वहाँ सक्षर और ईन्तजाम और लंगर से लेकर जअरीन के जुतों की निगाह बानी तक हर कीसमकी सरगर्मायां निहायत नजम और सलीके के साथ जरी है और ये सबकुछ वोलीन्टीयर कीसमके लोग अंजम देते है और न यहाँ कोई तन्भवाल पानेवाला होता है.

गुरद्वारा के दरम्यानी लिस्सेमें अक मध्यसुस जगा है जहाँ वो मुकदस किताब रभी हुई है जस्को गुर ग्रंथ साखिब कडा जाता है. ये अक मोटी थोकुर साईजमें लाथसे लीपी हुई किताब है जे शीष अकीदेंके मुताबिक सिई अक किताब नही बल्के वो जीदा गुरकी हैसियत रभती है. पुरी किताब अक भास कपडेसे ढकी हुई होती है. उसके हररोज सोनेकी अक पालकीमें रभकर अक जीदा आदमी की तरह अकालतप्त ले जाया जाता है. उसके रभने की जगह को अलतिमाम के साथ धोया जाता है. और साइ कीया जाता है. और हीर गुरग्रंथ साखिब को दोबारा सोनेकी पालकी में रभ कर वापस लाते है. ईस पुरे अमलके दौरान वहाँ यकीन रभने वालों की जबरदस्त भीड रहती है. गुरग्रंथ साखिब के उपर मोरछल के जरीया मुसलसल पंथा किया जाता है. नैसे वो सयमुय कोई जीदा शम्सीयत हो.

ईस पुरे मामले की तवज्जुह अक मुश्कील सवाल है. तजुरबे की रोशनीमें अक बात ये कही जा सकती है के ईस दुनियामें पुरअसरार (बेदी)

अकीदा अवाम के वीये लंमेशा जयादा ताकतवर साबित हुवा है. याहे वो किन्नाही जयादा अकलके भिवाक क्युं न हो. उस्के मुकाबलेमें अकल और मन्तीकी बात सबसे जयादा बेअसर साबित हुई है. याहे वो किन्तीही जयादा साबित शुदा (प्रमाणिगत) क्युं न हो ?

ईस्का सबभ आम तौर पर ये है के पुरअसरार (false hope business) राज की रीज में लंमेशां बरकत का अकीदा शामिल होजाता है. उस्मे हर शप्स को अपनी डालत और बरूरतके मुताबिक बरकत मीलने लगती है. अगरये पुरा मामला इर्जी उम्मीदों का कारोबार के सिवा और कुछ नहीं होता और उस्के मुकाबले में जे रीज अकली और मन्तीकी हो उस्मे लोगों को बरकत दीपाई नहीं देती.

हर रीज में सबक :-

ज्वाजा उसन निजामी (र.अ.) (१८७८-१८५५) का एक मज्मुन है. "मखर की कलानी"

ज्वाजा साडबने मखर से शिकायत की के तुम ईत्ना परेशान क्युं करते हो ? हम को सोने क्युं नहीं देते ? मखरने ज्वाब दीया. सोने का और लंमेशा सोने का मौका अभी नहीं आया है. जब आयेगा तो बेइकर सोना. अभी तो लोशियार रेडने और कुछ काम करने का वक्त है.

अगर नसीडत लेनेका जेहन हो तो मखरकी बिन बिनाडटमें भी आदमीको छंदगीका पयगाम मील जाता है और अगर नसीडत लेनेका जेहन न होतो बम धमाके और टैंको की गडगडाडट भी गइलतको तोडने के वीये काड़ी नहीं है. जैसे लोगोंको क्यामतका तुफान ही बेदार कर सकता है. मगर अइसोस क्यामतके तुफानसे बेदार होनेका कोई शयदा नहीं. क्युं के वो बहवा पाने का वक्त होगा न के अमल करने का.

सबसे बड़ी रीज सबक लेने का मिजज है. जस शप्सके अंदर ये मिजज पैदा हो जये उस्के वीये जुदाकी तमाम दृनिया एक जींदा किताब बन जयेगी और जे ईस मिजज से मेडरुम हो वो एक किस्म का ज्ञानवर है. जे सबकुछ देपने और सुनने के बाद भी नहीं ज्ञानता के क्या देपा और क्या सुना ?

जस्ने अपने जेहन की पिडकीयां बंद कर ली हो उस्के वीये जुदाकी

किताब और रसुल (स.अ.व.) का क्लाम ली लिदायत पाने के लीये ना काही है.
(अलरिसाला - १/१८८१/२७)

ईन्सान किन्ना सस्ता, किन्ना किमती :-

जरा ईन्सान की किंमत लगाईये ! वो अपने पुनुद की क्या किंमत रખता है ? काईनात के ईन्ने बडे कारखाने में ईस लकीकत को सोयीये ! शायद आपको शरम आने लगे.

अगर वो अपनी छंढगी की लकीकत बस यही समजता हो के वो अपनी मरज्ज के बगैर दुनिया में आ गया है. लिहाजा मजबुरन दुनियाका वक्त पुरा करना है. तो यकीनन वो अपने बारे में सप्त मायुसी का शिकार रहेगा.

और अगर ईन्सान ये ज्ञानता हो के उसके पैदा करनेवाले पुदाने उसको कौनसे अज्जम मकसद के लीये पैदा कीया है ? उसकी मंजील क्या है ? उसका मुस्तकबील (मरने के बादकी छंढगी) किन्ती रोशन है तो वो अपने आपको काईनात की सबसे किंमती चीज समजवेगा.

दुनियामें कोई ईन्सान अगर अपनी सही किंमत ज्ञानता हो तो वो ईमान रખनेवाला मुस्लिम ईन्सान है. बाकी सारे ईन्सान अपनी लकीकत से बेजबूर है. वो अपने आपको काईनात की दुसरी मज्जुक की तरल या जयादा से जयादा लयवान का दर्ज देते है.

मगर ईन्सान की क्तिरत (कुदरती बनावट) उसको बेयेन करती रेहती है वो पुद अपने आपको जे मुकाम और मरतबा देता है उसकी तबीयत उस पर राजी नही लोती. सही मकसद न ज्ञानने की वजल से वो लजारों छोटे छोटे मकसद बनाता है और उन्की सराबों (धोका) के पीछे भागना शुरु कर देता है.

मौनुदा जमाने के ईन्सान को देपीये. माल के पीछे अंधा, शोहरत के जातिर बेयेन और न ज्ञाने कीन कीन बेकार चीजों के पीछे अपने आपको ललाक कर रहा है.

अक मशहुर पिवाडी की बिमारी की जबर सुनकर अक तावीबा (विद्यार्थीनी) ने पुदकुशी करली. ये लउकी कोई जखिल नही थी, न आहीवासी बल्के अक मोर्डन और तलजीब और रोशन प्याल के दम्बेदार

घर की आबड़ू थी और भुद कोम्प्युटर सायन्सकी तावीबा थी.

(डिन्हुस्तान टार्डम्स - लभनी - २२/सप्टे/९९)

ये कोई मामुली किस्सा नही के लम सिई पढकर आगे गुजर जये. सोये ! ईस लडकी को औसा करनेकी क्या वजह थी ? वो अपनी छंदगीसे मायुस नही थी और न अपनी परेशानीयों से डार मानकर अपना छुटकारा चाहती थी बल्के बात ये है के वो अपनी छंदगीका कोई मकसद नही जानती थी. वो देखती थी के जनवरोंकी तरल दुनियामें ईन्सानबनी आता है. अपनी जरूरीयात और ज्वालीशात पुरी करता है और मरजता है लिहाजा अगर वो कीसी जेवकुद करनेवाले के भातीर जन दे दे तो उरने कुछ नही गुमाया और कोई गलत काम नही कीया. उरने बस ! ईन्सान डोनेके हैसियत से अपनी ईत्नी कीमत समज.

ये बिचारा ईन्सान जब अपनी लकीकत नही जानता और अपने पैदा डोनेके मकसद को नही जानता है और तमाशा दीजानेवालोंकी बिमारीयोंकी जबर सुनकर जन दे देता है. अइसोस ईन्सानकी जहालत पर !

(अलकुदकान - ११/१९९९-४७)

अं देशा (जौह - किकर) :-

अमरिका के अेक शप्सने अंदेशे के बारे में मालुमात जमा की. बडोत से लोगों से मीलकर उरने पुछा के आपको किस किस्म के अंदेशे पेश आये और उरका अंजम क्या रडा?. तलकीके बाद उरने पाया के बडोत से अंदेशे औसे थे जे सिई अंदेशे साबित लुजे. वो कभी वाडेआ नही बने. डालांके उन लोगों ने अपने ईन ज्वाली अंदेशो के गम में अपनी सेडत बरबाद करली और हुसरे बडोत से नुक्शान कर लीये.

“अंदेशा” हर आदमी का सभसे बडा मरअवा है. हर आदमी अपने डालातके अेअतिबार से तरल तरलके अंदेशो में मुब्तवा रेडता है. जे उरके सुकुन को गारत करते रडेते है. अगर आदमी के अंहर कनाअत का मिजज आ जये तो उरको भुदभभुद ईस कीस्म के ज्वाली अंदेशो से नजत मील जयेगी.

जब आदमी का डाल ये डो के उरको जे मील जये उसी पर वो राज रडे तो अंदेशों की बुन्याद पर परेशान डोने की क्या जरूरत ?

कनाअत का डर शम्स को ये पयगाम ले के, दुन्यवी नुकशान का गम न करो. अगर वो डो युका तो वो अेक डोने वाली बात थी जे डुई और अगर वो सिई अेक अंदेशा है तो बडोत से अंदेशे अैसे है के आदमी उन्के वीये अपने को परेशान करता है. डालांके वो कभी पेश नडी आते.

(अलरिसाला - ७/१८८१/४२)

डिकर:-

दील को सभसे जयादा कमजोर करने वाली बला डिकर है. अलग अलग कीस्म की डिकरें ँन्सान अपने उपर सवार कर लेता है. बाज आदमी गुजरे डुवे जमाने के वाडेआत और नुकशान को बार बार याद करके डिकरमंद रखते है. बाज आँन्दा आने वाली मुसीबतों का ज्वाल करके गमगीन और डौक जदा रखते है.

अैसे डिकरमंद डौक जदा ँन्सानों को ये सोचना चालीये के पीछे जे डो युका वो डो युका, डिकर करने से अब क्या डायदा ? गुजरा जमाना तो अब वापस नली आ सकता.

और आने वाले जमाने का पता नली. के उसमे क्या तब्दीलीयां डो जअे?. जउन मुसीबतों के ज्वाल से डम डरते है वो पेश आये या न ली आये.

बाज लोग अपने बदन के बारे में डिकरमंद है के डमारा बदन डुब्ला पत्ला क्युं है ? पलेववान जैसा क्युं नडी बन जाता ? वगैरड.

बाज अपनी शानबान जताने के वीये दुःखी रखते है. और बाज लोग दीन और मजडब के पेचीदा सवालोकें बारे में परेशान रखते है. ये तमाम डिकरें बे बुन्याद और राडत और सुकुन वाली ज्दगी की दुश्मन है.

कस्बी गम से नज्मत :-

अेक बात वाअों की बताता डुं वो ये है के गम दो तरड के डोते है अेक तब्ई गम और दुसरा कस्बी गम. दोनों में बडोत डई है. तब्ई गम की मुदत बडोत कम डोती है. वो डुद ब डुद बडोत जल्दी जत्म डो जाता है. डाला ! कसबी गम जे डुदबडुद सोच सोचकर पैदा कीया जाता है. और गम की बातें करके बढाया जाता है. वो अलबत्ता जयादा सप्त है. मगर

उस्को अत्म करना अपने इप्तिथार में है. सोयना मोकुङ्क करो. गम का यर्था न करो. तो कस्नी गम पास भी न आयेगा.

(इआईले सभर - व-शुक २४३)

जे लोग अल्लाह तआला की नाइरमानी में सुकुन तवाश करते है वो इन्टरनेशनल बेवकुङ्क है. आप डजरत भुद सोये के अेक शप्स समंदर की तेह में आग तवाश करे तो लोग उसे क्या कहेंगे ?. ये शप्स बडा डी बेवकुङ्क है.

ईसी तरह जे लोग अल्लाह की नाइरमानी में सुकुन तवाश करते है वो भी बडे बेवकुङ्क है. जैसे समंदर की तेह में आग का मीलना मुम्कीन नहीं है ईसी तरह भुदाकी कसम ! अल्लाह की नाइरमानी में दाईमी सुकुन का मीलना नामुम्कीन है.

जब इन्सान अल्लाह तआला की नाइरमानी करता है तो नाइरमानी की वजह से उस पर अल्लाह तआला की लअनत बरसती है. इस लअनत की वजह से वो रडमते ईवाडी से दूर हो जाता है और उस्का दीव बेचैन हो जाता है. अल्लाह तआला का ईशाद है

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا (ب-१७-१२३)

“जे शप्स मेरी याद से अेअराज करता है (मेरा नाइरमान बन जाता है, मुंजे लुल जाता है) तो कीस्मकी मईशत तंग होगी और कब्र तंग कर दी जयेगी.”

अयादा उम्मीदें अयादा मायूसी :-

जब भी आपको कीसी शप्स से शिकायत पैदा हो तो समज लीजिये के आपने उस शप्स से ईस्से अयादाकी उम्मीद करली थी जे डकीकत में आपको उससे नली करनी चाहीये थी. अगर आप लकडी से ये उम्मीद कायम करले के वो आपके लीये लोडे का काम देगी तो उस्के बाद मायूसी के सिवा और कोई यीज आपके डिस्से में नली आयेगी.

अेक शप्स को आप से सिई जबानी डमदई थी. आप ने उस से अमली डमदई की उम्मीद कायम करली. या अेक शप्स ज्स्को आपसे सिई ईत्ना तअल्लुक था के वो मुवाकत के वक्त आपको याय पीला दे. उससे आपने ये उम्मीद करली के वो आपके लीये पैसा अर्ध करेगा. और

आपके जातीर जन अपायेगा. या अेक शप्स जे आपका सिई रस्मी दोस्त था उसके बारेमें आपने ये यकीन कर लीया के वो आपका जोगरी दोस्त साभीत लोगा. या अेक शप्स जे आपको सिई अखे छे लावातमें साथ दे सकता था आपने उससे ये उम्मीद बांधली के वो बुरे लावातमें आपका साथी बनेगा. या अेक शप्स जे सिई बनावके वक्त शरीर रेल सकता था उससे आपने ये उम्मीद रपी के वो बिगाडके वक्तभी शरीर बना रहेगा ये सब चीजें लकीकते वाकेआके पिवाइ है और भौबुदा दुनियामें लकीकते वाकेआ के पिवाइ कोई चीज मीलनेवाली नही. एस कीस्म की उम्मीदे कभी पुरी नही हो सकती. अगर आप उन्से धत्नीही उम्मीद करे जत्नी उम्मीद उन्से करनी थालीये - तो हीर आपको कीसीसे शिकायत न होगी. जस्को ऐसे दोस्तकी तवाश है. जस्में कोई कमी न हो उस्को कभी कोई ऐसा दोस्त मीलने वाला नही.

दोस्तके रूपमें शयतान :-

ये अेक अटल लकीकत है के जे शप्स धन्सान को अल्लाहतआवा की धताअत से रोके और उस्की नाइरमानी का रास्ता हीभायें वो कभी भी दोस्त और भैरप्वार नही हो सकता. बल्के वो दोस्तके रूपमें शयतान है जे बंदे को आपने आविक और मालिक की मुभाविकत पर उक्सा रहा है.

क्यामत के रोज बाज गुनालगार ये उजर बयान करते हुअे कहेगें अय हमारे रब! हमारा धरादा एस गुनाल को करने का नही था इलां-इलां दोस्तों की जद करने पर ये गुनाल हमसे सरजद हो गया. हम बेकुसुर है - असल कुसुरवार हमारे दोस्त है. लेकीन एस धीन अल्लाहतआवाके यलां ये उजर कबुल नही लोगा और धन्सान बेदीनोंकी दोस्ती पर अइसोससे लथेलीयों को मसलता रेल जयेगा. जैसाके कुआन मज्दमें है.

“और जस रोज (क्यामत के रोज) जलीम (नाइरमान) बलोट जयादा अइसोस से अपना लाथ काटेगा और कहेगा के काश ! मैंने रसुले अकरम (स.अ.व.) के रास्ते को ध्जितयार किया लोता. अय काश ! मैंने इलां से दोस्ती न की लोती. उस्ने तो मुजे लक और सली बात आ जानेके बाद भी गुमराह कर दीया और शयतान तो धन्सान को इस्वा ली

क्रिया करता है.

(सुरअे कुरकान - २८/२९/३०)

उम्मीद अल्वाहसे करनी याहीये तो हीर आपको कीसीसे शिकायत न होगी. उस्को ऐसे दोस्तकी तलाश है उस्में कोई कभी नही उस्को कभी कोई ऐसा दोस्त नही भीवेगा.

ईन्सानियत का डिगाड :-

बेरोऊगार लडके आम तौर पर शराब और ड्रगके आदी हो जते है. जब उन्के पास अपनी बुरी आदतों को पुरा करनेके लीये पैसे नही होते तो वो योरी करते है. गाडीयों के शीशे तोडकर उस्के अंदर लगे डुअे टेप रेकार्ड नीकाव कर उस्को बेच कर रकम हासिल करते है.

बरतानीया में आप उस सडक पर या उस मकामसे निकले हर जगहा आपको कुत्तोंका मंजर दीजाई देगा. मर्द -औरत कुत्तेकी रस्सी लाथ में लेकर चलते डुअे नजर आयेगें. अेक तालीम याइता अंग्रेज से पुछा के आप लोग कुत्तों से क्युं ईन्नी जयादा दीवचस्पी रभते है ?

अंग्रेज ने कुछ देर युप रेलकर बताया के मैंने इन्स के बारे में अेक रिपोर्ट पढी थी. उस्मे बताया गया था के इन्स में सात मिलियन आदमी कुत्ता पाले डुअे है. उन लोगों का सर्वे किया गया. ईससे मालुम डुवा के ખानदानी गरबड और ईन्डस्ट्रीयल ईन्केलाव के नतीजे में लोगों ने ईन्सान के अंदर अपना अेअतिमाद (विश्वास) ખो दीया है. क्युं के उन्हो ने देखा के भेटा और भेटी भी उन्का साथ नही दे रहे है. जब कुत्ता अपनी वझादारी की इतिरत की बिना पर उन्हे ये भरोसा दे रहा था. कुत्ते के अंदर वो वझादारीको पा रहे थे. उस्को वो मौजूदा ईन्सानों में यहां तक के अपने रिश्तेदारों में भी नही पाते. ईसलीये वो अपनी मतलुब इतिरत की तस्कीन के लीये कुत्ता पालने लगे. हीर उस्ने मुस्कराकर कहा के यही मामला लगभग बरतानीया के लोगोंका भी है.

असल बात ये है के कुत्ता रीअेकट (सामनो) नही करता जब के ईन्सान रीअेकट करता है और उस्की वजह ये है के कुत्ता ईन्सान के मुकाबले में अेक गेर ईज्जियारी मख्लुक है. ईन्सान ईज्जियारवाली मख्लुक होने की वजहसे रीअेकट करता है. जे आपको पसंद नही जब के कुत्ता ईस तरह रीअेकट नही करता ईसलीये उस्के और आपके दरम्यान

क्रोमप्लेक्स (गूँय) पैदा नही होता.

ईस्लामका मतलब हर असल दीने कितरत की घेरवी है. अगर ईन्सान ईस तरह दीने कितरत पर आजाये जस तरह डयवान दीने कितरत पर काईम है. तो उसके बाद ईन्सानसे रीअेकशनका तरीका छुट जायेगा. उसके बाद ईन्सानभी आपके वीये मेडबुज बन जायेगा. जस तरह डयवान आपके वीये मेडबुज बना डुवा है. क्युंके डर अेअतिबारसे ईन्सान डयवान से अइजल है. अेक ईन्सान और दुसरे ईन्सानके दरम्यान प्यावात का अेक्षरेंज होता है. जबके ईन्सान और डयवान के दरम्यान ईस क्रिस्म का अेक्षरेंज मुस्कीन नही.

नादाना की बुरा अंजाम :-

बुराईया के उसुल के मुताबिक कीसी मुल्क का कम अजकम 30% डीस्सा जंगल (यानी डरेभरे दरप्ट) का डोना याडीये. ये मोसम के तवाजुन के वीये बेडद जरूरी है. मगर काई अरसे से डीदुस्तान के जंगलो में कमी डो रही है. ई.स. १८४७ डीदुस्तान जब आजाद डुवा तो मुल्क की जमीन का २२% डीस्सा जंगल था. वेकीन मुसलसल कटाई के नतीजे में आज डीदुस्तान में सिई ८% जंगल बाकी रेल गये है. दरप्ट काटे जा रहे है मगर दरप्ट लगाये नही जाते. ये बेडद अतरनाक सुरते डाल है. ईस्का बुरा अंजाम आज डी से शुड डो युका है. आईन्दा क्या डोगा उसका ईल्म सिई अल्लाडको है.

“आ ये दाना कुनदकुनद नादान - लेक बाद अज भराबीये भिसीयार”

(अवरिसावा ८/२००१/२५)

पाकी और सझाई :-

डम मुसलमान है डमारी डर दीनी तावीम का आगाज तडारत (पाकी) से शुड होता है. जसे डुजुर (स.अ.व.) ने ईमानका “आधा डिस्सा” करार दीया है. नीज आप (स.अ.व.) ने ईन्तडाय अारिकभीनी से डर उस कामसे मना किया है के जे नाडक कीसी दुसरेकी तकवीकका सबब डो. वेकीन ये बात केडते डुअे शरम आती है के डमारे मुशतरक (सार्वजनिक) गुसलपाने याडे रेलमें डो या डवाई जडालमें डो, बाजारमें डो या मस्जिदों में, तावीमगाडों में डो या मद्रसों में डो

યા દવાખાનો મેં. હર જગા આમ તૌર પર ગંદકીકે ઝોસે મરકઝ બને હુએ હૈ કે ઉન્કે કરીબસે ગુજરના મુશકીલ હોતા હૈ ઔર જબતક સખ્ત મજબુરી પેશ ન આજયે કીસી નાઝુક મિજાઝ શખ્સકે લીયે ઉન્કા ઈસ્તિમાલ સખ્ત આઝમાઈશ સે કમ નહી. ઈસ સુરતે હાલ કી બડી વજહયે હે કે ઈન મામલાત મેં હમને દીન કી તાલીમાત કો બિલકુલ નજર અંદાઝ ક્રિયા હુવા હૈ ઔર મુશ્તરક (સાર્વજનિક) ઈસ્તિમાલ કે મુકામ પર ગંદકી ફૈલાને કે બાદ હમેં યે ખ્યાલ ભી નહી આતા કે હમ તકલીફ પહુંચાને કે ગુનાહ કો કરતે હૈ જીસ્કા ખુદાકે પાસ જવાબ દેના પડેગા.

(અલફુરકાન - ૪/૨૦૦૧/૪૮)

ફીલ્મી ચરકા :-

મૌજુદા દૌરકા એક હંગામા ખેઝ. અલ્લાહકો નારાજ કરનેવાલા ઔર ઈમાન ઔર ઈઝઝતકો બિગાડનેવાલા ફિત્ના ફિલ્મ હૈ. ખાસકર નવજુવાન તબ્કેકો ઈસ્કી બુરી લત પડ ગઈ હૈ. કીસી શેહર યા કરબાકે સિનેમા હોલમેં જનેવાલોંકા અંદાઝા લગાયે, તો નવજુવાનોંકી ખાસકર મુસલમાન નવજુવાનોંકી તઅદાદ બહોત ઝયાદા મીલતી હૈ. ફીલ્મ દેખના એક ફેશન બન ગયા હૈ. દીલ ખુશ કરનેકા એક ફોર્મ્યુલા હૈ. આજકે મુસલમાન મર્દ શાનકે સાથ ખવાતીન કો લેકર સિનેમા હોલકી ઝીનત બઢાતે હૈ ઔર ઉસ્કો “બીવી બચ્ચોંકા” હક સમજતે હૈ. યે વબા કમ ઉમ્મ બચ્ચોમેં ભી વબાકી તરહ ફેલી હૈ. બચપન સે હી વો ઈસ મન્હુસ બલામેં ગિરફતાર હો જાતે હૈ. ઘરકે ઝીમ્મેદાર ઉન્કી ઝબ ગરમ કરકે ઉન્કો ઈસ બુરાઈમેં શરીક કરતે હૈ.

સીનેમા કે બુરે અસર અબ કીસીસે છુપે નહી રહે. યહી ફીલ્મેં ગુનાહ સીખાતી હૈ. ઈન્સાનમેં બદઅખ્લાકી-બુરાઈયાં-બેહયાઈ ઔર બુરી ખસલતોંકો જન્મ દેતી હૈ.

ખેલકુદ કા ભુત :-

મૌજુદા દૌરકા એક બહોત બડા દુ:ખ યે તબાહ કરનેવાલે ખેલકુદ હૈ. આજ મુલ્કી ઔર આલમી પૈમાને પર ખેલોંકે નામ પર નવજુવાન તબ્કેકો મેહનત ઔર કામ કે મયદાનસે દુર રખનેકી ભયાનક સાઝીષે હો રહી હૈ. યે ખેલ તમાશે, ઈન્ફીરાદી ઈજતિમાઝી ઔર મુલ્કી પૈમાને પર

बलोट जयादा नुकशान करनेवाले है.

ये भेल तमाशे नवजुवान तण्कोकी सवाहीयत और ईस्तिदाह और काबिलीयत को गारत कर रहे है. अब ये भेल मकसदे उयात बन चुका है. अब नवजुवानों की छंदगीका हर लम्हा कीसी मशहुर भेवाडीकी पांवकी आक डालिसिल करनेकी किकर में गुजरता है. कुछ भेलतो ईत्ने मेहंगे है के मावदार तण्काभी उस्का पेट भरनेसे आच्छ है और भेल का ये तुझानी जलभा गरीब नवजुवानों को योरी और उकटी पर भडा कर देता है.

ईन भेलोमें शरीअतके आदाब और उसुलकी रियायत तो दुरकी बात है. जुवेआम शरीअतके अडकाम तोड़े जते है. आपने देभा डोगा के मस्जिदके नवदीक मैदानमें भेय लो रहा है. अजान लो रही है. भेलका माईक अपनी कुवतके साथ यीज रहा है के नमाज अदा करना मुश्कील होती है. भेवाडी मस्जिद में क्या आयेगें ? बलोट से जहरीरी दीनदारोंकी नमाजेंभी ईनही भेलों की नजर लो जाती है.

ईन भेलों में अक नुकशान कमाईका नुकशान भी है. बाज भेलोंमें पुरा समाज उस पर टुट पडता है. कारोबारी छंदगी ठप पड जाती है. ईन भेलों पर भे धडक दौलत अर्थ की जाती है. भेलों के भातिर कुजुल अर्थाया होती है. ये सब आसकर इन मुल्कोमें होता है जस्में ८०% अवाम गरीबी में छंदगी गुजरते है. वो लुकमा लुकमा के मोलतान है. छंदगीकी जइरीयात से मेहइम है. लेकीन भेलकुदके लीये ईन दुकुमतों को काइनेका अजाना डाय लग जाता है.

ईन भेलों की तारीफे मुकर्रर करनेमें आस तौर पर मशरकी और ईस्लामी मुल्को में ईम्तिहान के दीनों को जनबुजकर तय कीया जाता है. ये वो वक्त होता है के तल्बा अपनी मेहनत से ईम्तिहान में आवा नंबरोंसे काम्याब होकर अपनी सवाहीयतों और ईस्तिदाह का सुबुत दे सके और तावीमके नाम अर्थ होनेवाली कीमती दौलतका कुछ डक अदा कर सके. कौम और मुल्क की आरजुंओं को पुरा करे और कौम और मुल्कके सख्ये आदीम बने. सारा ईन भेलों को देपने के नजर लो जाता है.

रात भर टी.वी. पर टीकटीकी बांधे अडे रेडने के बाह वो जेडनी

और जस्मानी तौर पर बिल्कुल कमजोर होजाते है. हीर धमिलान में काम्याबी के वीथे चीठीथी की यावाकी से काम्याबी की तलाशमें लग जाते है. आपिर धस तावीमी बरबादी की कोध उद डोगी ? क्या कोमके ज्भमेदार धस पर तवज्जुल देगें ? क्या कोम धस नध नसल को भेलकुद के उवाले करने का ईस्वा कर युकी है ?

धस्वामी नुक्त अे नजर से भेल भेल है. मकसदे उयात नही. उर अैसा भेल ज्जस्मे वक्त बरबाद हो धस्के अलावा वो काम योरों के भेल जैसे योसर, शतरंज वगेरड ज्जन्से न कीसी उकमें मदद मीलती हो. सब मना है.

नवजुवान और गंदे रिसाले :-

गंदे वीटरेयर और रिसालों का आन्कल सेलाब है. आम रास्तों में गली कुयो, रेल्वे स्टेशनो, अस स्टेन्डो के भुक स्टोव अैसे रिसालों से भरे रेडते है. नंगे, आधे नंगे, पोस्टरों पर नीद से उठने के बाद पेडले उस पर नजर पडती है. ज्जन्से नवानी भडकती है. क्लिमी रिसाले और नावीलें पढकर नवजुवान तज्का जेडनी भिमारीयो का शिकार बन गया है. और उस्ने भेशरमी की तमाम उदें पार करवी है.

दीनदार केडवाने वाले घराने भी धस आइत से अपना दामन न बया सके. नया तावीम याइता तज्का धस्को रोशन ज्वाली और आज्जादी का अेक भुन्यादी उक तसव्पुर करता है के घरका उर छोटा बडा उर तरड के रिसाले पढे. आन्कल ये अेक इन और पेशा बन गया है. नाविल वीभने वालों को बडे बडे अल्काब और धनामों से नवाजा जाता है. क्युं के उस्ने नइसानी ज्वालीशात को उभारने का बडा अडम रोल अंजम दीया है.

धस्वाम ने पडले दीन से गावीगवोय और तस्वीरे बनाने पर पाबंदी लगाकर उस्की नडे काट दी है.

(निदाअे शाडी - प-२०००/१५)

शोभीन मिज्जल लोग अल्वाह को पसंद नही :-

शोभीन मिज्जल और इेशन के दीलदादल अल्वाह की नजर में पसंदीदा नही. डुजुर (स.अ.व.)ने अैसे लोगों को उम्मतके बहतरीन

वोगों में शुमार इरमाया है. ईशदि नबवी (स.अ.व.) है.

मेरी उम्मत के बढ तरीन वोग वो है जे नाओ नेअमत में पैदा
हुअे और उसी में पवे और बडे हुअे. जन्को डर वक्त अस ! किस्म
किस्म के आनों और तरड तरड के विबास अँबतन (पलेनने) की इकर
वगी रेडती है और वो (तकब्बुर की वजह से) मठार मठार कर बातचीत
करते है.

सय्येदेना डजरत उमर (रही.) का ईशदि है के तुम (जेब व जिनतके
वीथे) बार बार गुसलआनों के यक्कर लगाने और आलों की बार बार
सझई से बयते रहो और उम्दा उम्दा कालीनों (इश) के ईस्तिमाव से
भी बयो. ईसवीथे के अल्लाहके पास बंदे अेशो ईशरत के दीवदाहड
नही डोते. (किताबु जओहद) (अल्लाहसे शरम कीज्ये - ४१७)

दुनिया आकियत की जगा है ही नही :-

दुनिया में कोई शप्स ये दावा नही कर सकता के वो मुकम्मल तौर
पर आकियत में है. क्युंके यहाँ डर शप्स के साथ कुछ न कुछ जैसे दुःख
वगे हुअे है जे बार बार उसकी आकियत में जलव डालते रहते है.

अल्लाह तआला का ईशदि है : **لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ**
यानी डमने ईन्सानको बडी मशककतमें पैदा किया.

डर ईन्सान को मा के पेट में डंमल करार पाने से ले कर आभरी सांस तक
बडके जन्नतमें जाने तक डर कदम कदम पर तकवीक, मशककत, मलेनत,
अतरे, और सप्तीथों के मरडलों से गुजरना पडता है. मा के पेट में पांव
डैवाने की जगड नही. जाना गंदा पुन, पैदा डोने के वक्त में तंग जगड
से नीकलना. पैदा डोते ही सबसे पहले नाइ कटने की तकवीक. डीर ईत्ना
बेबस की अगर कोई देप आव करने वाला न डो तो तडप तडप कर
सिसक कर मर ज्ये, कभी कब्ज है, कभी दई, कभी दस्त, कभी पेयीस,
कभी दांत नीकलने में तकवीक तो कभी आंत में, कभी दुध छुडाने की
तकवीक, कभी अत्ना से लडु लुडान. जरा डोंश संभाला तो उस्ताह का
सामना, उन्का उर, भौक, दबदबा. तडेज्जब और अदब के वीथे मार.
जरा अकल और बुलुग को पडुंया कमाने की डीकर, थोडे दानों और पसे
की वावय में गरमी, शरही, बरसते बारीश में भी जैन से नहीं बैठने

देती. थोडे पैसो के लीये झौज में बरती हो कर सर कटवाता है. दीन बर हुकान, कारखाने में नकडा रखेता है. शोहरत और नामवरी की ज्वालीश दरबंदर होकरे खाने पर मजबुर करती है. आलीशान मकानो में बसने की यादतमें रोज नयी परेशानीओ में इसना पडता है. नवानी इप्सत बुई. बुढापा क्या आया. बिमारीयो का सिलसिला आया. घुंटेने में दर्द, डाजमा भराब, दांत काटने से, कान सुनने से, आज्ज मुंड से कहेता कुछ है, निकलता कुछ है, सुनता कुछ है, समजता कुछ है. दीन बदीन तकवीइों का सामना है.

कुछ तकवीइें औसी है जे दूसरों की तरफ से पेश आती है. वो अलग, मतलब के ये मामला अमीर, गरीब, छोटा, बडा, बादशाह, रईयत सबको पेश आता है. बल्के गौर कीया जये तो दुनिया में जे शप्स जल्ने बडे ओखटे पर होता है. या जल्ना बडा मावदार और ईज्जतदार होता है उल्ना ही उस्के जेहन पर झीकरों और भतरों का बीज होता है. जैसे लोगों की जहन के लाले पडते रेखते है हर वक्त झौज के घेरे में रेखते है और अपनी मरज से कही आना जना उन्के लीये मुशकील होता है. हर वक्त बडाई जते रेखने के भौइ से उन्की निंद हराम हो जाती है. पुरी पुरी रात नरम नाजुक गर्दों पर करवटे बदनने में गुजर जाती है.

और मान लीज्जे ईन झितरी तकालों की वजह से ईन्सानको जे तकवीइें पेश आती है. मरते दम तक नज्जत नही पा सकता. ईस्के मुकाबले में जन्मत आझियत की जगा है. जहां हर तरह की मन याही नेअमते नसीब होगी और खाने पीने के बाद अक भुशुदार उकार से सारा खाना हजम हो जयेगा. न बेयेनी होगी, न तकवीइ और न बदनुंका अहसास होगा. ईसलीये ईस बडी अझियत की जगा (जन्मत) को ही असल मकसुद और तलब की चीज बनाना याहीये और दुनिया की जिनत में पडकर जन्मत से गाझिल न होना याहीये.

टेलीफोन :-

भोबाईल टेलीफोन अक मुझीद चीज है. मगर जस कसरत से उस्का ईस्तिमाल हो रहा है वो अक मुसीबत है. क्युं के वो अक भलव डालनेवाली चीज जैसा बन गया है. आदमीको याहीये के वो लंभेशा

आवा लकीकतों पर गौर करे. ताके उसकी जेहनी तरक्कीका अमल बराबर जरी रहे. मगर मोबाईल - टेलीफोन और ईस तरलकी दुसरी चीजें जेहनी और झीकरी तरक्कीयोमें मुस्तकील इकावट बन गई है.

अक सालभ से बेठकर इत्मिनान से जुदा और आभिरत की बातें हो रही थी. अचानक उनके मोबाईलकी घंटी बज्. उन्होंने मोबाईल अपने कान से लगाया और कडा, अच्छा बेटा मैं आ रहा हूं . उसके बाद वो झोरन उठगये और बात मुकम्मल होने से पहले अपने बेटेसे मीलनेके लीये रवाना हो गये जे कीसी जगहा पर उनका इन्तिजार कर रहे थे. तकरीबन डर मई और औरतका यही डाल है. डर अक अपने माई इन्ट्रस्टका इेन है और इरज्ज तौर पर केडता है में सख्याईका इेन हूं

अक जगहा तकरीर हो रही थी. दरम्यानमें कीसी सालभके मोबाईलकी घंटी बज् तो ज्जम्मेदार सालभको माईक पर आकर केडना पडा के इत्नी संज्जदा बात हो रही है. आप लोग मोबाईल बंद करवे वगेरड.

ला जवाब मुकरीर :-

मौजूदा जमाने में मुसलमानों का अक मस्अला ये ली है के उनके दरम्यान लाजवाब मुकरीर पैदा हो गये है. असलमें ये लाजवाब लक्काज (बकवास करने वाले) होते है और लक्काज किस्मके लोग कभी कोई सही रेडनुमाई नही दे सकते.

मुसलमानों की कमजोरी ये है के उन्होंने जैसे अइराह को अपना रेडनुमा बनाया जे लाजवाब शाईर है. जैसे मकरीर और शाईर कीस्मके लोग तदब्बुर (दुरअंदेशी) और गेडरी सोय से ज्जाली होते है. जैसे लोग यही कर सकते है के जज्जबाती अल्काज बोवकर कौमको ज्जाली रास्तोंकी तरफ दौडा देते है. ज्जस्का कोई अंजम निकलनेवाला न हो और उन्होंने यही काम अंजम दीया है.

मेरठके अक सुझी शाईर वासिस मेरठी थे. वो अपने बख्योंके साथ ई.स. १८४७ में पाकिस्तान चले गये उनके सालभज्जहे मुज्जुफ्फर वारसीका अक इन्टरव्यू कौमी आवाज (२८, अप्रिल १८८६) में छपा है. उन्होंने ने कडा के प्रोफेसर ताहीइल कादरी ने जब निजामे मुस्तुफा का नारा लगाया

तो में अपनी किशतीया जवाकर उनके साथ शामिल हो गया. उनके वीये मैंने स्टेट बैंक की सर्विस छोड़ दी. मगर उनको करीबसे देखकर मैं बड़ोत मायुस हुआ. वो कीसी भी मामले में इंवेयर (संतोष कारक) नहीं. सियासत में भी नहीं. हीर उन्होंने कड़ा के ताड़ीइल काहरीसे अपने लजार छिन्तलाइ के बावुबुद्ध में जरूर कहुंगा के इस जैसा मुकुरीरे पुरे बरें व सगीर में नहीं.

(अलरिसाला - २/१८८८/३४)

मुनाइक आलम :-

लजरत उमर (२६.) मिम्बर पर जे लुअे और लोगों के सामने तकरीर की. उन्होंने कड़ा के इस उम्मत के वीये मैं सबसे जयादा जससे उरता हुं वो मुनाइक आलम है. लोगों ने उसकी बाबत पुछा तो लजरत उमर (२६.) ने जवाब दीया के “आविमुल्वीसान जलिलुल कल्ब.”

(जयातुस्सलाबा (२६.) ३/२६६)

जुस्के पास जेउनी इल्म हो. मगर उसके पास कल्बीमअरिइत न हो. यही वो इन्सान है. जुस्की बाबत लजरत उमर (२.६.) ने इरमाया के वो जमानका आलीम मगर दीलका जालीव होगा.

जैसा आदमी कुर्आन और लदीस को पढेगा मगर वो कर्ही की बात कर्ही जेउ देगा. क्युं के उसके पास सिई अल्फाज का जप्पीरा है. वो मआनीकी गेहराईयों से वाकिइ नहीं. वो इस्लामके नाम पर तलरीक यलायेगा. मगर वो बे लगाम घोडेकी तरल कीसीभी सिम्तमें दौडना शुइ कर देगा. क्युंके उसको रास्तों की पढेयान लासिल नहीं.

वो अपनी जतसे तअल्लुक रफनेवाले मसाईलको इरन समज वेगा. मगर मिल्वतसे तअल्लुक रफनेवाले मसाईलको समजनेसे कासीर (आज्ज) रहेगा. क्युं के उसके सीनेमें अपनी जतका दर्द तो है मगर उसके सीनेमें मिल्वत का दर्द नहीं. जे लोग अल्फाजके आलम और मआनीके जालीव हो वो बेशक बडा इत्ना है. उम्मतके वीये भी और तमाम इन्सानियतके वीये भी.

वअज और इस्लाहदी जिदमत :-

जस शप्स के जम्मे वअज और नसीलत की जिदमत होती है उसका मामला बड़ोत नाबुक होता है. हर वक्त लोग उसके लाथ -पैर

युंमते है. उसके दीवसे पुछो के उसपर क्या गुजरती है. ? वो वाह-वाह से
भुश नहीं छोते उन्को आह - आह में लुत्ह मीवता है.

में सय कलेता लुं मेरे पास जे लोग दीन की बातें सुनने के वीये
आते है उन्को में अपनेसे अइजल और नेक समजता लुं. क्युं के उन्में
रीयाकारी का दमल नहीं छोता वो घर से अछी नित्यत से आते है.
लेकीन में अपने को बिलकुल गुनाहगार समजता लुं क्युं के सुनने वाले तो
भामोश रहते है. बिहाजा सवाब ही सवाब का काम उन्से हो रहा है.

मेरी जभान तो ओलती है. मेरी बातों में तो लज्जत उन्की है.
और जभान की लज्जत अपनी छोती है. नइस हमारे साथ है. कैसे कैसे
भतरो से गुजरना पडता है. कुर्आन में ईशाह है. وَأَخْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ

भाज वक्त मुझे बडा भौंइ मालुम छोता है. सोयता लुं के वअज
वगैरहका काम बंद करहुं. मुझे अपने ईप्वास पर ईत्मिनान नहीं छोता
है. इर सोयता लुं के मुम्कीन है शयतान का उसमें कोई इत्ना हो अपनी
कोताहीयों की मांकी मांग वीया करुं और वअज कलेना न छोडुं. और
अल्लाह तआला से मांकी मांग वीया करुं.

وَأَعْفُفْنَا وَأَغْفِرْنَا وَأَرْحَمْنَا أَنْتَ مُؤَلَّاتَا (प-३)

अय अल्लाह मांकी इरमा दीज्ये और भप्श दीज्ये और रहम
इरमा दीज्ये आप ही तो हमारे मौला है. आपके सीवा कौन है हमारा?

(मलकुजात हजरत शाह अ.गनी डुलपुरी (र.अ.) - १२१)

दीवों में डुरी का सबज :-

ईन्सान का ईल्म बहोत मेहदुह है. ईस वीये अकसर अवकात वो
ऐसी राय कायम करवेता है. जे सिई उसके जेहनमें छोती है. उसके अपने
जेहन के बाहर उस्का कोई पुनुह नहीं छोता. ईस वीये जहमेदारीका
तकाजा है के आदमी पुरी तरह समजे बगैर कोई राय कायम न करे.

जइरी तलकीक के बगैर कीसी के बारे में बुरी राय कायम करना
अल्लाहके नवदीक गुनाह है और दुनिया में उस्का नुकशान ये है के समाज
के अंदर अकदुसरेके भिवाइ गलतईहमीयां पैदा छोती है. गेरजइरी शिकायते
पुनुहमें आती है. दीवों में डुरी पैदा छोती है और आपस में ऐसी
ईप्तिवाइ पैदा हो जाता है. जे कभी अत्म नहीं छोता.

ईन्सानों के दरम्यान ईप्तिवाङ्क डोना बिलकुल नागुञ्जर है. लोग याहे किन्नेही नेक भप्त और अरुछे क्युं न डो उन्कमके दरम्यान ईप्तिवाङ्क डों. ईप्तिवाङ्क पत्त करना मतलुब नही. अवलता जे थीळ मतलुब है वो ये के ईप्तिवाङ्क का असर आदमी के अप्वाक और भरताव पर न पडे.

हसद :-

आज ये डालत है के जब कोई शप्स ये देपता है के दुसरा आदमी उससे आगे बढ गया है. याहे वो माल के अतिबारसे डो या हैसियतके अतिबार से डो. वो झोरन हसद में मुत्तवा डो जाता है. उसके सीने में आगे बढनेवाले आदमीके पिवाङ्क नकरत और जलन की कत्मी पत्त न डोनेवाली आग बडक उठती है.

हसद और जलनमें मुत्तवा डोनेवाले लोग अगर ये समन्ने के कीसी को जे कुछ भीवा है वो पुदा के देने से भीवा है. वोही जयादा देता है और वोही कम ली देता है. बिडाजा ईन्सान पर जलन करने के बजये पुदाकी तरफ दूरे और पुदाको पुकारते डुअे कले के जस तरड तुने मेरे भाईको दीया है. ईसी तरड तुं मुंजे ली दे. अगर लोगों में ये सिङ्कत आजये तो समाजकी तमाम बुराईयां अपने आप पत्त डो जये.

कीसी की बडाई को देपकर अपनी कमीका अडसास उभरना एक झितरी जजभा है. ईस जजबे का रूप अगर पुदाकी तरफ डो तो वो सही है और अगर उसका रूप आदमी की तरफ डो तो गलत है.

नजरे बह :-

डदीस में आता है के नजर लगना भरडक है. नजर लगने के लीये ये जरूरी नही के आदमी ने बुरी नियतसे कीसी थीळ या आदमी की तारीफ़ की डो. मुप्चीस आदमी की ली नजर लग सकती है. ईस लीये सही तरीका ये है के कडेने वाला जब ईस कीरम का कोई जुम्वा कले तो वो उसके साथ $\text{أنا} \text{أنا}$ या ईस जैसा और कोई जुम्वा जरूर शामील करें. बजैर ईस जुम्बे को बोले अगर कीसी आदमी या थीळ की तारीफ़ की जये तो नजरेबह लगने का ईम्कान बाकी रहेगा.

नजरेबह असलमें हसद के जुम्बे बोलने से लगती है. झीर ली

अगर कोई शप्स अंदरसे लसट करने वाला न हो और वो जैसे बुम्बा बोले जे जालीर में लसट वाला न हो तब भी उसका धम्कान रहेगा के धस्की नजर लग जये. (अल रिसाला -७/०४-१२)

जब कीसी शप्स को कीसी दूसरे की जिन माल में कोई अख्ठी बात नजर आये तो उसको याहीये के उसके वास्ते हुआ करे के अल्लाहतआला उसमें. भरकत अता इरमाये.

भाऊ रिवायत में है के माशाअल्लाहुं लाकुवत धल्ला बिल्लाड कले. धस्से नजरे बट का असर जाता रहता है.

और ये धलाज भी है के कीसी की नजरे बट कीसी को लग जये तो नजर लगाने वाले के हाथ पांव का धोवन उसके बदन पर डालना नजरे बट के असर को दूर कर देता है.

कुर्तुबी ने इरमाया के तमाम उल्माअे ओहले सुन्नत वल जमाअत का धस पर धत्तिकाक है के नजरेबट लग जना और उससे नुकशान पलुंय जना डक है.

सलाभा (रही.) में अबु सल्ल बीन लुनैक का किरसा मशहुर है के उन्होने अक मौके पर गुस्ल करने के लीये कपडे उतारे तो उन्के सकेह रंग तंदुरस्त बदन पर आमिर बीन रबीआ की नजर पडी तो उन्की ज बानसे निकला के मैंने आज तक धल्ला लसीन बदन नही देभा. ये कलेना था के झौरन सल्ल बीन लुनैक को सप्त बुभार यढ गया. रसुले अकरम (स.अ.व.) को जब धस्की धत्तिलाअ लुध तो आप (स.अ.व.) ने ये धलाज तजवीज कीया के आमिर बीन रबीआ को लुकम दो के वो पुञु करे और पुञु का पानी कीसी भरतन में जमा करे और ये पानी सल्ल बीन लुनैक के बदन पर डाला जये. जैसेाही किया गया. तो बुभार झौरन उतर गया और वो बिलकुल तंदुरस्त होकर जस मुलीम पर रसुले अकरम (स.अ.व.) के साथ ज रहे थे धस पर रवाना हो गये. धस वाकेअेमें आप (स.अ.व.) ने आमिर बीन रबीआ को ये तन्बील इरमाध .

कोई शप्स अपने भाई को क्युं कत्व करता है ? तुमने जैसे क्युं न कीया के जब उन्का बदन तुम्हे अख्ठा लगा तो भरकत की हुआ कर लेते? नजरका असर होना डक है.

પત્થરોં કો અસર અંદાઝ સમજના :-

લઅલ, યાકુત, જર્મરદ, અકીક, ઓર સબસે બઢકર ફીરોઝા વગેરહ પત્થરોં કો કામ્યાબી ઓર ના કામી મેં કોઈ દખલ નહી. હઝરત ઉમર (રદી.) કે કાતીલકા નામ ફીરોઝ થા. ઉસ્કે નામકો આમ કરનેકે લીયે સબાઈયોં (ઈસ્લામકે દુશ્મનોં) ને ફીરોઝા બરકતી પત્થરકી હૈસિયતસે પેશ ક્રિયા. પત્થરોંકે બારેમં મુબારક ઓર મન્હુસ હોનેકા ખ્યાલ સબાઈ ફિરકે કી પૈદાવાર હૈ. પત્થર ઈન્સાન કી જીંદગી પર અસર અંદાઝ નહી હોતે. ઉસ્કે નેક યા બદ અમલ હી ઉસ્કી જીંદગી કે બનને ઓર બિગડનેકે જીમ્મેદાર હૈ. પત્થરોં કો અસર અંદાઝ સમજના મુશરીક કૌમોં કા અકીદા હૈ મુસલમાનોં કા નહી. પત્થરોં કો મુબારક ઓર નામુબારક સમજના અકીદે કા ફસાદ હૈ. જીસસે તૌબા કરની ચાહીયે.

(આપકે મસાઈલ - ૧/૩૭૭)

ગુમરાહી :-

બહોત સે જાહીલ મુસલમાન ખુદા સે ઈત્ના નહી ડરતે જીત્ના જિન્નાત ઓર શયતાનોં ઓર ખબીસ રૂહોંસે ડરતે હૈ. યુંનાયે ઉન્કે બુરે અસરસે બચને કે લીયે ચઢાવે ચઢાવે જાતે હૈ. ઉન્કે નામકી ભેટ દી જાતી હૈ ઓર બિમારીયોંકી વબાસે બચનેકે લીયે બકરે કાટે જાતે હૈ ઓર ઈન ગલત કામોંકી ઈશાઅત બાકાયદા એક શયતાની મિશનકે ઝરીયે ચલાઈ જાતી હૈ. જીસ્કે આમ જીમ્મેદાર આમ ઈન્સાન હોતે હૈ જે મુસલસલ યે પ્રોપેગન્ડા કરતે હૈ કે ખુદાકી બારગાહમં ખબીસ રૂહોં ઓર શયતાનકા દખલ હૈ. ઈસી તરહ ઈલ્મકી દુરીસે ઓર દીનસે લાપરવાહીકી વજહસે સાદા મુસલમાન ઈત્ના બડા ગલત કામ કરતે હૈ કે ભુતપરીત ઓર શયતાનકો અપને માલીક ઓર મૌલાકા હમસર બના ડાલતે હૈ. અલ્લાહકી પનાહ

(અકીદ એ મોમિન - ૧૧૬)

જીન્નાત શરીઅત કી નજર મેં :-

કુર્આન મજીદમં ૨૮ જગહ જિન્નાતોં કા ઝિક આયા હૈ ઓર હદીસમં ભી બહોત સે મુકામ પર ઉસ્કા ઝિક આયા હૈ. ઈસલીયે જિન્નાત કા વુજુદ તસ્લીમ કીયે બગૈર ચારા નહી. જે લોગ જિન્નાતકા ઈન્કાર કરતે હૈ ઉન્કે ઈન્કાર કી ઉન્કે પાસ કોઈ દલીલ નહી સિવાય ઈસ્કે કે યે

मज्जुक उन्की नजरों से ओजल है.

जिन्नात का आदमीयों पर मुसल्लत होना मुम्कीन है और उसके वाक्यात बहोत जयादा है. (आपके मसार्थल - १/३५६)

बिडाजा जिन्नात के बारे ये अकीदा रचनायालीयेके जस तरल अल्लाहतआला ने ईमान और शरीयत का ईन्सान को मुकल्लक (जम्मेदार) बनाया है. ईसी तरल जिन्नातको भी मुकल्लक बनाया है. नैसाके कुआनिमज्जद में है. :-

उमने जिन्नात और ईन्सानको अपनी (जुदाकी) ही ईबाहत के वीये पैदा किया है. (सुरअे जारियात - ५६)

जिन्नात भी अल्लाह की मज्जुक है. जे आगसे पैदा कीये गये है. उन्मे से बाऊ को ये ताकत दी है के वो जे शकल याहे ईप्तिवार करवे. उन्की उम्मे बहोत बंबी होती है. उन्में शरीर (नाफरमान) जिन्नातोंको शयतान केडते है. ईब्वीस भी जिन्नातों मे से है. जे जयादा ईबाहत की वजहसे इरिशतोंमें शामिल किया गया और इरिशतोंको लुकम दीया के डजरत आदम (अ.स.) को सिज्दल करे. तो ईब्वीसने सिज्दल न किया. और नाफरमानीकी वजहसे मरदुद हो गया और कयामत तक वअनतका तौक और वोगोंको गुमराह करनेका पट्टा उसके गलेमें डाल दीया गया.

जुन्नात की घमडी:-

डजरत मौलाना रशीदअलमद गंगोली (र.अ.) ने अक मरतबा अपने बयपन का वाक्या सुनाया के मेरी वावेदा मर्दुमा बयान इरमाया करती थी. रशीदअलमद ! जब तुं बरया था मुजे अल्लाह बक्ष जून नजर आया था. मैं ने देजा के वो तेरी यार पाई के पास आकर जडा हो गया और मुज से कडा तुम इलां मजार पर ईतर के इये यढाओ. वरना मैं तेरे लडके को मार डालुंगा.

वावेदा इरमाती थी के मैं ने उससे कडा मार डाल. तेरे सामने लेटा तो है. गंगोल में शाह दावुद और शाह सादीक साहब (र.अ.) का मजार है. वहां अक ताक पर अल्लाह बक्ष के नाम पर यढावे यढते और अत्तर के इये यढाये जते है.

वावेदा इरमाती के जब भी अल्लाह बक्ष नजर आता. और

धमकीयां देता और उरे दीजाता था तो मैं उसको यही जवाब देती के मैं तो दरगीज काये न चडाउंगी अगर तुज से मारा जाये तो मार डाल. इस साइ जवाब से वो तेरा बाब भी बिका न कर सका. मारना तो दुरकी बात तुंजे कभी उरा भी न सका. (रवजतुस्साविडात-२३३)

ये सब जिन्नात ईन्सानों की तरफ अकल वाले और ज़स्म और इड वाले है. उनकी अववाह भी होती है. पाते पीते है. जते मरते है. उन्में मुसलमान भी है काहीर भी है. जिन्नातों में काहीरकी ताअदाह ईन्सानी काहीरों से जयादा है और उन्में नेक मुसलमानभी है. और इंसिक भी है. सुन्नी भी है और बदअकीदाभी है. उन्में इासीकोंकी तअदाह ईन्सानोंसे जयादा है. (नेअमते ईमान-१३०)

जहुं करना हराम है :-

अक उदीस में लुजुर (स. अ. व.) ने सात उलाक करनेवाले गुनाहों में जहुं को भी शुमार कराया है. (मुस्लिमशरीफ)

कुअन और उदीस में जहुं की पेंछयान ये बताई है ज़न्में कुडीयल अकीदे या कुडीयल अमल पाया जाये. ईसी वीये इरमाया गया के जे शप्स जहुं को ईप्तिथार करेगा आभिरत में उसको उसकी सजा सेलनी पडेगी और वो सप्त नुकशान में डोगा. ईससे मालुम हुवाके जहुं सीअना और सीअाना और उसे अमल में लाना सब हराम है.

(जवाज़ीर - ईब्ने इन्र (२. अ.))

विडाजा कीसी मुसलमान के वीये ईन सिइली आमवीयातके करीब जना भी जईज नही. अइसोस है के आन मुस्लिम समाज में सेडर और जहुंका खलन (अमवीयात करना - कराना वगेरड) आम होता ज रडा है.

अदावत उसइ, कीनाकपट की बीना पर लोंग आसकर औरते बेधउक सिइली आमिलों और जहुं करनेवालोंके पास जाती है और दुसरोंको नुकशान पडुंयानेकी भातिर अपने दीन व ईमान को बरबाह करती है.

लुजुर (स. अ. व.) का ईशाद है. ज़स शप्सने नजुमी (बविष्यवाणी करना) या जहुंगर के पास जाकर उसकी बताई हुई

भातोंको सरया माना तो उसने लुजुर (स.अ.व.) पर नाजीव की गई
“वही” का ईन्कार किया. (तिबरानी कबीर-१७७/२)

जहुं का शरई हुकम :-

कीसी को नुकशान पहुँचाने के लीये तअवीज, जहुं, टूटका करना
हराम है और ऐसा शप्स अगर तौबा न करे तो उसको ईस्लामी हुकुमत
में सजाये मौत लो सकती है. जहुं और सिङ्खी अमल करने वाले का ये
अमल बदतरनीन गुनाहेकबीरा लोने में तो कीसी का ईप्तिवाङ्ग नही.
अलबत्ता ईस्मे ईप्तिवाङ्ग है के जहुं करने से आदमी काङ्गीर लो जता है
या नही. सही ये है के अगर जहुं को डलाव समजकर करे तो काङ्गीर है
और अगर हराम और गुनाह समजकर करे तो काङ्गीर नही. गुनाहगार
और फ़ासिक है. ईस्मे शक नही के जैसे सिङ्खी आमाव से दीव सियाह
लो जता है. कुकडा अे उम्मत ने ये ली लीभा है के अगर कीसी के जहुं
और सिङ्खी अमल से कीसीकी मौत लो जये तो ये शप्स कत्व करनेवाला
समज जयेगा. (आपके मसाईल - १/३५४)

ईसी तरह जैसे मन्तर से ईलाज कराना. जस्में जुदाके अलावा
दूसरी मज्बुक को शिक्षा देनेवाला और ईलाज करनेवाले को मुक़र्रब
(साथीदार) माना गया लो. नाजईज है. क्युं के ऐसा अकीदा ईस्लामके
पिवाङ्ग है. ऐसा ईलाज करनेमें कुङ्गीया अकीदे की तस्दीक और अअज्ज
है. लावां के डकीकत ये है के शिक्षा देना. लाजतों का पुरा करना, मुरादे पुरी
करना सिई अल्वाडतआवा के कब्जअे कुदरत में है. जुदा से यकीन रपते
लुअे जहंगी ली नेअमत है और उससे बगावत कर के जहंगी ली वभाव
है और मौत ली अजाब है.

बिडाजा मुसलमानों को डरगीज जैसे मुशरीकाना ईलाज नही
कराना याहीये क्युं के ऐसी डरकतों से नेअमते ईमान के लीये सप्त अतरा
पैदा लो जता है (नेअमते ईमान - १३१)

तावीज :-

डजरत अब्दुल्लाह ईब्ने अब्बास (रही.) से रीवायत है के
रसुलल्लाह (स.अ.व.) ने इरामया के मेरी उम्मत में से सत्तर डजर लोग
बगैर हिसाब किताब जन्त में दाखिल लो जअेंगे. वो बंदगाने जुदा

વો હોંગે જે મંતર ઓર જાડ કુંક નહીં કરાતે. બદ શુકન (અપશુકન) ન હી લેતે. ઓર અલ્લાહતઆલા પર ભરોસા કરતે હે. (બુખારી - મુસ્લિમ)

વો અલ્લાહ પર ભરોસા રખને વાલે હોંગે. અપની જરૂરીયાત ઓર કામો મેં જઈઝ ઓર મુનાસિબ અસ્બાબ હી ઈજ્તિયાર કરેંગે. ઓર એસે કામો સે પરહેઝ કરેંગે. જે અલ્લાહ કી મરજી કે ખિલાફ હે. ક્યું કે અસલ કાર સાઝ અલ્લાહ કી જાત હે. અસ્બાબ તો સિફ અલ્લાહતઆલા કે ફેસ્લે કે પુરા હોને ઓર જાહીર હોને કે ઝરીયે હે. જે બંદે ઈસ તરહ અલ્લાહ તઆલા પર ભરોસા કરેંગે અલ્લાહતઆલા ઉન્કે કામ ભી બના દેગા. (૨-૨૮-પ) **وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ**

શૈખુલ હદીથ હઝરત મૌલાના મુહંમદ ઝકરીયા (૨.અ.) તહરીર ફરમાતે હે કે હુઝુર (સ.અ.વ.) ને જીસ જાડ કુંક કો તવકકુલ કે ખિલાફ ફરમાયા હે. વો કુઆની આયતે ઓર મસ્નુન દુઆઓ કે અલાવા દુસરે કલિમાત સે જાડ કુંક કરવાના હે. અગર વો કલિમાત શિકીયા હે તબ તો વો સિફ તવકકુલ કે હી નહી ઈમાન કે ભી ખિલાફ હે.

ઓર અગર ઈસમેં કોઈ એસી બાત નહીં હે તો ચુંકે ઈન્સે અવામ મેં ગલત ફેલમીયાં ફેલને કા અંદેશા હે. ઈસલીયે વો ભી ના મુનાસિબ ઓર ખિલાફે તવકકુલ હે.

ઓર અગર વો કુઆની આયત સે યા મસ્નુન દુઆઓમેં સે હો તો વો તવકકુલ કે ખિલાફ નહીં હે બલકે અલ્લાહ કે રસુલ (સ.અ.વ.) કી સુન્નત હે. ઓર યે બડી મુનાસિબ રાય હે.

ઈસ હદીસ મેં ખાસ તાલીમ યે હે કે અપને મક્સદો કો પુરા કરને કે લીયે જઈઝ ઓર મુનાસિબ વસીલે ઈસ્તિમાલ કીયે જાયે. અગર કોઈ કામ કીસી નાજઈઝ વસીલે કે બગૈર પુરા ન હો રહા હો તબ ભી અલ્લાહ તઆલા પર ભરોસા કરકે યે યકીન કીયા જાયે કે અલ્લાહતઆલા કે હુકમકી પાબંદી હી મેં કામ્યાબી હે. વો હી તમામ કામો કો બનાને વાલા ઓર બિગાડને વાલા હે. વો કીસી તરહ ભી ઈન્સાન કો કામ્યાબ કર સકતા હે.

(અલ ફુરકાન -મે-૨૦૦૪/૧૭)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(प) लडाई - अध्या

लडाने वाले :-

आजकल की नंग लडनेवाले शुरू नही करते. बल्के "लडाने वाले" शुरू करते है. आज कल नगा नगा जे भुनी टकराव लो रहे है उसमें रेडबरी का कीरदार कौन अदा कर रहा है. ये वो दानीश्वर है. जे दूर अपने द्धतरो में भेठकर लडकाने वाले मजमीन लीभते है. और वो लीडर है जे दुरसरी सलामत नगलों में भेठकर तेज और सप्त भयान दैते रहेते है वगेरह.

ये सब नदीद कोम्युनिकेशन और मीडिया की वजह से मुम्कीन हुआ है. पहले जमाने में "लडानेवालों" को भी "लडने वालों" के साथ रेडना पडता था. अब नये आवात की टेकनीक की बीना पर ये मुम्कीन हो गया है के "लडाने वाले" दुरसे अल्लूज भोवकर या लीभकर लीडरशीप की क्डीट लेता रहे. नंग और टकराव के नुकशान से वो भी मेडकुज रहे और उसके बच्चे भी.-

मौबुदा जमाने में बलोट से लीडरों ने ऐसा किया है के उन्हों ने भोवे धन्सानों को ऐसी राहों पर दौड़ाया है जस्का नतीजा तबाहीके सिवा कुछ निकलने वाला नही था यही आज सारी दुनिया में हो रहा है. हर नगा ना अखेल लीडर यही कर रहे है. वो तबाही और बरबाहीके नकीब (आगेवान) बने हुए है. डीर क्युं ऐसा न लीभा जये.....!

उहीसे मे है. "सबसे भुरा चरवाला (काँध) वो है जे लोगों को कुयल देनेवाला हो" (सलीमुस्लिम - किताबुल धमारह)

धिस उहीसे के मीस्टाक (नमुने) वोही लीडर और लाकिम है जे अपने ओखदे का गलत धस्तिमाल करके लोगों पर बुल्म दाते है. धिसीके साथ वो लीडर भी है जे लडकाने वाले नारे और नज्जबाती भयान के ऋरीये आम धन्सानों को ताकतवार कौमसे बेकार लडा रहे है. और उसके नतीजे में सारी दुनिया में बेकुसुर धन्सान ललाकत का शिकार हो रहे है.

ऐसे तमाम लीडरों और रेडबरों पर कर्ज था के वो युप रहे. वो कौम को टकरावके रास्ते पर न ले जये.

मौजूदा जमाने में मुसलमान भी जे हर जगगा जल्मका शिकार हो रहे है उसकी भी आम तौर पर हमारे वीचने ओवनेवाले लोग दूसरोंको अपना दुश्मन बता रहे है. मगर हकीकत ये है के वो ईन्ही ना अहेव वीडरों के गलत ईकदामात का नतीजा है. ईस अतिबिारसे जैसे तमाम रेहनमा उपरकी हदीसके मिस्दाक (नमुने) साबित हुये है.

(अवरिसावा - २/१८८८/२६)

कुहरत का कानून :-

दुनियामें मुसलमानों के भिवाक़ चलनेवाली तेहरिको से भौक़ जहा डोने की जरूरत नहीं. जुद कुहरत का कानून उनके उपर चैक लगाने के वीये अबदी तौर पर (हंमेशा के वीये) मौजूद है. कुहरत के कानून के मुताबिक़ जैसे है के अपनी तमाम दौड धुप के आवुजूद ऐसी तेहरिके कीसी समाज के सिई अेक थोडेसे डिस्से को नुक़थान कर सकती है. समाज का बडा डिस्सा डीर भी बाकी रहेगा. जे हमारे मुवाक़ीक़ लोगा और उनको ईस्तिमाल करके हम ईत्ना आगे बढ सकते है के मुजालीक़ टोवी के निशान से बाहर निकल जये.

सुरज ग्रहन याहे किन्ना ही बडा है. सारी जमीन पर अंधेरा नहीं हैलता और न कोई सुरज ग्रहन हंमेशा के वीये बाकी रहेता है. यही मामला ईन्सानी दुनिया का है. ईन्सानी दुनियामें कोई बुराई याहे कीन्नीही क्युं न हो वो कभी तमाम ईन्सानियत को अपनी लपटमें नहीं लेती. ईन्सानियत का अेक डिस्सा अगर वकती तौर पर उसकी जदमें आता है तो बाकी डिस्सा उसके असर से बचा रहेता है. और जे डिस्सा बचता है वो अकसर अवकात जयादा किंमती और अहम होता है.

नये इत्ने :-

मौजूदा दौर में बलोट से नये इत्ने उठे. जैसे के ईन्कारे हदीस का इत्ना, नई नबुव्वत का इत्ना वगेरह. मगर मेरे नजदीक़ दौरे नजदीक़ का सबसे बडा इत्ना वो है ज्जुस्को "मुकम्मल ईस्लाम" कला जाता है. बाकी तमाम इत्ने नंगे इत्ने है. ईस वीये उनको पहँचानना आसान था. मगर वो इत्ना जे मुकम्मल ईस्लाम कायम करो के नारे के साथ उठा वो अेक निकाल पोश इत्ना था. युनांचे बलोट से उलमा तक उसके सेहर

में मुब्तला हो गये.

नाम निहाद मुकम्मल ईस्लामने मौजूदा जमाने में सबसे जयादा हीनी नुकशान पहुँचाया है. ईस्लाम में सारा झोक्स (रोशनी) तकवा पर है. मगर मुकम्मल ईस्लाम के नारे ने सारा झोक्स सियासत की तरफ़ कर दीया. ईस्के नतीजेमें जैसे लोग पैदा हो गये जे अंदर से बिलकुल ખाली थे. मगर बाहर वो सियासी अल्फ़ाज का जंगल बने लुअे थे.

मुकम्मल ईस्लाम के ईस नजरीये ने तमाम मुस्लिम मुल्कोमें मुसलमानों को लुकमरान और गेर लुकमरान तब्केमें बांट कर उन्हे अक दुसरे के खिलाफ़ लडा दीया. उस्के नतीजेमें मुस्लिम मुल्को के बडेतरीन मौके बरबाद होकर रह गये.

ये लोग असलमें मुकम्मल ईस्लामके नाम पर इइर्ध ईस्लामको (जे बुनियादी न हो) उस्को बे रहे है. और बुन्यादी ईस्लाम को छोड रहे है और जब बुन्यादी ईस्लाम छुट जाये तो सिर्फ़ अक ज़ादीरी धुम बाकी रहेगी. वहां सही तरीके का न बुन्यादी ईस्लाम बाकी रहेगा न इइर्ध ईस्लाम बाकी रहेगा. (अलरिसाला-२/१८८८/४०)

इत्नों के अस्बाब :-

सय पुछीये तो बाहर के इत्नों के जगाने में जे अस्बाब काम करते है. वो अस्बाब बाहर के नहीं बल्के हमारे अंदर ही के होते है. जब कहीं जहां कहीं इत्ना भडा लुवा तो तलकीक से यही साबित लुवा जे कुअाने मज्दने बयान किया है.

(۱۱۸-۱۴-ب) وَمَا ظَلَمْنَا هُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ

नहीं लुल्म किया हमने बल्के वो भुद अपने आप पर लुल्म करते थे”

लुखुर (स.अ.व.) ने बारगाले रब्बुल ईज्जत में दरखास्त की. मेरी उम्मत पर उन्हीं में से कोई दुश्मन मुसल्लत न किया जाये. तो अल्लाह तआला की तरफ़से आपको जवाब भीला.

“में उन पर उन्के सिवा बहार के दुश्मन मुसल्लत नहीं कइंगा. बल्के वोही अंदरूनी दुश्मन उन्की लुकुमत में तबाली इेलायेगा. बाहर के दुश्मन मसलमानों पर मुसल्लत नहीं हो सकते. अगरये जमीन

के किनारोंसे सिमट कर वो क्युं न आ जाये. बल्के मुसलमान ही आपस में अेक दुसरे को डबाक करेंगे.

उद्दीस की सही किताबों में मुस्लिम बुभारी, अबुदावुद, तिमीज़ी में ये अल्फ़ाज़ कुछ कमी बेशी के साथ ये उद्दीस मौजूद है. और ईस्लाम की तारीफ़ भी गवाह है. जे मुसीबत मुसलमानों पर ज़स शक़ल में ली और् ईदर असब उस्की ईब्तीदा धरवावों से दुर्घ. दुजुर (स.अ.व.) अकसर इरमाया करते थे.

“मैं तुम पर दुनिया से उरता हूं के उस्के मामले में आपस में नइसानियत में मुब्तला हो जाओगे.” (बुभारी शरीफ़)

उज़रत उमर (रही.) के पास इरस से मालेगनीमत आया. आपने उन्को मस्जिद नबवी के यजुतरे पर उलवा दीया, सुब्द दुर्घ तो जे कुछ आया था उस पर से यादर उटाई गई. रावी का बयान है के.

उज़रत उमर (रही.) ने ऐसी चीज़ देपी ज़स्को उन्की आपनों नही देभा था. यानी ज़वालीरात, मोती और सोनायांटी वगेरह बस ! उज़रत उमर (रही.) रो पडे.

अब्दुर्दमान बीन औफ़ (रही.) डाजोर थे बोले. ये तो शुक्र की ज़गा है, इर आपको कीस ज़्यालेने इवाया ?

उज़रत उमर (रही.) ने ज़वाब में इरमाया.

हा ! अल्वाह तआवाने कीसी कौमको ये चीज़ें नर्ही दी. मगर उसी के साथ उन्में आपस में अदावत दुश्मनी और कीना पैदा हो गया.

मोगल दुकुमत भी आवमगीर के बाह किन्तों के ज़स तुज़ान में धीर गई थी. जनने वाले जनते है के उन पर बाहर से ज़ल्मे सेलाब आये उन्का सर यश्मा ली अंदर ही था. ज़स्का अइसाना बलोट लंबा है और उस्की तइसीव तारीफ़ की किताबों में मौजूद है. जुवासा ये है के सारे किन्तों की जुन्याद अगर सय पुछीये तो खिंदुस्तान में ली वही मस्अला रहा है. दर ज़गा यहां तक के पड़ेवी सदी हीजरी में किन्तों की ईब्तेदा दुर्घ. यानी वोही शिया सुन्नी का ज़घडा. तारीफ़े ईस्लाम की ईब्तेदा में ही ज़स कीसी के दीव में दुनिया तल्बी की अंगेठी (सगडी) सीलगी उस्ने दीन के ईसी मस्अले की आड लेकर अपनी लावय और

में मुब्तला हो गये.

नाम निहाद मुकम्मल ईस्लामने मौजूदा जमाने में सबसे ज्यादा हीनी नुक़शान पहुँचाया है. ईस्लाम में सारा झोक्स (रोशनी) तकवा पर है. मगर मुकम्मल ईस्लाम के नारे ने सारा झोक्स सियासत की तरफ़ कर दीया. ईस्के नतीजेमें जैसे लोग पैदा हो गये जे अंदर से बिलकुल ખाली थे. मगर बाहर वो सियासी अड्डाज का जंगल बने लुअे थे.

मुकम्मल ईस्लाम के ईस नजरीये ने तमाम मुस्लिम मुल्कोमें मुसलमानों को लुक़मरान और गेर लुक़मरान तब्केमें बांट कर उन्हे अक़ दुसरे के खिलाफ़ लडा दीया. उस्के नतीजेमें मुस्लिम मुल्को के बढेतरीन मौके बरबाद होकर रेल गये.

ये लोग असलमें मुकम्मल ईस्लामके नाम पर इज़्ठ ईस्लामको (जे बुनियादी न हो) उस्को ले रहे है. और बुन्यादी ईस्लाम को छोड रहे है और जब बुन्यादी ईस्लाम छुट जये तो सिर्फ़ अक़ ज़ाहीरी धुम बाकी रहेगी. वहां सही तरीके का न बुन्यादी ईस्लाम बाकी रहेगा न इज़्ठ ईस्लाम बाकी रहेगा. (अलरिसाला-२/१८८८/४०)

किन्नों के अस्बाब :-

सय पुछीये तो बाहर के किन्नों के जगाने में जे अस्बाब काम करते है. वो अस्बाब बाहर के नहीं बल्के हमारे अंदर ही के होते है. जब कहीं जहां कहीं किन्ना ખडा लुवा तो तडकीक से यही साबित लुवा जे कुअनि मख़दने बयान किया है.

(۱۱۸-۱۴-ب) وَمَا ظَلَمْنَا هُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

नहीं लुल्म किया हमने बल्के वो खुद अपने आप पर लुल्म करते थे”

लुज़ुर (स. अ. व.) ने बारगाढे रब्बुल ईज़ज़त में दरखास्त की. मेरी उम्मत पर उन्हीं में से कोई दुश्मन मुसल्लत न किया जये. तो अल्लाह तआला की तरफ़से आपको जवाब मीला.

“में उन पर उन्के सिवा बहार के दुश्मन मुसल्लत नहीं करूंगा. बल्के वोही अंदरूनी दुश्मन उन्की लुक़मत में तबाली इलायेगा. बाहर के दुश्मन मसलमानों पर मुसल्लत नहीं हो सकते. अगरये जमीन

के किनारोंसे सिमट कर वो क्युं न आ जये. बल्के मुसलमान ही आपस में अेक दुसरे को उलका करेंगे.

उदीस की सही किताबों में मुस्लिम बुभारी, अबुदावुद, तिमीजी में ये अल्लाह कुछ कमी बेशी के साथ ये उदीस मौबुद है. और ईस्लाम की तारीफ भी गवाल है. जे मुसीबत मुसलमानों पर अस शकल में ली औई हर असल उसकी ईब्तीदा घरवालों से लुई. लुजुर (स.अ.व.) अकसर इरमाया करते थे.

“में तुम पर दूनिया से उरता लुं के उसके मामले में आपस में नइसानियत में मुब्तला लो जओगे.” (बुभारी शरीफ)

उजरत उमर (रदी.) के पास इरस से मालेगनीमत आया. आपने उन्को मश्छटे नबवी के यबुतरे पर उलवा दीया, सुब्द लुई तो जे कुछ आया था उस पर से याहर उटाई गई. रावी का बयान है के.

उजरत उमर (रदी.) ने औसी चीज देपी जइस्को उन्की आप्नों नही देपा था. यानी जवालीरात, मोती और सोनायांटी वगेरह बस ! उजरत उमर (रदी.) रो पडे.

अब्दुर्रहमान बीन औइ (रदी.) लाजर थे बोले. ये तो शुक् की जगा है, इर आपको कीस ज्वालने इलाया ?

उजरत उमर (रदी.) ने जवाब में इरमाया.

हा ! अल्लाह तआवाने कीसी कौमको ये चीजें नही दी. मगर उसी के साथ उन्में आपस में अदावत दुश्मनी और कीना पैदा लो गया.

मोगल लुकुमत ली आलमगीर के बाद किन्नों के अस तुझान में धीर गई थी. जनने वाले जनते है के उन पर बाहर से जत्ने सेलाब आये उन्का सर यश्मा ली अंदर ली था. जइस्का अइसाना बडोत लंबा है और उसकी तइसील तारीफ की किताबों में मौबुद है. जुलासा ये है के सारे किन्नों की जुन्याद अगर सय पुछीये तो लिंदुस्तान में ली वही मश्अवा रहा है. उर जगा यहां तक के पडेली सदी हीजरी में किन्नों की ईब्तेदा लुई. यानी वोही शिया सुन्नी का जघडा. तारीफे ईस्लाम की ईब्तेदा में ही अस कीसी के दील में दूनिया तल्बी की अंगेढी (सगडी) सीलगी उरने दीन के ईसी मश्अले की आड लेकर अपनी वालय और

ખ્વાહીશ કી જલનનમ રોશન કી ઓર આજ તક હાલ યે હૈ કે જીસ વાકીઆ પર નજર હાલે ઉસ્મેં યહી ઈખ્તિલાફ કી બુન્યાદ કાયમ હૈ. આજ ૧૪૪ સાલ ગુજર ચુકે હૈ. લેકીન જબ કીસી કા જી ચાહતા હૈ. ઉસ્કો તાઝા કર કે અપને મકસદ કો હાસિલ કરને કા ઝરીયા બના લેતા હૈ. એસા માલુમ હોતા હૈ કે વાકેઆ આજ હી પેશ આ રહા હૈ. લેકીન ઉસ્કે અસ્બાબ અંદરૂની પહેલે સે કાર ફરમા હોતે હૈ.

કીન્ની અજબ બાત હૈ ! કુર્આન મજીદ કી આયતોં ઓર હદીસે પાક કે બેશુમાર બયાનાત હૈ. જૈસા કે કીસી મુસલમાન કે લીયે હરગીઝ યે જઈઝ નહીં કે વો અપને કો કીસી હાલમેં અકેલા ઓર તનહા ખ્યાલ કરે. ઉસ પર યે યકીન કરના લાઝમી તૌર પર વાજબ હૈ કે હર હાલ મેં એક જબરદસ્ત કુવ્વત કો બેઈન્ટેહા રહમો કરમકે સાથ અપને કરીબ યકીન કરે. ઓર યે મેહસુસ કરે કે યે કુવ્વત ઉસ્કે જહીર ઓર બાતિન, અવ્વલ આખિર કો ઘેરે હુએ હૈ. બગેર કીસી શક ઓર વેહમ કે ઈસ હકીકત પર ભરોંસા કરે કે મેરે ઈમાન કી બરકત કી વજહ સે ખુદાવંદે કુદ્દુસ કી મદદ ઓર નુસરત હર ઘડી હરહાલ મેં મેરી તરફ કિન્નોં કો દુર કરને કે લીયે તૈયાર હૈ.

જબ મોમિનબંદા મખ્લુક સે પલને કા યકીન અપને દીલ-દિમાગસે નિકાલ કર અપને ખાલિક કી તરફ જમાતા હૈ. તો ઉસ્કો યે યકીન કરલેના ચાહીયે કે ગૈબી તાકતેં યાની અલ્લાહ તઆલા કે ફરિશ્તે ઉસ પર નાઝીલ હો રહે હૈ. ઓર દુનિયા આખિરતમેં ઉસ્કી મદદ કરના ઉન્કી જીમ્મેદારી હૈ.

મોમિન કા ફર્ઝ હૈ કે અપને મા-બાપ, માલ, તિજરત, ઘર, મતલબ કે હર ચીઝ સે ઝયાદા અપને પ્યારે રસુલ (સ.અ.વ.) સે મોહબ્બત રખે.

જહીર હૈ કે એસી બીસોં બાતેં હૈ. જો કુર્આન મજીદ કી આયતોં મેં તફસીલ સે મૌજુદ હૈ. ઈસી તરહ અલ્લાહતઆલા કી હમ્દો સના, શુક, તવકકુલ ઓર તૌબા, ઈસ્તિગ્ફાર ઓર ઈતાઅત ઓર અપને તમામ અહવાલ ઉસ્કે હવાલે કરના. યે સબ કુર્આન મજીદ મેં બતાયે ગયે હુકુક હૈ. ઉસ્મેં કૌન શક કર સકતા હૈ. બેશક યે ચીઝેં એસી હૈ. કે ઉસ્મેં શક કરનેવાલા

કાફિર હો જતા હે. ઓર ઉન્હી ચીઝોં કા નામ અકીદા હે.

હદીસ મેં હે કે ઈન્સાનિયત ખુદા કા કુંબા હે યાની ઉસ્કી જાન આબરૂ કા નિગેહબાન ઓર હિફાઝત કરનેવાલા ખુદા હે. ઈસ તરહ ઉસ્કી જાન આબરૂ ઓર ઈઝઝતકો આખરી મુકામ દીયા ગયા હે. ઓર ખુદા ખુદા કો ઉસ્કા મુહાફિઝ બતાયા ગયા હે.

(અલ ફુરકાન-૮/૨૦૦૨/૨૦)

બે હાયદા લડાઈ :-

એક રોઝ હઝરત મૌલાના સૈયદ અસ્ગર હુસૈન સાહબને હઝરત મુફતી મહંમદ શફી સાહબ કો મુખાતબ કરકે ફરમાયા 'આજ હમ અજબ તમાશા દેખ કર આયે હૈ' હઝરત મુફતી સાહબને કાન ખરે કર દીયે.

ફરમાયા મોહલ્લા કોટલા સે બાહર જંગલમેં છોટી છોટી લડકીયાં બેઠી હુઈ આપસ મેં લડ રહી થી. એક દુસરે કો માર રહી થી. હમ કરીબ પહુંચેતો માલુમ હુવા કે યે સબ મીલકર જંગલસે ગોબર ચુંન કર લાયી હે ઓર એક જગા ઢેર કર દીયા હે. અબ ઉસ્કી તકસીમ કા મસ્અલા હે. હિસ્સોકી કમી બેશી પર લડને, મારને પર તુલી હુઈ હૈ. પહેલી નજરમેં મુઝે હંસી આયી કે યે કીસ ગંદી ઓર નાપાક ચીઝ પર લડ રહી હે. હમ ઉન્કી કમઅકલી ઓર બચપને કી હરકતોં પર હંસતે હુએ ઉન્કી લડાઈ બંદ કરાને કી કોશિષ મેં લગે હુએ થે કે કુદરતને દીલમેં ડાલા કે ઈન્કી બુવકુફી પર હંસને વાલે!...

જે લોગ દુનિયાકી દૌલત ઓર જાહો મન્સબ (પદવી, પ્રતિષ્ઠા) પર લડતે હૈ અગર ઉન્કોં હકીકત કી આંખ નસીબ હો જાયે તો વો યકીન કરેંગે કે અપને કો અક્લમંદ ઓર તરકકી વાલા સમજને વાલોં કી સબ લડાઈયાં ભી ઈન બરચીયોંકી લડાઈ સે કુછ ઝયાદા નહીં. ફના હો જાનેવાલી, ચંદ રોઝ મેં અપને કબ્જે સે નીકલ જાનેવાલી, સબ ચીઝોં આખિરત કી નેઅમતોં કે મુકાબલે મેં એક ગોબર સે ઝયાદા હૈસિયત નહી રખતી.

હુઝુર (સ.અ.વ.) કા ઈર્શાદ હૈ દુનિયા મુરદાર જાનવર હૈ ઓર ઉસ પર ઝપટનેવાલોં કુત્તે હૈ.

(અલ બલાગ-મુફતીએ આઝમ નંબર -૨૯૫)

पढ लीया आपने ? उजरत मौलाना सैयद अस्गर साहब का मद्दुअ और वाकेआ ! आरिफ़ इमी (२.अ.) नेभी अपने नफ़स और अपने ज़ालीक़ की पह्लेयान के बडे बडे सबक़ दीये है. मालुम हो के मौलानाअे इम (२.अ.) के पास मुफ़ातब उल्मा और सुक़ीया ली है.

ये उकीक़त है के हमारे ज़माने के एल्मी और दीनी उल्को मे बडी बडी दर्साग़ाहों में और जानकाहों तक ज़े लडाएँ ज़घडे यल रले है. बकौल उजरत मौलाना सैयद अस्गर हुसैन साहब ! अगर उकीक़त की आंफ़ नसीब हो तो नजर आ ज़येगा के सारी क़श मक़श सिर्फ़ ज़हो मन्सब (पदवी, प्रतिष्ठा) और माल दौलत के लीये है और ये गोबर पर लडने वाली एन बख़्शीयों की लडाएँ से ज़यादा मुफ़्तवीक़ नहों है.

﴿ع ٢٢﴾ كَرَّكَو (अल कुरक़ान-१२/१८८०/५)

रिशतेदारों में आपस में मामुली बातों में मुफ़ाविक़ते छोती है. मामलात में उल्जाव पैदा होता है. दुरी बढती है. रंजशे पैदा छोती है. जानदानी ज़घडे जन्म लेते है. शिकायतों का अक़ लंबा सिलसिला छोता है. ज़स्की वज़हसे आदमी अंदरूनी बेयेनी का शिकार छोता है. सेहत ख़राब हो ज़ती है. कारोबार पर असर छोता है. ज़ंदगी बेमज़ा हो ज़ती है. एन सबका उदीसकी रोशनीमें यही एंवाज है के आदमी रिशतेदारोंके लुक़ुकी अदायगी की एंभेदा फ़ुदसे करे. रिशतेदारों की ज़यादती के बावुजूद अल्वाह के लुक़ुकी तामील करे. गावलीयां ली वोली दे. ખર્ચ ली उन्ही पर करे. उसद ली वोली करे और ખેર ખ्वालीली उन्ही की करे. बुरा लला ली वोली क़हे ओर सद्का ख़ैरात के ज़रीये लाजत उन्ही की पुरी करे ये है सबर ये है नफ़स के साथ मुज़ाहीदा. अगर एन एंफ़्तिलाक़की वज़हसे बिगाड पैदा हो गया तो बडी ख़ैर से मेहज़म हो गया.

(दीने रडमत-८४)

क़ान के करये :-

“क़ान का करया” अक़ क़लावत है. ज़े आम तौर पर जैसे आदमी के लीये बोला ज़ता है ज़े हर सुनी हुँए बात पर यकीन कर लेता है. इ़ीर उसके मुताबिक़ उसके ज़ेहन और फ़िक़र में तब्दीली होने लगती है.

जैसे करये क़ान वालों का अक़सर डाल ये छोता है अगर कोए

शम्भु अपनी बात उनके सामने रख दे और उस बात से थाले कीसी पर कीत्ना ही बोल पडे वो उसको सही मान लेते है और उसकी लां में लां मीवाने लगते है. बल्के कुछ दूसरी बातें अपनी तरफ से मीवाकर दूसरेको भराब केडते है. जैसे आदमी समाज और दोस्तों के वीये बडा भतरनाक होता है. जैसे आदमी के बारे में लुलुर (स.अ.व.) का ईशाद है...

हर सुनी लुई बात को नकल करना लुहा खोने के वीये काड़ी है.

कश्ये कानका आदमी भुद ली परेशान होता है और दूसरोंको ली परेशानी में मुभ्तवा करता है. जैसे पागलों के वीये कडावत मशहुर है कव्वा कान ले गया. अस ईत्ना सुनते ही कव्वे के पीछे लागे ज रहते है वेकीन अपने कान पर लाथ लेजकर देभने की तकवीक नही लेते.

आज हमारे समाज में कश्ये कानके लोग बढोत जयादा पैदा हो गये है. उनकी वजह से बढोतसे रिश्ते टूटते है. दोस्तीयां भत्म हो जाती है. तअल्लुक की आरसी पर मेव यढ जाता है. अक सालबने वाकेआ सुनाया.

अक नव लवान की शादी उसके मामुं की बेटी से लुई थी. कीसी बात में मामुली कशीदगी लुई थी. ये बात गांव के अक आदमी ने लडकी के घर पलुंयाथी के तुम्हारी लडकी भुदकुशी करने ज रही थी मैने समजकर उसको रोका वरना वो जनसे लाथ धो बैठती. अस ! ये सुनकर लडकी के बाप-भाई वगेरह गुस्से में आये और लडके को मारपीट कर जभ्मी कर दीया. और जबरदस्ती तवाक ले कर लडकी को अपने घर ले गये. बाह में जव गुस्सा ठंडा लुवा तो लकीकते डाल का ईल्म लुवा बढोत पछताये और शरमींदा लुवे. थोरे अरसे बाह लडकीका उसी लडके के साथ दोबारा निकाल लुवा और लडकी दोबारा उसी घर में आई.

ईस तरह न जाने कीत्ने किन्ने आये दीन पेश आते है. जस्के नतीजे में जींदा बदन आग और भून की नजर हो जते है. कानका कश्ये गीबत में मुभ्तवा होता है. और उसके आसपास भुद गर्जी और यापलुसी करने वालो की लीड लगी रहती है. और ये सब अपनी आभिरत बरबाह करने के साथ अपनी और दूसरों की दृनिया उजडते है. जैसे लोगों को याद रखना थालीअे के ईस गंदी हरकत पर लुलुर

(स.अ.व.) की कीमती सप्त वर्ष आर्ष है.

कीसी के बारे में ऐसी बात कही जे उसमे नर्ही है ता के गीबत कर के उसको नुकशान पहुँचाये तो अल्लाह तआला उसे जलन्नम की आग में उस वक्त तक रम्भेगा जब तक वो ईस बात को साबित न करे जे उसने कही है.

(तिबरानी -४/८४)

ईसलीये जरूरत ईस बात की है के कोई बात बगैर तहकीक के कबुल न की जये वरना समाज और घर और ईदारी को नुकशान पहुँचे बगैर न रहेगा.

दुश्मनी की वजह :-

आप अदालतों में जाकर देख आर्षये. जे मुकदमों आते है. मुसलमान मुसलमान के खिलाफ मुद्दों (दावा करनेवाला) है. मुसलमान मुसलमान का मुद्दा अवैध (जिस पर दावा किया गया वो) है. मुसलमान मुसलमान की ईज्जत को भाङ में मीला देना याहता है. उसके घर पर डल यवा देना याहता है. ईन दोनों का आर्षली (Civil code) भी अेक है और भाङ अवकात तो पुन भी अेक होता है. दोनों पाटी अेक नसब अेक जानदान से तअव्लुक रहते है.

हकीकत में ईप्तिवाङ और दुश्मनी का तअव्लुक नइसानियत से दौबत परस्ती के जुनुन से है. नइस परस्ती और मादीयत से है. उस गलत निजाम और निसाबे तालीम से है. जइसे अज्वाक जैसी यीज को नजर अंदाज कर दीया है.

(मौलाना अबुल हसन अली नदवी (र.अ.))

असल कमी :-

मौजूदा जमाने के मुसलमानों की असल कमी ये है के उनके अंदर ईस्लाम की जहरीरी सुरत वाला ईस्लाम तो मौजूद है मगर ईस्लाम की इह उनके अंदर मौजूद नही है. वो बलोट बडे पैमाने पर लाभों मस्जिदों में दरदीन नमाजकी जहरीरी शकलको दोहराते है. मगर नमाज की असल इह जे ईत्तिहाह है वो उनके अंदर मौजूद नही. ईस मस्अवेका अेक ही डल ये है के मुसलमानों के अंदर ईस्लाम की असल स्पीट को जिंदा किया जये जे भौके पुदा और डिक्के आपिरत पर छोती है. इह के बगैर शकल

ईस तरल बे किंमत है जोस तरल बगैर मज्ज के इव का छीलका.

परेशानी का सबब :-

मुसलमानों के ईन्तिशार (वेर विभेर) का सबब ये है के उनके दीवों से अल्लाहतआवा का भौक निकल गया है. भौबुदा जमाने के मुसलमानों का मकसद दुसरी कौमों की तरल सिई माल कमाना और मादी थीजों में तरक़ी लासिव करना बन गया है. ये मिज्ज लंमेशा लसद और नइसानियत के ज्जलात की परवरीश करता है और यही भौबुदा मुसलमानों में बडे पैमाने पर पैदा हो गया है.

असल बात से हटना :-

भौबुदा जमाने में मुसलमान तमाम मुल्को में कीसी न कीसी ताकत के ज्जुल्म का शिकार हो रहे है. कहीं कीसी रोजगारी ताकत का, कहीं कीसी अकसरीयती (बलुमती) ताकत का, कहीं सियासी और झैज ताकत का, ईस मस्अवेका लकीकी लव सिई सुरअे अन्झाल की आयत नं.-६० में है. यानी मुसलमानों का ताकतवर होना.

ज्जुल्म और जयादती लंमेशा बे ताकती की सजा होती है. अपन आपको ताकत वर बना कर ही उससे नज्जत लासिव की ज्ञ सकती है. ताकतवर बनानेका मतलब ये है के मुसलमानों को ईल्म और शुउर से आरास्ता कीया ज्ञये उनमें आपस में ईत्तिफ़ाक पैदा कीया ज्ञये. उनको ज्जदीद ईल्मी कुव्वतोंसे मुसल्लेह (लथियारबंद) कीया ज्ञये ईन लकीकतों से तैयार होनेका नाम ताकतवर होना है और ज्ञे कौम ईन थीजों में ताकतवर हो ज्ञये उसके उपर कोई ज्जुल्म करने की लिम्मत नही कर सकता.

हिंदुस्तानी रिश्ता :-

ईस लकीकत से कौन ईन्कार कर सकता है के लिंदुस्तान के रेलेनेवाले मज्जलब और मिल्लत के विलाजसे याहे किन्नाही ईप्तिवाइ रभते हो. मगर लिंदुस्तानी होनेके रिश्तेने उन सबको अेक कडीमें पीरो दीये है. ईस रिश्तेकी बीना पर उनके शायदे मुश्तरक (भागीदारीमें) है. लिंदुस्तानी होनेकी हैसियतसे ज्ञे थीज लिंदु के वीये मुझीद है वो मुसलमान के वीये भी मुझीद है और ज्ञे मुसलमान के वीये नुक्शान देनेवाली है. वो लिंदु के

लोडा रेखता है. वो जटकों से असर लीये जगैर जना जनता है.

दुजुर (स.अ.व.) के अस्लाब जैसे ली लोडा सिद्धत ईन्सान थे. वो ईस क्रिस्म की बातोंसे उपर उठ गये थे. उजरत उमर झाड़क (रही.) ने उजरत अबु बक (रही.) के ओक इरमान को झाड डाला मगर उजरत अबु बक (रही.) ने उस्को बुरा नली माना. उजरत आयशा (रही.) ने उजरत अबु दुुरैरल (रही.) के बारे में केल दीया के अबु दुुरैरल ने ब्रुठ कडा मगर सलाबी (रही.) ने ईस्का कोई असर नली लीया.

सीरत की किताबों में जैसे वाकेआत सेंकडो मीलते है के ओक सलाबी को दुसरे सलाबी के साथ नामुवाझीक तबुरबा लोता था मगर वो उस्का असर लीये जगैर आपस में भाई भाई बनकर रेखते थे ऐसी बातों की बिलकुल परवा नली करते थे. सलाबा (र.दी.) अगर आलकलके लोगों की तरल नाजुक पार्सल लोते तो वो कभी ताकतवर ईन्कलाब भरपा नली कर सकते थे. जस्ने तारीफ के रूप को मोड दीया.

(अवरिसाबा - ११/२००१/३६)

दुनिया के इसादका ज़म्मेदार मजहब नहीं :-

ईस वक्त दुनियामें जे ईन्कलाब आया हुवा है उस्को कीसी उन्वानसे बयान कीया जये वो ये है के ईन्सान का रूप पैर से शर की तरफ मुड गया है. सारी ताकते है लेकिन उस्की मंजीब गलत हो गई. वो चल रहा है चलना हरगीज बंध नली हुवा है. बल्के पलेले चलता था, डीर दौडने लगा और अब उडने लगा लेकिन जस तरफ उड रहा है वो शर की मंजीब है. ईन्सानियत और ईन्सानोकी बरबाद करनेकी मंजीब है.

सबने नामवरी में ओलदा और दुकुमत की कुर्सी लांसिल करने में अपना सबकुछ दाव पर लगा दीया है. ईन्सानियत की तमाम खुबीयां दाव पर लगा रज्भी है. तमाम तलेजीब दाव पर लगा रज्भी है.

दुनियाके इसादका ज़म्मेदार मजहब नहीं है. दुनिया का इसाद ये नहीं है के मजहब -मजहब से लड रहा है. मजहब का मजहबसे लडनेका दौर सदीयों पलेले अत्म हुवा.

आल बिचारे मजहब को कौन मौका देता है के वो मैदानमें आये. आल गैर मजहबी ईन्सान गैर मजहबी ईन्सानसे लड रहा है. आल

उवस उवससे टकरा रही है. आज शैतान शैतानसे टकरा रहा है. आज
 ईकितदार (सत्ता) ईकितदारसे टकरा रहा है. आज माल मालसे टकरा रहा
 है. आज उकुमत उकुमतसे लड़ रही है. आज पार्टी पार्टीसे लड़ रही है.
 मजहबका उससे कोई तअल्लुक नहीं. (इ. भौ. अलीमीयां नदवी (२.अ.))

शरीअत की ताजेदारी :-

आपस के ईफ्तिलाक, लडाई, ऊधडे में रसुले अकरम (स.अ.व.)
 के ईस्वे से मुंछ डेरना (लटना) कीसी मुसलमान का काम नहीं.

उरुर (स.अ.व.) से ईस्वा कराना आपके उमाने के साथ पास
 नहीं बल्के आपकी वक़ात के बाद आपकी शरीअत. अईम्मअे मुजतलेदीन.
 उल्मा, कुक़डा, और मुक़्तीर्यों की तरक़ इरुअ करना लकीकत में आपकी तरक़
 इरुअ करना है. क्युं के जे अलकाम और मसाईल कुआन मजहद और
 लदीसे रसुल (स.अ.व.) मे साक़ लक़ओ में मौनुद नहीं वो कुआन -
 लदीस ली से निकाले जाते है. ईस लीये उन्की ईताअंत कुआन और रसुल
 (स.अ.व.) ली की ईताअत है.

कुआन व लदीससे निकाले गये मसाईल और इतावाका ईन्कार
 करनेवाला या शरई ईस्वा न याइनेवाला क़ासिक और सभ्त गुनालगारहै.

मुसलमानों को यालीये के अपने तमाम मुकदमात, ईफ्तिलाक और
 ऊधडें याडे निकाल, तलाक से मुतअल्लीक लो या नमीन और जयदाद से
 लो तमाम मसाईल में कुआन और सुन्नत की तरक़ इरुअ करना यालीये.
 बाऊ आदमी अपनी वा ईल्मी और जलालत की बीना पर डेड देते है के
 उस्मे शरीअतका क्या दमल ?

और अपने मामलात की शरीअतकी रोशनी में लवल करने के बजाये
 अवाम और पंचायतकी तरक़ इरुअ करते है. या अदालत और क्येरी की
 तरक़ जाते है. ये जलालतकी बात है. क्युं के शरीअत और ईस्लाम सिई
 नमाऊ पढने और पढानेका नाम नहीं. बल्के अेक मुकम्मल निज़ाम और
 हस्तुरे लयात है और तमाम मसाईल का लवल शरीअतमें मौनुद है.

ईसलीये मुसलमानों को यालीये के अपने मामलात लवल करने के
 लीये शरई पंचायत और उल्मा और कुक़डा और मुक़्तीर्यों की तरक़ इरुअ
 करे.

(मजाहिरे उलुम - ८/१८८७/१०)

घरों में इसाह :-

भौजूदा दौर में रेडीयो, टी.वी., वीडियो, डीस, अन्टेना और झिल्लों की वजह से रहने सड़ने में बड़ी तोडफोड हो रही है और बड़ी भराबीयां पैदा हो रही है. इन भराबीयों में से एक बड़ी भराबी बीवी का शोहर की नाइरमानी करना, उसके साथ जवान धराजी करना, उसके लक पुरी तरह अदा न करना, शोहरकी नाराजगीको मामुली समझकर अलमियत न देना, दर दीन नई इरमाईश करना, शोहरको अपनी मरजुके मुताबिक चलाना, अपनी मरजु पर न चले तो मुप्तवीइ तरीकों से तंग करना, पुद्दअच्छा भा लेना और शोहरके भानेका कोई अलतिमाम न करना, बर्यों के अच्छे कपड़ों और भाने के लीये लडना, शोहर कुछ कले तो उस पर धरके कामों और बर्यों की देभलाव और बर्योंकी वजहसे रात में बार बार जगनेका अलसान जताना, और ये ता'ना देना के तुम अक दीन धर और बर्यों को संलाव के दीभाओ तो पता चले.....!

ईस तरहका भरताव और भातें आम तौर पर औरतें अपने शोहरों से केडती है, ईर शोहर का जू घरमें नही लगता और अपने लीये धरसे बाहर कोई पनाह लेनेकी जगा तलाश कर लेता है. या अपना जयादा वक्त दोस्तों और रिशतेदारों में गुजरता है.

आज कल अकसर घरों में औरत लाकिम बन चुकी है और मर्द धर में जे चाले वो नही छोता. बीवी जे चाले वो ली छोता है. ईर धरका तमाम निजाम और सुकुन दरलम भरलम होजाता है. अगर मामला जयादा बिगडे तो तलाक या दुसरी शादी की नौबत आती है. अगर तलाक हो जये तो बीवी बर्योंकी जूँदगी भरबाह हो जाती है और दुसरी शादी करे तो बीवी की जूँदगी कडवी होजाती है और घरमें उसकी कोई अलमियत नही रेडती ऐसी औरत सिवाय अइसोसके कुछ नही कर सकती. ऐसे लावात रोजभरोज होते रेडते है जूसकी वजह से बलहतसे धर उन्ड रहे है.

ईस्का ईलाज सिई ये है के ईस्वामने औरतों पर शोहरों के जे लुकुक भयान किये है. ये उन्को बताये जये के शोहरके लक अदा न करने की

वज्र से बीवी का दुनिया और आभिरत में क्या नुकसान होता है? शायद उसको पढ़कर बाऊ औरतों को अकल आ जये और उनका घर तबाही और बरबादी से बच जये. कुरसद का वक्त निकाल कर मुस्विम पति पत्नि, मुसलमान बीवी, और तोड़कअे ज्वातीन, जैसी किताबों का मुतावा करना याहीये और उस पर अमल करके हीन दुनिया की काम्याबी लासिल करना याहीये. (तांमीरुलयात-२५-जन्नु./२००३/२६)

सुलह - सझाई :-

याद रभीये ! हर जघडे का अंजम सुलह-सझाई के सिवा कुछ नही. कोई जघडा मुस्तकीव नही चल सकता. न पेहले जैसा मुस्तकीव जेशोभरोश बाकी रहता है. जब दोनों बरबाद हो जते है तब सुलह करते है. थक डार कर सुलह करते है. सुलह के सिवा कोई यारा नही होता. आज न करे कल करे. सुलह करनी ही पडती है और सुलह जब ही होती है जब दोनों सुलह के लीये संज्जदा हो और लकीकत में सुलह करना चाहते भी हो.

ईसी तरह सुलह की अेक जुन्याही सझ्याई ये भी है के कोई सुलह ईसार (हमदई) के बगैर नही हो सकती. कोई सुलह दोनों इरीकों (पाटी) के मुतावीबों को मुकम्मल तस्वीम करने की जुन्याद पर नही हो सकती, हर अेक को कुछ न कुछ छोडना पडता है. ईसार से काम लेना पडता है और ये ईसार और कुरबानी उस वक्त बलोट आसान हो जती है. जब दोनों तरफसे जुबुस के साथ सुलह का ईरादा हो और हर किमत पर सुलह करने का पुरा ईरादा हो.

और ये सुलह कुरबानी के जजबे के साथ ही हो सकती है. न के अपने को आगे बढ़ाने के जजबे के साथ.

अेक मुसलमान को दुसरे मुसलमान का हमदई और लवाई याहनेवाला होना यही मोमिन की शान है.

(अलकुरकान - ५/२००१/४४)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا اَلْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(५) लइले काकिर

अहकामे कुइ :-

ईमान और कुइ में कोई लगाव और तअल्लुक नही। यानी आदमी या मुसलमान डोगा या काकिर, तीसरी कोई सुरत नही के न मुसलमान हो न काकिर.

निइक ये है के ईन्सान जमानसे ईस्वामका दावा करें और दीवमें ईस्वामसे ईन्कार करें, ये भी ખાલીસ कुइ है बल्के सप्त ढरों का कुइ है, जैसे लोगों के वीये जलन्नमका सबसे नीये का तब्का है, कुआन मछड में ईशाद है.

बेशक मुनाईकीन दोऊअ के सबसे नीये तब्के में जयेंगे.

(सुरअे निसाअ-१४५)

लुजुर (स.अ.व.) के जमाने में कुइ जैसे बुरे लोग पैदा लुअे के उन्के बातीनी कुइ पर कुआनने बयान दीया, नीज लुजुर (स.अ.व.) ने वहीअे ईवाही और नुरे नबुव्वतसे अेक -अेक को पलेयाना और इरमा दीया के इवां-इवां शप्स मुनाईक है.

लेकिन लुजुर (स.अ.व.) के बाद कीसी जमानेमें भी कीसी ખાસ शप्स को यकीनी तौर पर मुनाईक नही कडा ज सकता.

बल्के डमारे सामने जे ईस्वामका दावा करें डम उस्को मुसलमान ही समजेंगे, जब तक उस्के कौल या इैल से कोई दरकत ईमान के ખिलाइ जलीर न हो.

हां ! जे शप्स बातीनी तौर पर ईस्वामी अकीदों में मजबुत हो मगर जलीरी आमाव में कोताही करने वाला हो उस्को अमवी मुनाईक केड सकते है, और याद रहये ये अमवी निइक कभी डकीकी निइक का सबअ भी बन सकता है, ईस वीये अपने अकीदो और आमाव का खिसाअ करता रहये और अल्लाहतआवा से डरता रहये और ईमान पर ખાત્मा डोने की इआ करता रहये और ખુदा की रडमत से डरगीज नाउम्मीद न हो, क्युं के ईमान ईसी उम्मीद और डर से बनी लुई मीवीजुवी केइयत का नाम है.

(नेअमते ईमान -७६)

मुसलमान को शसिक या काफ़ीर कहेने का वजाल :-

जे शम्स अपने मुसलमान भाई पर गुनाह और कुङ्क की बुरी तोहमत लगाता है वो लौट कर उसी पर आ पडती है.

उज्जरत अबुज्जर (रही.) लुज्जर (स.अ.व.) का ईशदि नकल इरमाते है के कोई शम्स कीसी पर गुनाह या कुङ्क की तोहमत नहीं लगाता मगर वो लौट कर उसी के उपर आ पडती है. अगर वो शम्स जोस पर तोहमत रभी गई है जे उकीकत में जैसा न हो.

(बुभारी)

उज्जरत अबु लुरैरह (रही.) लुज्जर (स.अ.व.) का ईशदि नकल इरमाते है के जब कोई शम्स अपने मुसलमान भाई को अय काफ़ीर कहेता है तो दोनों में अेक न अेक पर ये कल्मा यस्था (वागु) हो कर रहेता है.

ईस उदीस से मावुम लुवा के कीसी जैसे शम्स को काफ़ीर कहे देना जे कल्मजे तैयबह पढता है और जइरीयाते दीन को सखी मानता है और अपने को मुसलमान कहेता है. कोई मामूली बात नहीं. जोस्को काफ़ीर कहा गया अगर वो काफ़ीर नहीं है तो काफ़ीर कहेने वाले पर उसकी बात लौट आयेगी यानी वो काफ़ीर नहीं तो ये काफ़ीर होगा.

आज कल जरा सी बात में अेक दुसरे को काफ़ीर कहे दीया जाता है. जहां थोडासा मस्वक का ईप्तिवाङ्क लुवा या सियासी तौर पर कोई मुभाविकत लुई इरैन अपने मुभाविक को कुङ्क की बंहुक से दाग दीया जाता है.

(अल्वाहकी पनाह)

ईमान का दावा करने के बाद ईन्सान काफ़ीर उस वक्त होता है जब उसकी तरहीके कल्मी जाती रहे यानी दीव से ईस्वामका ईन्कार करने वाला हो जये और जइरीयाते दीन को न माने जोस्का दारोमदार ईमान पर है. और जे लगातार लुज्जर (स.अ.व.) से साबीत है.

युं के दीव का डाल अल्वाहतआवा ही जनते है ईस लीये कीसी भी ईस्वाम के दावा करने वाले को कीसी गुनाह या ખताजे ईजतेडाही (इकीरे ईस्वामीमें लुल करने की वजह से) काफ़ीर कहेना इइस्त नहीं.

अडोतसे इरकोने सारा ईमान और जन्मत अपने ही लीये मज्मुस कर रज्भी है. अपनी मुभाविक उर जमाअत को सभके सामने

કૌમર્ષે જીંદગી પૈદા કરનેકા સબબ બન જતા હૈ. કીસીને દુરસ્ત કહા હૈ.

رَجُلٌ "ذُو هَمِّةٍ يُحْيِي الْأُمَّةَ"

દીનમ્મૈ ખવાસકી યહી અહમિયત હૈ જીસ્કી બીના પર રસુલે અકરમ ને મક્કા મૈં યે દુઆ ફરમાઈ :

اللَّهُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِأَخِي الْمُتَمَرِّقِ

ઈસ્લામકે શુરૂ ઝમાનેમ્મૈ મક્કામ્મૈ દો બહોત ઝયાદા ઝહીન આદમી થે.

ઉમર બિન ખત્તાબ ઓર અમ્ર બિન હિશામ (અબુ જહલ) હુજુર

(સ.અ.વ.) ને ઈન્હી કે બારે મ્મૈ દુઆ ફરમાઈ. ઈસ દુઆસે અંદાઝા હોતા

હૈ કે આ'લા ઝહન કી દીન મ્મૈ કીન્ની ઝયાદા અહમિયત હૈ.

દીલોં કો ફત્હ કરને કા રાઝ :-

૧૨. સદી. કે મશહુર સુફી બુઝુર્ગ હઝરત ખ્વાજા મુઈનુદ્દીન ચિશ્તી અજમેરી (૨.અ.) કે બારેમ્મૈ તારીખ બતાતી હૈ કે ખ્વાજા સાહબ જબ અફઘાન સે હિંદુસ્તાન આયે તો ઉસ વક્ત રાજસ્થાન મ્મૈ જહાં આપને કિયામ ફરમાયા થા વહાં પૃથ્વીરાજ કી હુકુમત થી. જબ ઉસ્ને આપકા ચર્ચા સુના તો વો આપકો સતાને ઓર પરેશાન કરને કે દર પે હો ગયા. આપકો તકલી ફેં પહુંચાઈ. મગર આપને ઉન હરકતોં કો બુરા નહી માના. ઓર ઉસસે ટકરાવ કી રાહ ઈખ્તિયાર નહી કી બલ્કે દઅવત કે કામ મ્મૈ લગે રહે ઓર લોગોં કે દીલોં કો ફત્હ કરને કા સિલસીલા જરી રખા યહાં તક કે પૃથ્વીરાજ ભી ખ્વાજા અજમેરી (૨.અ.) કે અકીદતમંદો મ્મૈ દાખીલ હો ગયા.

યહી તરીકા બિલકુલ દુરસ્ત હૈ. ખ્વાજા અજમેરી (૨.અ.) ને કામ કા જો તરીકા ઈખ્તિયાર કીયા બેશક વો હી તરીકા આજ ભી ઝયાદા મુફીદ ઓર ફાયદામંદ હૈ.

લેકીન અજબ બાત હૈ કે મૌબુદા મુસલમાન ખ્વાજા અજમેરી (૨.અ.) કા તો જબરદસ્ત એઅતિરાફ (ઈકરાર) કરતે હૈ લેકીન આજ અગર કોઈ શખ્સ હઝરત ખ્વાજા સાહબકે તરીકે કો મૌબુદા હાલાતમ્મૈ ઝીંદા કરના ચાહે તો ઉસ્કે ઉપર બનાવટી ઈલ્જામ લગાકર ઉસ્કો બદનામ કરને કી કોશીષ કરેગેં .

ખુદા પરસ્તી નહી :-

એક મુસલમાન શાઈર ને અપને નઅતિયા કલામ સે હાજેરીન

की तवाबुअ की. उन्हो अेक शेअर पढा. उस्में बताया गया था के अलद और अलमद दौनो अेक हे. ये सिई मीम का पर्दा हे. अुस्की वजल से दौनों अलग अलग दीआई देते हे. जब लशर बरपा डोगा और लकीकते पुवेगी तो ये पर्दा डट जायेगा और झीर दौनों ईस तरल अेक त्रैसे डो जायेगें के उन्हो अेक दुसरेसे अलग करके देभना मुशकीव डोगा. अेक शेअर ये था.

लोग मेडशर में डेरान रेड जायेगें-पुदा कौन हे मुस्तुका कौन हे.?

ईसी तरल अेक मुसलमान मुकर्रीर का ये डाल था के जब वो तकरीर करते तो अपनी तकरीर से पहले ये जुम्बा केडते. सबका पुदा पुदा हे. " मेरा पुदा मुलंमद " ये दौनों शेअर साप्त बिदअती के मालुम डोते हे. मगर जे लोग ईस बिदअत से पाक हे. वो ईससे ली अयादा बडी बिदअत में मुबतवा हे. बिदअतीयों ने पयगंबर को पुदा का दर्ज दे रखा हे और दुसरे मुसलमानों ने अपने अकाबिर को, अेक अपने ईस अकीदे को अजाने कौल से डोडराता हे तो दुसरा अजाने डाल से.

अकसर मुसलमानों के बारेमें ये कलेना सडी डोगा के वो पुदा परस्त नडी हे. बल्के ईन्सान परस्त हे. उनमें से कोई पयगंबर को पुदाका दर्ज दीये डुअे हे और कोई गेर पयगंबर को, कोई अपने अकाबिर की अऊमतों में जोया डुवा हे, कीसी को अपने रेडनुमाओं का कद ईत्ना बडा दीआई देता हे के उस्के सामने पुदाई बुलंदीयां ली छोटी डो गई हे. कीसीका ये डाल हे के उस्को अपने जुजुर्ग ईत्ने अयादा मुकदस नजर आते हे के उन पर आलीस ईल्मी और दीनी तन्कीद करना ली कुङ्को किस्क से कम नडी. यडां तक के उन्के जिलाइ अजाने जोलना ईत्ना बडा जुर्म हे के उस्के बाद आदमी का ज्ञान, माल और आबइ सब उन्के लीये मबाड (जईज) डो जाये. लोग कीन कीन बडाईयों में गुम हे. मगर जब कयामत आयेगी तो मालुम डोगा के यडां अेक पुदाके सिवा कीसीको कोई बडाई डालिव न थी. उपर का शेअर कीसी कदर तब्दीवी के साथ युं दुरुस्त हे.

लोग मेडशरमें डेरान रेड जायेगें -

के थी बात क्या डमने समज था क्या.

(अलरिसाला - ११/२००१/४८)

ईबत की साबुक :-

ढोके कौसरके बयान में अके वरजा जैऊ वाकीआ भीवता है. जे उम्मतके बिदअती मुसलमानों के वीये नसीहत और ईबतका ताजीयाना है.

डुजुर (स.अ.व.) ईशादि इरमाते है के जबरदार रडो ! क्यामत के दीन में तुम से पहले डौजे कौसर पर पडुंया डुवा डुंगा. और तुम्हारी कसरत की (जयादा डोने की) वजह से दुसरी उम्मती पर इफ्र कइंगा.

जबरदार ! उस वक्त मुजको इस्वा न करना. उस वक्त सप्त प्यास में मेरी उम्मत के लोग मेरे पास आयेगे. उनमें से कुछ लोगो को मैं छुडाउंगा. और कुछ लोग मुजसे दुर कीये जयेगे (इरिशते उनडे डौजे कौसर पर आने नही देगे बल्के धक्के दे कर दुर कर रहे लोगे.) मैं कडुंगा अथ परवरदिगार ! ये तो मेरे लोग (उम्मती) है, अल्लाह तआला इरमायेगे

अथ नबी (स.अ.व.) आपके बाद इन लोगोंने दीनमें नये नये तरीके ईजाद कर वीये थे. जब में ये बात सुनुंगा तो मैं भी उनडे दुर कइंगा और कडुंगा दुर डो दुर डो.

(जुफारी -मुस्लिम) (इराभीने रसुल (स.अ.व.) ७६)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(८) ईस्लामी निकाह

निकाह करना आधा दीन है :-

उज्जरत अनस (रही.) इरमाते है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमायाके बंदाने जब निकाह किया तो उसने आधे दीन पर अमल कर लीया. अस ! उसको यादीये के वो आधे दीन में अल्लाह से उरे.

(मिशकान-२/८३०)

मौबुदा जमानेके मुसलमान निकाह के मामले में आधे दीनकी उद तक दीनदार है. बाकी आधे दीन के मामलेंमें वो भुदा का भौड़ न होने की वजह से बे दीन बने हुआ है. अक बुरी और नफरत के काबिल थीक कुल्लुल अर्या है. जे शादी के मौके पर रिवाजमें जरूरी बन गठ है. इन गलत रस्मोंने बेशुमार जानदानोंको समाज अजाबमें मुब्तला कर दीया है.

ईस्लामी निकाह सिर्फ मर्द - औरत के ईजब और कुबुल से हो जाता है. शर्त ये है के निकाह का खेवान किया गया हो और जरूरी मेहर अदा कर दीया गया हो. ईस्लाम में निकाह और शादी का मामला बडोत जयादा सादा और आसान है.

मगर मौबुदा जमाने में मुस्लिम शादीयों में जैसे बुरे रिवाज शामिल हो गये है के उसके नतीजे में निकाह की सादगी धुमधाम और नुमाईश में तब्दील हो गठ और ईस धुमधाम और नुमाईश को कायम रखने के लीये लोग माल में लुंटे जाते है. जयदादे बेच देते है. सुदी कर्ज की लअनत में ईस जाते है. अक दीन की धुमधाम के खातिर वो अपनी पुरी छंदगी को बरबाद कर लेते है.

निकाह तो सादा और बे अर्थ होना यादीये. वो जैसा ही होना यादीये जैसा के नमाज का वक्त आया और आदमी ने मश्हद में जाकर नमाज पढ ली.

उज्जरत आयशा (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

बेशक सबसे जयादा बरकतवाला निकाह वो है जे सबसे जयादा उल्का और कम अर्थ हो.

सलाबा (रही.) का तरीका लंमेशा यही रहा. यहाँ तक के जे
मालदार थे. उन्हींने भी लंमेशा सादा और बेभर्य अंदाजमें निकाह किया.

लजरत अब्दुर्रहमान बीन औक (रही.) मालदार सलाबी थे.
उन्हीं ने मदीना में अक जातुन से निकाह किया. अक रोज लुजुर
(स.अ.व.) की मन्जलीस में आये तो उनके कपडे पर फुशुका असर था.
लुजुर (स.अ.व.) ने यमानी जवान में इरमाया “मलयम” यानी क्या
बात है? उन्हींने कहा :

या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) मैंने अक औरत से निकाह कर लीया है.

(मस्नदे अहमद - १/३८०)

ईस वाकेआसे मालुम हुवा के लजरत अब्दुर्रहमान बीन औक
(रही.) अगरये मदीना में थे मगर उन्हींने अपने निकाह में धुमधाम
वाली कोर्त तकरीब नही की. यहाँ तक के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) को और
आपके करीबी सलाबा (रही.) को भी शाहीकी तकरीब में दखवत नही
दी. सादा तौर पर निकाह कर लीया और छंदगी गुजरने लगे.

आज शाहीयो में जलोत जयादा गलत रस्मो रिवाज जारी हो
गये है मगर उनके खिलाफ कोर्त उठने वाला नही. यहाँ तक के जे लोग
जलीर में उसके खिलाफ बोवते है. वो भी ईस ज़िलवाना धुमधाम में
शरीक हो जाते है. जब के धुमधाम उनकी औलाद या उनके अपने लोगोकी
तरफसे हो.

निकाह की दीनी अहमीयत :-

आम तौर पर मशहुर है के रसुले अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया

النِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِي فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي

निकाह मेरी सुन्नतसे है. बस! जे शरूस मेरी सुन्नतसे मुंड हैरे
तो मुजसे नही. युं पुरा जुम्वा ईस सुरतमें लदीस नही है.

ईब्नेमाज (किताबुन्निकाह) की रिवायत के मुताबिक लदीस के
असल अल्फ़ाज सिर्फ़ ये है : النِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِي

अलबत्ता अक और रिवायत में बाकी अल्फ़ाज आये है. अक
तइसीवी रिवायत में आया है. तीन सलाबी (रही.) ने आप (स.अ.व.)
की ईबादत के बारे में लजरत आयशा (रही.) से पुछा लजरत आयशा

(रही.) ने आप (स.अ.व.) की ईबादत के बारे में जे बताया वो उन्हे कम दिभाई दीया. उन्हो ने कला डम रसुले अकरम (स.अ.व.) के बराबर नही ईस वीये डमें जयादा अमल करना थालीये थुंनाने उन्सेसे अक ने कला में सारी रात नमाज पढ़ुंगा, हुसरेने कला में लंमेशा रोजे रभुंगा, तीसरे ने कला में लंमेशा के वीये अज्दवाज्ज (निकाह वाली) खंडगी को छोड हुंगा. रसुले अकरम (स.अ.व.) को ईस्का ईल्म डुवा तो आप (स.अ.व.) ने इरमाया भुदाकी कसम में आप लोगोंसे जयादा अल्लाह से डरता हुं. बेकीन में रोजा रभता हुं और नही भी रभता. नमाज भी पढता हुं और सोता भी हुं. और औरतों से अज्दवाज्ज तअल्लुक भी कायम करता हुं. बस ! जे शप्स मेरी सुन्नत से मुंल डेरे वो मुजसे नही.

(इन्तुलबारी - ८/६)

उपर की बात से ये बात साइं मालुम लोती है के उदीस में 'فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سِتِّي فليس مِنِّي' का तअल्लुक तमाम शरई आमाव से है. न के पास तौर पर निकाहसे - हुसरी बात ये है के ईस उदीस का तअल्लुक सादा तौर पर सिई निकाह करने से नही है. बल्के अकीदे के तौर पर निकाह को छोडने के काबिल समज्ने से है.

असल ये है के निकाह की खेसियत नमाज की तरल कीसी लाजमी इरीजे की नही. यानी औसा नही है के जे शप्स निकाह न करे वो नमाज छोडने वाले की तरल गुनाहगार हो जये. या उस्का ईमान मुकम्मल न हो. ईस मामले में असल मतलुब थीज पाक दामन खंडगी है. न के डर डालमें और लाजमी तौर पर निकाह करना. कोई जमाअत अगर निकाह का तरीका छोड देतो ये यकीनन हुइस्त न लोगा. क्युं के औसी सुरत में नसल बाकी रेलना अतरे में पड जयेगा. बेकीन अगर ईन्हेराही तौर पर कोई शप्स अपने डालातके अतिबार से निकाह न करनेका इस्वा करे तो औसा करना उस्के वीये जईज लोगा शर्त ये है के वो अपनी पाक दामनी को मेडकुज रभे.

तारीख में बडोत सी दीनी शप्सीयते पाई जाती है. उन्हों ने निकाह नही कीया और पुरी खंडगी बगैर शादी के गुजर दी. पयगंबरों में डजरत ईसा (अव.) की मिसाल है. उम्मते मुहम्मदी (स.अ.व.) में

भी कर्ष जैसे मुत्ताज बुजुर्ग पाये जाते हैं जिनमें तमाम उम्र निकाह नहीं किया। मिसाल के तौर पर हमाम नववी (२.अ.) वक़ात ६७६ ह्री.) और हमाम तैयमियह (वक़ात - ७२८ ह्री.) हसी तरह मौबुदा अमानेमें सैयद ज़मालुद्दीन अक़गानी. वगैरह

अगर निकाह मुत्वक़ तौर पर मतलुब होता और निकाह न करना गोया दीन को छोड़ना होता तो ये बुजुर्गाने दीन निकाह को न छोड़ते और निकाह के बगैर ज़ंघी गुज़र कर दुनिया से न चले जाते.

किहल की अमान में निकाह (हसन विजातेही नहीं है बल्के हसन विगयरेही) है. यानी निकाह फ़ुद मतलुब नहीं है. बल्के अक़ और ज़रूरत की वजहसे मतलुब है और वो है नसब का बाकी रेलना. क्युं के मर्द और औरत के दरम्यान निकाहका तअल्लुक पैदा कीये बगैर हन्सानी नसब का बाकी रेलना मुम्कीन नहीं. हस लीये निकाह की हैसियत अक़ हन्तिमाह क़रीजे की है. लेकीन वो हर क़द पर लाज़ीम नहीं. कोर्ष क़द अगर अपनी जाती मस्वेहत की बीना पर बगैर निकाह के ज़ंघी गुज़रना चाहे तो ऐसा करना उसके लीये ज़र्ज़ लोगा. ऐसी हावत में शरीअत उससे पाक़ दामनी का तकाज़ा करेगी न के ज़बरदस्ती निकाह का.

निकाह की दीनी अहमियत की असल वजह ये है के वो नसब बाकी रफने के मक़सद को हासिल करने का ज़र्ज़ तरीका है. मर्द और औरत अगर बगैर निकाह के मीले तो उसके ज़रीये से भी हन्सानी नसब का सिलसिला ज़री रेल सकता है, मगर ये तरीका हस्वाम में बिलकुल हाराम है. हस्वाम में नसब बाकी रफना ज़रूरी है मगर निकाह की सुरत में न के बगैर निकाह के.

बाज़ जैसे आदमी हो सकते हैं जे ये मेहसुस करे के निकाह की ज़म्मेदारीयों से अपने को आज़ाद रफे तब भी वो पाक़ दामन रेलकर हन्सानों की दीनी हुन्यवी बिदमत दे सकेंगे तो जैसे लोगों के लीये निकाह न करना भी ज़र्ज़ है. बल्के बाज़ हावत में सवाब भी है.

निकाह करने से पहले :-

हज़रत ज़बीर बीन अब्दुल्लाह (२ही.) अे रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया के तुममे से कोर्ष शप्स ज़ब कीसी

औरत से निकाह का पयगाम दे तो अगर उस शप्स के वीये मुम्कीन हो तो वो उसे देखे. (ताके उससे निकाह की तरफ रगवत हो.) तो वो जरूर ऐसा करे.

उजरत मुगीरा बीन शोअबा (रही.) केहते हे के मैंने अक औरतको निकाहका पयगाम दीया. तो रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने मुजसे कहा. क्या तुमने इस औरतको देखा हे ? मैंने कहा नही. आप (स.अ.व.) ने इरमाया. इसको निकाह से पेहले देख लो. कुं के इस तरह जयादा उम्मीद हे के तुम दोनों के तअव्लुक में बराबरी पैदा होगी.

मालुम हुवाके आदमी निकाहसे पहले तो खुब सोये. इस्लाम में पराई औरतको जिन जुअकर देपना जअज नही. मगर जससे निकाह करने का इरादा हे उसको देपने की इज्जत दी गई. गोया निकाह से पहले तहकीक के वीये मना की गई उह तक जने की इज्जत हे.

आज कल निकाह से पहले वडकी को देपने के वीये अक मर्द के साथ दोस्तों की अक टोली बी साथ में आ जाती हे. जे वडकी को देपने में शरीक रेहते हे. नीज समाज रस्मों रिवाज के मुताबिक बडी रकमों का लेन देन किया जाता हे. जस्में ऊर्जा बराबर कमी बेशी को बरदाशत नही किया जाता. ये उरकते शरीअत के ખિवाइ हे और कुजुल काम हे. इस से बचना निहायत जरूरी हे.

उहीस में सिई उसी मर्द को वडकी देपने की इज्जत दी गई हे. जे उसके साथ निकाह करने का इरादा रपता हे. न के दोस्तों की टोली को.

शादी अपने जेडे को निमाने का नाम है :-

निकाह करने से पहले अपने जेडे के बारे में पुरी मालुमात हासिल करो. मगर जब निकाह हो जये तो इज्जामाल (थोडे) पर किफायत करो. इस बात को कीसीने सादा तौर पर इन अल्फाजमें कहा हे के

- निकाहसे पहले जंयो और निकाह के बाद निमानो.

कोई मर्द या औरत परइकट नही, और कोई बी मेअयारी (आ'वा हॉ की) नही. इसवीये रिश्ते से पहले तहकीक तो जरूर करना याहीये. मगर रिश्ते के बाद ये करना याहीये के अपने रईके खयात की ખुबीयों को देखा जये और कमीयों से नजर डीरा लेना याहीये.

याळे कोठ कीत्ना ली जयादा सली लो वो दुसरे को पुरे तौर पर मत्मर्धन नली कर सकेगा. दोनों को अेक दुसरे के अंहर कुछ न कुछ कीतालीयां नजर आयेगी.

अब अेक शकल ये है के दुसरे की कीतालीयों से लडकर उससे अलायदा लो जये. मगर मुश्कील ये है के अेक तअल्लुक को तोडकर जब दुसरा तअल्लुक कायम कीया जयेगा तो उसमे ली वोली या दुसरी कोठ पामी जलीर लोजयेगी. ईसी तरल अगर दुसरे रीशतेको भत्म करके तीसरा या योथा कीया जये तो उसमे ली यली मामला पेश आ सकता है. ईसलीये मुवाकिकतका तरीका ईप्तिथार करना यालीये.

हर मर्द और हर औरत में फुली ली लोती है और कोताली ली. जरूरत है के फुलीको देना जये और कोतालीयों को बरदाशत कीया जये. अमली तौर पर यली अेक मुम्कीन तरीका है उसके सिवा और कोठ तरीका ईस दुनियामें काबीले अमल नली.

शादी के सिलसीले में अकसर लडके लडकीयां अपनी आरजुओं की वजल से ये समज लेते है के दुनिया में उनके लीये कोठ मेअयारी (आ'ला हर्ण का) जेडा मौजूद है. मगर लकीकत ये है के ईस दुनिया में न कोठ बीवी मेअयारी है और न कोठ शोडर मेअयारी है. यली वजल है के अकसर पसंदवाली शादीयां दरम्यान ली में टूट जाती है. लकीकत ये है के शादी मेअयारी जेडे के लांसील करने का नाम नली है बल्के वो जेर मेअयारी जेडे के साथ निबाल (निभाव) करने का नाम है.

औरत और मर्द दोनों के लीये जंढगी कितरत का अेक किंमती तोलका है. हर औरत और हर मर्द को यालीये के वो ईस तोलके को फुशी के साथ कुबुल करे. वो जनेकी तरल जये और जब मौत आये तो वो ईस ओलसास के साथ मरे के उसने जंढगी का इरीजा अदा करनेमें अपनी तरफसे कोठ कोताली नली की.

निकाह के बाद :-

निकाह के बाद मीयां बीबी को अेक साथ रखेना याखिये ता के दोनों के लीये पाक दामन और पाकीजगी का सबभ बन सके आजकल लोग सिई दुनिया कमाने के लीये सालों साल घरवालों से दूर रखते है.

और वसअत और अस्बाब के बाबुबुद घर वालों के साथ रहने की कोशीष नही करते. जैसे लोगो और उनके घर वालों का मोबुदा किन्ने के जमाने में सप्त अतरों से जाली रहना बखोत मुशकिल है. इस वीये ज़रूरी है के निकाल के बाद मिथां बीवी की बुदाई का लंबा वक़्त न हो याहे साथ रहने के वीये कुछ तंगी बरदाश्त करना पड़े बेकीन इस मामले में ग़़लत दरगीज़ नही होनी याहीये.

हर मुसलमान याहे उस्का निकाल लुवा हो या न लुवा हो इस पर लाज़ीम है के पाक दामनी की क़िकर हर वक़त रहे. और अपने आपको उन अस्बाब से बचाये जे पाक दामनी को दागदार करने वाले है.

नीये वीपी ग़ैर बातों का ख़ेदतिमाम कीजिये.

- * हर वक़त अल्लाहतआला से उरता रहे और उसके अज़ाब का ध्यान करके इस से मेहक़ुज़ रहने की क़िकर करे.
- * बे लया बे शरम लोगों के पास ग़ैरने बेठने से परहेज़ करे.
- * अज़नबी औरतों और नव ग़ैर लडकों के साथ दरगीज़ राबेता न रहे.
- * ग़ंदी तस्वीरे और ग़ंदे मज़मीन वाले रिसालों और किताबों को अपने करीब भी न आने दे.
- * गाने बजने के केसेटो से बयकर रहे.
- * टेवीवीज़न, इंटरनेट, बे लयाई इलाने के आलमी अस्बाब है उनसे ख़ेदतियात के बग़ैर इस दौर में कोई मुत्तकी नही बन सकता.
- * बाज़ारों से गुज़रने और सफ़र के दौरान नज़रे नीची रखी ज़िये.

बीवीकी जुबी तलाश करो :-

बुज़ुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के कोई भोमीन मर्द कीसी भोमिन औरत से जुग़्ग (दुश्मनी) न रहे. अगर उसके अंदर कोई नापसंद ख़स्वत होगी तो उसी के साथ उसके अंदर कोई पसंदीदा ख़स्वत भी मौबुद होगी. इस लदीस में भोमिन मर्द औरत से मुराद भोमिन शोहर और मामिन बीवी मुराद है. (मस्नेद अलमद-२/३३८)

तिब्ब और नइसीयात का मुताला बताता है के औरत और मर्द की बनावट में बेहद बुन्यादी इर्क़ है. आम तौर पर मर्द साल बर यक़सा

(अक डालत में) रेडता है. जबके औरत पर मुप्तवीक़ क़ितरी अस्बाबसे दाम्नीवी तब्दीवीयां डोती रेडती है. ज़स्की वजह से उसकी याददाश्त को असर पहुंचता है. उसके अंदर जंजलाडट आ जाती है. अकसर वो जजभाती डो जाती है. कीसी वाकेआ को डिक्मत के साथ देपना उसके वीये मुश्कील बन जाता है. (अलरिसाला - ८/२४०१/४०)

बेहतरीन बीवी :-

नबीये करीम (स.अ.व.) से दरयाफ़्त कीया गया बेहतरीन बीवी कौन है ?

इरमाया ! वो बीवी जब शोडर उसको देप्ते तो ખुश कर दे और जब उसको कोई डुकम करे तो धताअत करे. और अपनी जन माल में ज़न भातों को शोडर पसंद नडी करता उसको न करे.

बीवी को धंस दुनिया का “रङ्किके डयात” कडा जाता है. वेकीन शरीअत में वो ‘रङ्किके आभिरत’ भी है. जे औरत धंस दुनिया में कीसी की बीवी थी वो आभिरत में भी उसकी बीवी रहेगी. निकाड का रिश्ता आभिरत में ड़ीर कायम कर दीया जयेगा.

नबीये करीम (स.अ.व.) ने अपने जवाब में बेहतरीन बीवी का जे मेअयार बयान कीया है वो कलामे नबुव्वत का कमाव है. मुप्तसर अल्काज़ ने नेक बीवी की आम ખुबीयोंको धंस तरड समेट वीया है गोया समंदरको कुंजेमें लर दीया गया. (इराभीने रसुल (स.अ.व.) २८४)

बीवी हो तो ऐसी:-

डज़रत मौलाना मोलंमद कासिम नानोतवी (२.अ.) की ओडलीया दौलतमंद बाप की नुरे नजर बल्के देवबंद के अक मालदार जमीदार की बेटी थी. बाप ने शादी में ખुब माल दीया पलेवी रात में डज़रतने इरमाया में कौन डुं ? और तुम कौन डो ?

मेरी सुनोगी या अपनी मनवाओगी? बीवी ने बेतकल्लुक अर्ज़ डिया के मैं तो आपकी कनीज़ (बादी) डुं. अपनी मनवाने का क्या सवाल ?

इरमाया के अगर ये बात है तो अपना तमाम ज़ेवर डमें दे दो. ड़ौरन डुकम की तअमील की. सुब्ड को सब ज़ेवर और सामान दाडल

उलुम के सरमाये में शरीक कर दीया. बापने हो-बारा यहा मामला कीया.
(२१७तु स्याविहात-२३३)

बीवी के साथ हमदही:-

अल्लाहतआला ने औरतों को नाजुक मिजज पैदा इरमाया है. उनकी इतरत में अल्लाहतआला ने टेडापन रभा है. जे उनके इप्तिथार की यीज नही. उनको डजरत आदम (अल.) की पसवीयों में से बिलकुल उपरकी पस्वी से पैदा इरमाया है. कोई मर्द अपनी बीवी के टेडेपन को अत्म करके उसको सीधा करना चाहे तो डरगीज सीधी नही होगी. तवाक से जुदाई हो सकती है मगर सीधी नही होगी.

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशद्वि इरमाया. उनके टेडापन को बरदाश्त करना मर्द के जम्मे जरूरी है. अल्लाहतआला ने उनको तुम्हारी ज्दगी का बेहतरीन साथी बनाया है. उनके साथ जैर ज्वाही करना, हमदही करना, उनकी जरूरतों को पुरा करना मर्दों पर लाजीम और जरूरी है. जे मर्द अपनी बीवी के टेडेपन को सुधारने के पीछे पड जाता है. उसे ज्दगी के सुकुन से या जुद बीवी से मेडरुम हो जना पडता है. ईसवीये मर्दों को धरेलु ज्दगी में निहायत सबर और बरदाश्त से काम लेनेकी जरूरत है.

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशद्वि इरमाया जे शप्स अल्लाह और आभिरत पर ईमान रभता है वो डरगीज अपने पडोशी को न सताये. और तुम औरतों के साथ नरमी और लवाई का मामला कीया करो. ईसवीये के उनको टेडी पसवीसे पैदा कीया गया है और पस्वी ली उपरवाली जयादा टेडी होती है. अगर तुम उसको सीधा करना चाओ तो उसे तोड डालोगे और अगर युं ही छोड दोगे तो लंमेशा टेडी रेल जयेगी ईसवीये उसके पीछे मत पडो. बल्के औरतों के साथ जैर ज्वाही और लवाई करते रहो.

(बुजारी शरीफ - २/७७८)

औरत का दर्जा:-

डुजुर (स.अ.व.) का ईशद्वि है के औरतों के मामले में अल्लाह से डरो और उनसे जयादती न करो.

औरत : बलैसियत मां- के हो तो इरमाया जन्त तुम्हारी मां- के कदमों

तवे हे और वालेटैन से उइ तक न कडो मां-बापका ना इरमान रडमते पुदावंदी से मेडइम रेडता है.

औरत : बडैसियत बेटी के डो तो इरमाया अस शप्सकी बेटीयां डो और वो उन्की परवरीश करे और उन्के साथ दुस्ने सुलुक करे डीर उस्का निकाल करे तो उस्का ये अमल आगमें जनेसे आड बन जयेगा.

औरत : अगर बडैसियत बडेन डो तो इरमाया अस शप्सकी दो बेलने डो वो उन्की अखी तरबियत करे तो जन्नत में एस तेरड दापिल डोगा के वो दोनों उस्के दाये बाये डोगी.

औरत : अगर बडैसियत बीवी डो तो इरमाया तुम में सभसे बेडतर वो है जे अपने घरवालों के वीये बेडतर डो.

(मजाहिरे उलुम - ६/२००२/१४)

सुसराल में ईअत :-

ईन्सान को कीस अफ्लाक और किरदार के साथ दुनिया में रेडना शाडीये घरके अंदरली और बाडर ली .

मोडंमद रकी का अेक गाना जे मशहूर है वो तमाम मां-बाप को पसंद आता है. ईस गाने को सुनकर लोगों की आंभो में आसुं आ जते है. ईस गाने में अेक बाप अपनी बेटीको शादीके बाद इप्सत करता है उस वक्त वो अपने जज्बात को जलीर करते दुअे अपनी बेटीसे ये केडता है.

— बाबुलकी दुआओं लेतीज, ज तुजको सुभी संसार मीले.

मयके की कली न याद आयें, सुसराल में ईन्ना प्यार मीले.

आम तौर पर मा-बाप उस्को बडोत पसंद करते है. मगर बेटीको सुसराल में वो प्यार नडी मीलता. डर मा-बापकी ये तमन्ना डोती है के अपनी बेटीको जे प्यार उन्डों ने अपने घर में डीया है. वोडी प्यार उसे गैर (सुसराल) के घर में ली मीले. ये इतरके पिलाइ है. ईस्का अेक सुबुत ये है के पुदयडी शेअर पसंद करनेवाले मा-बाप दुसरे घरकी बेटीको वो प्यार नडी देते. जे उसे अपने घर में शादी से पहले मीला था.

जयादा सडी बात ये है के मा-बाप अपनी बेटीको ये सीपाये के अपने मयके (पीयर) में जे मोडबत तुमको मीली थी वो पुनी रिशते

की बीना पर अपने आप मीवी थी. सुसराल में ये मोड़बबत तुमको अपने दुस्ने अमल की बीना पर मीवेगी. जे शादी शुदा लडकी ईस ईक को समजवे उसको अपने सुसराल से कभी शिकायत नही हो सकती.

दुसरा निकाह :-

अेक सालभ ने दुसरा निकाह कर लीया. उस पर उन्की पेलवी बीवी बलोट नाराज हो गई. दुसरे निकाहसे पेलवे वो अेक दीनदार भानुन मशहूर थी. मगर दुसरे निकाह के बाद उन्हो ने घर के अंदर धन्ना तुकान भरपा कीया के उन्के शोहर दीवके मरीज बन गये. मैंने भानुन को नसीहत करते दुअे कडा के मौजूदा हालात में दुसरा निकाह करना बलोट कहीन काम है. मगर आपके लीये ये दुसरा निकाह गोया अेक भुदाई धम्तिडान था ज्जस्में आप नाकाम हो गई.

यादरभीये ! जन्त का टीकट मुवाकिक हालात में दीनदार रहने पर नही मीलता बल्के वो गेर मुवाकिक हालात में दीनदारी पर मीलता है.

कुर्आन मज्जदमें ईशाद है : क्या लोग ये समजते है के वो सिई ये केडने पर छोड दीये ज्येगें के डम धमान लाये और उन्को जंया न ज्येगा. ?

(अलअन्कभुत - २-३)

असल ये है के दीनदारी की दो सुरते है. अेक है मुवाकिक हालात में दीनदारी. दुसरी दीनदारी वो है जबके हालात गेर मुवाकिक हो ज्ये. जब आदमी को अपने भडके दुअे जज्जबात पर काबुं रअजर दीनी लुकम का पाबंद बनना पडे. ईसी दुसरी सुरते डालका नाम आजमाईश है. कुर्आन मज्जद से मावुम होता है के कीसी औरत या मर्द के लीये जन्त का ईस्वा सिई उस वक्त होता है जब के उस पर आजमाईश के हालात गुजरे. मगर वो अपने आपको पुरी तरड काबुं में रभे.

जंय का लम्डा डर मुस्लिम औरत और डर मुस्लिम मर्द पर आता है और जंयका ये लम्डा अेलान के साथ नही आता. बल्के वो अेलान के बगैर आता है. जे लोग ईस लम्डे को पडैयाने और जंय में पुरे उतरे वोही काम्याब है. (अलरिसाला - ६/२००२/५)

डजरत अवी (रदी.) के सामने अेक मर्द और अेक औरत का जघडा आया आपने दोनों तरफ से अेक अेक डकम (ड्रेसल) मुकरर डरमाया औरत ने कडा के में क्ताबुल्लाड के ड्रेसले पर राख डुं. याडे मेरे मुवाडिक ड्रेसला डो या मेरे ढिलाड. मर्द ने कडा अगर डुदाई का ड्रेसला डुवा तो मुजे वो मंवर नडी. डजरत अवी (रदी.) ने डरमाया तुमने डुठ कडा. डुदा की कसम तुजको अल्लाडकी क्ताब के ड्रेसले पर राख डोना डेगा याडे वो तुडडारे मुवाडिक डो या ढिलाड.

(तडसीर ईबने कसीर-१/४८३)

चार क्स्म की डुरी औरतें :-

डजरत ईल्लास (अव.) की मुलाकात कीसी सथ्याड से डुई आपने उसको निकाड करनेका डुकम दीया लेकीन चार क्स्म की औरतों से निकाड करने को मना डरमाया.

१. उस औरतसे जे डर वक्त उमडा और नया विलासडी तलब करतीडो.
२. उस औरत से जे डर वक्त अपने डुन्यवी सामान पर डुध्र करती डो.
३. उस औरत से जे आवारा और बडकार डो.
४. उस औरत से जे शोडर की नाडरमान डो और उस पर गाविल डो.

(आदाबुस्सालेडीन - ५१)

छे क्स्म की औरतों से शाडी न करो :-

१. वो औरत जे डर वक्त रोती थिल्लाती डो. डर वक्त शिकायत उसकी जभान पर जरी डो. बनावटी बमार रेडती डो. अैसी औरत में कोई जैर व बरकत नडी.
२. वो औरत जे अपने शोडर पर अेडसान जतवाती डो के मेंने तेरे वीये ये क्िया वो कीया.
३. वो औरत जे अपने अगले शोडर या उसकी औलाड से मोडभत रभती डो.
४. वो औरत जे डर थीडको ललयाई नजरों से डेभे और शोडरको डरीड ने पर मजबुर करे.
५. वो औरत जे सुभड शाम बनाव शंगार में मशगुल रहे. और डाने के वक्त नाराज डो जये. और डुशामड के बावुडुड सबडे

साथ मीलकर जाना न जाये. जब सब भा युके तो अकेली पेट
भरले. दर थीऊमें अपना हिस्सा अलग करले.

६. वो औरत जे दर वक्त बकबक करती रहे और थोड़ी देरके लीये ली
भामोश न रहे. (अड्याउल उलुम - २/८५)

आपस में शादीयां ज्वाल की अलामत :-

उजरत उमर इरक (रही.) का वाकेआ ले के उन्हों ने अक कबीलेकी
देषा के उसके लोग अकसर दुबले और कमजोर नजर आते है. आपने
कबीले के लोगों से पुछा क्या बात है ? के तुम लोग एतने कमजोर दीपाई
देंते हो. ?

उन्हों ने जवाब दीया के अय अभीड़ल मुअमेनीन ! उसका
सबभ हमारी मा-ओं का हमारे बापों से करीब होना है यानी हमारे
कबीले के लोग बल्लोत जमाने से आपस में शादी बियाह करते है. उसकी
वजह से हमारी नस्वं कमजोर हो गई है. उजरत उमर (रही.) ने ये
सुनकर ईर्शाद इरमाया अज्जनबीयों में रिश्ता करो और शरीफ बनो. यानी
दूर दूर शादीयां करो तो तुम्हारे यहां ताकत वर औवाह पैदा होगी.

मुसलमानों में बाह के जमाने में नसब की डिफ़ाजत का जेहन
पैदा हुवा उसका ईस्लाम से कोई तअव्लुक नही था. जैसे के सादात सिई
सादात में शादीयां करने लगे. अगर ईस बातकी कोई अलमियत होती तो
रसुले अकरम (स.अ.व.) उस पर अमल इरमाते. डालांके मालुम है के
आपने मुफ्तलीक कबीलों और मुफ्तलीक नसब की औरतोंसे निकाल
कीये.

उजरत ईब्राहीम (अ.स.) और आपके सालबजादने जानदान
से बाहर शादीयां की. उकीकत ये है के नसब की डिफ़ाजत का ये तसप्पुर
सरासर कौमी तसप्पुर है. और जुठे इफ़्रकी पैदावार है. जब उकीकत
बाकी नही रहती तो आदमी जलीर की डिफ़ाजत करता है. ये दौरे ज्वाल
की अलामत है. ज्वालके दौर में जे भराबीयां पैदा होती है उन्मे से अक
ये है के लोग उकीकत के बजये जलीरी यीजों को अहम समज लेते है.
और उसकी डिफ़ाजतमें लगे जाते है.

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(९) तलाक

क्रीसी भी समाज में तलाक की जे नौबत पेश आती छे अगर देखा जये तो मालुम होगे के अक्सर तलाक देने का सबब जमाने दराजी छे. क्रीसी बात पर औरत या मर्द को गुस्सा आ गया या कोई बात उसको ना पसंद छुई और जमाने से सप्त अल्लाज नीकल गये दूसरा उसको बरदाश्त न कर सका. उसने भी सप्त बात के छे. अब तकरार की नौबत आ गई. ईसी जघडे में मर्दने के छे दीया तुम को तलाक या औरत ने के छे दीया के में तुम्हारे साथ नही रेह सकती. ईस तरफ की बातें आम तौर पर तलाक का सबब बनती छे.

कुआन मज्हद में भोमिन मर्द और भोमिन औरतों की सिकत सभ्र करनेवाले बताई छे. ईस लीये मर्द और औरत को सबर का तरीका छिपितयार करना याहीये. दोनों को अक दुसरे की ना गवार बातों को बरदाश्त करना याहीये. अगर सभ्र नही करेगें तो उनका आपस का रिश्ता टूट जयेगा और बडी बात बरदाश्त करनी पडेगी.

अगर शोहर और बीवी में कोई सप्त बात पेश आ जये तो ये सही नही छे के झौरन तलाक दे कर जुदाई करवी जये. बल्के सभ्र और बरदाश्त से काम लेते छुअे ईस मामले को छल करने की कोशीष की जये. दोनो आपसमें सुलह करवे. क्युं के सुलह का तरीका अल्लाह के नजदीक छर छालमें बेहतर छे.

तलाक देने का तरीका :-

तलाक की तीन सुरते छे.

- (१) तलाके रज्ज
- (२) तलाके बाईन
- (३) तलाके मुगल्लज्ज

जब अक शप्स अपनी बीवी को तलाक देना याछे तो शरीअत का लुकम ये छे के अथानक उसको तलाक दे कर अपने से जुदा न कर दे. बल्के उसको ये करना याहीये के पहले मलीने में छेउ से पाक छोने के बाद वो अपनी औरत से कछे के मैंने तुमको अक तलाक दीया. उसके बाद दोनों अक

मलीना तक सोचते रहे अगर दरम्यान में राय बटल गઈ तो मर्द अपने तवाक के कौलको वापस लेकर दोबारा अपनी बीवीसे तअल्लुक पैदा कर सकता है.

अगर अपने कौल को वापस नही लीया और अगले मलीने में पाकी की छालत में वो अपनी बीवी से कहेगा मैंने तुमको दूसरी बार तवाक दीया. झीर अेक मलीना तक मर्द के लीये ये मौका है के राय बटलने पर वो तवाक वापस लेकर अपनी बीवी से दोबारा तअल्लुक कायम कर सकता है. शरीअत में उसको तवाके रज्ज कडा जाता है.

शुइ के दो मलीनों में मर्द अगर अपने कौल (तवाक) को वापस न ले और तीसरा हैज आकर तीसरा मलीना शुइ हो जये तो अब तवाक हो जयेगी उसको तवाके बाईन केलते है. तवाके बाईन हो जनेके बाद दोबारा अपनी बीवी से तअल्लुक दूसरा निकाल करने से हो सकता है. और वो शोइर और बीवी बनकर अेक साथ रह सकते है.

तीसरी सुरत ये है के आदमी पहलेवी दो पाकी के दरम्यान तवाके बाईन देने के बाद तीसरे मलीने में या उसके बाद ये कहे के मैंने तुमको तवाक दीया. अैसा केलने से आपरी तवाक हो जयेगी उसको तवाके मुगल्लज्ज कडा जाता है. उसके बाद दोनों अेक दूसरे के लीये हराम हो जयेंगे.

अबअत्ता ललावा की सुरत पैदा हो जये तो दोबारा उनके दरम्यान निकाल हो सकता है.

शोइर अगर दूसरी बार तवाक देने के बाद अपनी बीवी से इब्जुअ करना न याहे तब भी उसको याहीये के औरत का हक दे कर ललाई के साथ उससे अलग हो जये.

तीसरी तवाक दे कर उसको अपने लीये हराम न करे. कुं के दो तवाक देने के बाद इब्जुअ न करने से वो निकाल से अलग हो गई. मगर शोइर के लीये दोबारा उससे निकाल करने का ईमकान बाकी रहता है और तीन तवाक देने के बाद ललावा के बगैर मर्द और औरत के दरम्यान निकाल करना हराम हो जाता है.

ईसलीये मर्द को तवाक अेक या दो देना याहीये. कुं के तवाक

अकसर जळभात में ही जाती है और गुस्सा लंमेशा बाकी नही रहता. अक मुद्दत के बाद ठंडा हो जाता है. इसलीये बात यकीनी है के जे लोग गुस्से में आकर तलाक देते है. वक्त गुजरने के बाद वो जरूर पछताते है.

(अवरिसाला - १/१९९४/३९)

गुनाह वाली तलाक :- (यानी तीन तलाक देना)

नबीये करीम (स.अ.व.) से अक जैसे शप्स के बारे में पुछा गया जसने अपनी बीवी को अकदम तीन तलाक दे दीया था.

आप (स.अ.व.) अलोल जयादा गुस्से की डालत में ठके और इरमाया क्या ? अल्लाड की किताबका मजाक उडायो जयेगा ? जब के में तुम में मौजूद हूं. (नसाई)

सप्त जरूरत के वक्त बीवी को तलाक दी जा सकती है लेकीन उस्का सली तरीका वो नही जे उपर सवाल में पुछा गया है. अक वक्त में अक जवान तीन तलाक दे देना जैसा के जालील लोग किया करते है. जैर शरई और ना पसंद अमल है. अलकामे ईलाहीका गवत ईस्तिमाल और उस्का जेल करना समज गया है. आप (स.अ.व.) के ईशदि का गजबनाक उन्वान के मेरी मौजूदगी में अल्लाड की किताब का मजाक उडायो जा रहा है ? अता रहा है के आपको ये अमल किन्ना नापसंद हुवा और उस्को अलकामे ईलाही का मजाक करार दीया.

शोडर को तीन तलाक का जे लक दीया गया उस्का मतलब डरगीज ये नही के अक ही वक्तमें उस्को ईप्तिथार कर लीया जये या अजैर सप्त जरूरत के ली ईस्तिमाल कर लीया जये. नबीये करीम (स.अ.व.) की सप्त नाराजगी का ये आलम था के अक सलाबी (रही.) ठके और अर्ज किया या रसुलुल्लाड (स.अ.व.) ईजजत डोतो उस्की गरदन उडा हूं.

जरूरत के वक्त तलाक देने का सली तरीका ये है के बीवी को याकी की डालत में (जबके उस्से याकी की डालत में सोडभत न की हो) सिई अक तलाक दी जये और अलायदगी ईप्तिथार कर ली जये. इस डालत में तीन हैज गुजर जये तो निकाल जुदबजुद अत्म हो जाता है और ईदत ली पुरी हो जाती है. अब याहे कीसी से ली निकाल करे.

(इरामीने रसुल (स.अ.व.) ३३०)

हलावा :- ऐसी औरत (जुस्को तीन तवाक दी गઈ हो) अगर अपने शोहर से होबारा निकाल करना चाहे तो हलावा करना जरूरी है. हलावा का मतलब ये होता है के अपने पड़ेले शोहर की ईदत भत्म होने के बाद कीसी दूसरे मर्द से निकाल करे और उसमे सोलभत भी हो. झीर दूसरा शोहर झेत हो जये या तवाक दे दे तो उसकी ईदत पुरी होने के बाद अपने पड़ेले शोहर से नया निकाल करे. ईस अमल के अगैर पड़ेले शोहर से निकाल दूरस्त न होगा.

हलावा कराना कोई पसंदीदा अमल या दुकम दीया गया अमल नही है. बल्के तीन तवाक दी गई औरत को अपने पड़ेले शोहर से होबारा निकाल करने का अेक जईज उल है. तीन तवाक वाली औरत को अपने पड़ेले शोहर से निकाल करने की जरूरत पेश आई या पड़ेला शोहर उसकी अपने निकाल में लाना चाहे और औरतका हलावा हो चुंका हो तो वो औरत अपने पड़ेले शोहर से निकाल कर सकती है. कुआन मज्जद का भी यही दुकम है.

जान जुमकर हलावा कराना :-

हलावा की गर्ज ईत्नी ही है जे उपर बयान की गई. बेकीन जे लोग कुआन की आयतों से भेल करते है. उन्होंने शरीयत के ईस कानून से ना जईज झायदा उठाया है के जब कीसी औरत को उसके शोहर ने तीन तवाक दी अब पछताने पर पड़ेले शोहर के वीये हलावा करने के वीये कीसी आरज्ज शोहर की बिदमत हासिल करते है. यानी औरतका दूसरे आदमी से निकाल कर देते है और दूसरे हीन उस से तवाक ले लेते है. झीर औरत की ईदत भत्म होने पर पड़ेले शोहर से निकाल कर देते है. ईस तरल तीन तवाक देनेवाले शोहरके वीये हलाव कर दी जाती है.

ईस मकड़ल और इस्वाकुन तरकीब से अगरये निकाल दूरस्त हो गया बेकीन हराम और नाजईज तरीके पर हुवा. कुं के हलावा कराने में दूसरे से जे निकाल हुवा उसमे वो निकाल मकसुद नही था जे हंमेशा के वीये हो. बल्के अपना मतलब पुरा करने के वीये अेक हीन का निकाल था. ईसी बीना पर हुजुर (स. अ. व.) हलावा करने वाले और जुस्के वीये हलावा कीया गया दोनों पर लगनत इरमाई है.

(१०) औलादकी तरबीयत

बाप की ज़म्मेदारी :-

कीसी आदमी को बेटा मीलना ये अल्लाह की बड़ी नेअमत है. कोई शम्स भुद अपने वीये अेक बेटा पैदा नही कर सकता. ये सिई अल्लाह की कुदरत है जे कीसी को बेटा जैसी कीमती चीज अता इरमाता है. कुदरत के कारभाने के सिवा कहीं और से अेक बेटे को पैदा करना मुम्कीन नही है.

आदमी को याहीये के वो ईस अज्म नेअमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करे. जब उसको औलाद मीले तो उसको अल्लाह का ईनाम समझे और ईस ईनाम की शुक्र गुजरी में वो पुरे तौर पर अल्लाह का शुक्र गुज्जर बंदा बन जये. और अपनी औलाद के वीये ली यही याहे के वो अल्लाह की ईताअत और इरमा बरदारी में ज़ंदगी गुजरे.

आदमी को याहीये वो जैसा बाप बने ज़स्की आर्षों की हंडक ये लो के उसका बेटा सही तरीके से अल्लाहवाला बन कर दुनियामें रहे. वो अल्लाहसे उरने वावा लो वो पुरी तरह अल्लाहका ईबादत गुज्जर बन जये. वो वोगोंकी ल्वाएँ याहनेवावा लो वो तमाम बडों के साथ अपने ल्वाएँ जैसा सुलुक करे. और तमाम छोटोंसे वो मामला करे जे अपनी औलाद के साथ करता है.

आमादी के नाम पर सरकशी :-

अेक सालबने कडा के आजकल के बर्ये बखोत छोंशीयार लोते है. उनडों ने मिसाल देते दुवे कडा के मेरा छे साल का लडका शाम को सायकल ले कर नीकला. अंधेरा शुइ लो चुका था. ईस वीये मैंने बर्ये से कडा के देणो संल्लकर सायकल यवाना. कोई साथ यवने को कहे तो उसके साथ मत यवे जना. बर्ये ने जवाब दीया के मैं कोई पागल हुं ? वो कोई मेरा दोस्त है? जैसा मालुम लोता है के तुम्हारे दीमाग का स्कु ढीला लो गया है.

ये वाकेआ नमुने के तौर पर ये बताता है के आज कल के जमाने में ईस तरह बडों की ईज्जत का तसप्पुर अत्म लो गया है. दूसरा ये के छे

साव के बरखेने ईस अंदाज में अपने बाप की बात का जवाब दीया. ईस से मालुम होता है के नई नसब में जे क्लयर ड्रैव रखा है वो आजादी के नाम पर सरकशी का क्लयर है.

ईन सावबने जब अपने बेटे के बारे में ये बात बताई तो उनके यखेरे पर खुशी के आसार थे. न के दर्द के आसार. गोया उनके ईस पर इफ्र था के मेरा बेटा ईत्ना जयादा जोल्ड है.

मौजूदा जमाने के मा-बाप अपने बेटे की मडोब्बत में ईत्ना जयादा गीरइतार हो चुंके है के ईन्हें अपने बेटे की दर बात अखरी लगती है. लावांके अगर ये ही बात उनके बेटे के सीवा कोई और कले तो वो झीरन गुस्सा हो कर उससे लडने के वीये तैयार हो जअंगे. ये बेटे की मडोब्बत नही है बल्के वो बेटे के साथ दुश्मनी है. ये बेटे के मिज्ज को बीगाडना है.

बरखा जब बडा हो कर बाहर की दुनियामें जयेगा तो कोई दुसरा शप्स उसकी ईस कीस्मकी बातों को बरदाश्त नही कर सकता. उस वक्त या तो उसको मुनाईक बनना पडेगा या वो लोगों से लड कर अपने आपको बरबाद कर वेगा.

औलाद की ईस्वाह के वीये दुआ करना :-

औलाद की ईस्वाह के वीये जयादा कारगर अमल ये है के वालेंटैन उनकी दीनी ईस्वाह के वीये दुआ का अेलतिमाम करे. अइसोस है के ईस आसान तदबीर से आजकल गइलत आम होती ज रही है. और ईस बुरे अंजम का मुशाहिदा खुद वालेंटैन करते रेहते है.

अरछे नाम :-

बरखों के नाम जैसे रभने याहीये के वो बंटे की शान के पिवाइ न हो. नामसे ईन्सान के दीन व ईमान और अकीदा जहीर होता है. ईस वीये जैसे नाम रभना भी जईज नही जे ईस्वाम के अकीदे के पिवाइ हो. जैसे नाम भी नही रभना याहीये छससे तकब्बुर और गुडर और बडाई जहीर होती है. लुजुर (स.अ.व.) ने ईस तरड के नाम बदल दीये. डजरत जयनब बिनते अबु सल्मा (र.दी.) इरमाती है के

भेरा नाम “बरि” (नेक) था. आप (स.अ.व.) ने इरमाया- अपनी बडाई मत करो. तुममे जे नेक है अल्वाड उसे जुब जनता है. आप (स.अ.व.)से पुछा गया के ईर क्या नाम रखा जाये ? इरमाया - जयनब रणो.

(मुस्लिम शरीफ)

ईन्सान की जमान से अच्छा या बुरा जे लइल ली निकलता है मुजातब पर अपना असर डालता है. अच्छे लइल से जुशी और मुसरत होती है और बुरे लइल से उस्को तकलीफ होती है. यही डाल अच्छे और बुरे नाम का है. जइसे अच्छे नाम के साथ अच्छी रिवायत और तारीफ वाबस्ता हो और जइसे मतलब पसंदीदा हो तो उस पर उस्का अच्छा असर पडता है. और जिन नामों का मतलब नापसंदीदा हो और जिन नामों के साथ बदनामी और इस्वाई चिपक गई हो उस्की सुनकर मुजातब पर बुरा असर पडता है.

दुखुर (स.अ.व.) ने ली नामों से असर कुबुल इरमाया है, अच्छे नामों से अच्छी तवक्कुअ (उम्मीद) काईम की है और बुरे नामोंसे बुरे नतीजों का फतरा जहरीर इरमाया है.

ईन्सान जुदली अपने नामका असर लेता है. जइस नामसें लंमेशां याद कीया जाता है उस्का उस्के जेहन और मिजज पर गेहरा असर पडता है. ईसवीये ये केडना गलत न लोगा के बुरे और लवे नाम अपना असर रफते है. और ईन्सान ईन असरोंको कुबुल करता है. ईसवीये जैसे नाम नही रफना चाहीये जइस्का मतलब पसंदीदा न हो. डजरत आयशा (रही.) इरमाती है के नबीये करीम (स.अ.व.) बुरे नामों को बदल दीया करते थे.

(तिर्मीजी)

ईमाम तिबरी (र.अ.) इरमाते है के न तो ऐसा नाम रफना चाहीये जइस्का माअना बुरा हो और न ऐसा नाम जइसे आदमीकी बडाई जहरीर हो. ईस तरड वो नाम ली नही रफना चाहीये जइसे गाबी गवोच का मतलब हो.

आजकल नाम कली तो शरीअतकी नजरसे बिलकुल गलत होते है और कली नापसंद. आज मरतबा बिलकुल जे माअना नाम रफे जाते है. डहीसमें जिन आदमकी ताबीम दी गई है अगर उन्का प्याल रखा

जय्ये तो ँन ढराढीयोसे ढया ञ सकता है.

ढरयो के लीये ढेहतरीन तोहडा :-

जे लीग ञयादा तरक्की ढासलव न कर सके वो अकसर ँस अेढसास में मुढतवा रेढते है के वो कया करे ? के ँन्के ढर्ये ँस तंगी में मुढतवा न ढो ञरमें ढुद मुढतवा ढुअे. ँस अेढसासकी वढलसे वो अेक अैसी छवांग लगा देते है जे नतीजे के अेअतेढार से ँन्के लीये ँल्टी साढलत ढोती है. ये तरीका सढी नढी है. अैसे लीगों के लीये सढी ढात ये है के अढने लीये कअानत (संतोष) और ढरयो के लीये तरक्की ढसंद करे. यानी ढावातके अेअतिढार से आढ रीजगार की ञस काढ्याढी तक ढढोंये है ँस ढर कनाअत करते ढुअे ञंदगी गुजरे और ँस ढाढले को ढरयो ढर छीउ दे वो दूनिया में अढनी ढेढनत के ञरीये तरक्की ढासलव करे.

ँन छीटे ढरयो को अढने मुस्तकढील के ढारे में कुछ ढालुढ नढी. ँस्के ढारे में ँन्के ढडों को ँन्के मुस्तकढील के ढारेमें सोयना और ईस्वा करना है. ये ढर्ये ढुद अढने मुस्तकढील के ढारेमें सोय नढी सकते. ये ँन्के ढडोंकी ञढेढारी है के वो अढने मुस्तकढीलके ढारेमें ली सोये और ढरयोके मुस्तकढील के ढारे में ली सोये.

ढकीकत ये है के कीसी ढाढ की तरइसे अढने ढरयोके लीये सढसे ढेढतर तोढडा ये नढी है के वो ँन्के लीये दौलत का ढेर छीउे ढल्के ढेढतर तोढडा ये है के वो ढरयोको अैसे ढावात दे सके जे ँन्डे अढल ढर ँढारने वाले ढो. ढरयोके अंदरढेढनतका ञजढा ढोना सढसे ढडा सरढाया है. न के ढाढकी तरइसे ढीवी ढुध दौलत, ढेढनत के ढगैर जे दौलत ढीले वो कोध अरुछी यीज नढी. ँस कलस्ढकी दौलत वो यीज है ञस्को ँजी ढनी (अेशवाणु यलणु) कढा ञता है और ँजी ढनी ँस्के ढाने वालेको ढायदा कढ ढढोंयाती है और नुकशान ञयादा.

अढने लीये और ढरयो के लीये:-

कढ आढदनी वाले लीगों में अकसर अेक ढलज ढाया ञता है के अढनी कढ आढदनी को कीसी न कीसी तरढ ढढाये ताके ँन्के ढरयो को ञयादा से ञयादा आराम ढील सके ये अेक गलत ढलज है.

ये मिश्रण आदमी को तरल तरल के नुकशान पड़ोयाता है. यहाँ तक के
 जिसको मीला हुआ सुकन भी दरलम बरलम हो जाता है.

सही मिश्रण ये है के आदमी आर्धन्दा तरककी के मामले को
 बर्यों पर छोड दे. जिसको जे कुछ मील रला है जिस पर वो राञ्ज रेड कर
 गुञ्जरा करने की कोशीष करे. जिसकी आमदनी अगर इतिरी तौर पर बढ
 जये तो अल्लाल का शुक्र अदा करे. लेकिन अपनी आम दनी को बढ़ाने के
 लीये जयादा हाथ पांव न मारे. जिसको याखिये के जयादा आमदनी के
 लीये अपने बर्यों को तैयार करे.

बर्योंको हीनी दृन्यवी तालीम देना. दुन्नर शीपाना छंढगी
 गुञ्जरने का सही तरीका शीपाना. ये सब अपनी औलाद के मुस्तकबील
 के लीये जिसका निशाना होना याखिये जिसको दो अलम बातों पर ध्यान
 देना याहीये. अपने लीये कनाअत, और बर्यों के लीये तरककी.

कोई शप्स पैदा होते ही दर किस्म का मादी साजो सामान पावे.
 बापकी कमाई की बुनियाद पर जिसको शुरुसे ही दर किसमकी आसानियां
 मील जये तो आम लोग जिसको अेक पुश किस्मत ईन्सान समज ते है.
 अंग्रेञ्ज में ऐसे आदमी के बारे में कला जाता है. इलां शप्स अपने मुंडमें
 यांही का यमया वे कर पैदा हुआ.

मगर तबुरबे के मुताबिक सब से जयादा मेडरुम ईन्सान वो है
 जे अपनी कम उमरी ही में अपनी पसंदीदा चीज पावे. जैसे के पुर
 कशीष बीवी. शानदार मकान, नयी कार, बैंक बेलेन्स, दोस्तों का डल्का
 मेहनत बगैर जयादा आमदनी ईज्जत और ओलदा. वगेरह.

ईज्तीदाई उम्र में आदमी जयादा गेहराई के साथ सोचने के
 काबिल नही होता. नतीजा ये होता है के वो मीली दुई चीज को काफ़ी
 समजकर बस इसीमें गुम हो जाता है. राहत और लज्जत ही को अपना
 सबकुछ समजता होता है. इीर जिसका नतीजा ये होता है के बस ! वो
 अेक मोटा ताजा पुशपोश डयवान बनकर रेड जाता है. जिसकी जेडनी
 सतल डयवानी सतल से आगे नही बढ़ती.

ईन्सान इतिरत से बे पनाड सलाहीयत लेकर पैदा होता है शुरु में
 ये सलाहीयत कय्यी होती है. उप साल के बाद ईन्सान पुप्तगी की

ढालत पर पड्योयता है. ईसी तरल ईन्सान गोया क्य्या लोढा ढोता है. ञ्स्को ढोबारा स्टील बनना है. ये तरक्की सिर्फ़ दुश्वारीयो से तय ढोती है. कठीनाईयां और ढालात के येवैन्ज के सिवा कोई दुसरी यीज ईस तरक्की तक नढी पढुंया सकती.

ईस्का मतलब ये है के ञे आढमी ञ्ढगी की शुइआत में ढी वो ढालात पावे. ञ्स्मे ञिस्को कुछ कीये ढगैर सबकुछ मील ञये वो गोया क्य्ये लोढेके ढन्में पडा ढुवा रढेगा. और ञे शप्स दुश्वारीयो. कठीनाईयो से गुनरे और येवैन्ज का सामना कर के अपनी ञ्ढगी बनाये वो क्य्ये लोढे से तरक्की करके कीमती स्टील बन ञयेगा.

अमीरी की ढालत में ईन्सान का जेढन पुर सुकुन रेढता है. ये सुकुन ढीमाग के अमल को ढेकार कर ढेता है. वो ञ्ढां है वढी. पडा रेढता है. मगर मोढताञ्च और मुसीढत जेढन के अंढर ढलयल पेढा करती है. ईस तरल सोया ढुवा ढिमाग ञग ञिठता है. ढिमागी सेल ढरकत में आढते है. ये यीज आढमी की किकरी अमल को ढढाती है. वो ईन्सान को ञयाढा सुइर (पुशी) वाला ईन्सान बना ढेती है. ञिस्का जेढन ञयाढा गेढराई के साथ सोयने लगता है. (अल रिसाला. ४-२००४-२८)

नेक लोगों की औलाढ :-

ञे शप्स नेक लोगों और उल्माअे ढीन की औलाढ में ढो वो अगर कोई ढुरा काम करता है तो उस्को आम लोगों के गुनाढोंसे ञयाढ ढडा गुनाढ ढोता है. क्युं के उससे ढडों की इस्वाई और ढढनामी ढोती है. ईसलीये नेक लोगों की औलाढ को नेक आमाव और तक्वा ईप्तियार करने की ञयाढा किकर करनी यालीये. (म-कु-६/१२)

औरतों की ञुलत :-

नई तेढजीढ का अञ्चढ इलसका ? अेक औरत अगर अपने ढरमें अपने लीये और अपने ढर्यों के लीये ढाना तैयार करती है तो ये पुराना पन है और अगर वढी औरत ढवाई ञ्ढाज में अेर ढोस्टेस ढनकर सेंकडों ईन्सानों की ढवसनाक निगाढों का निशाना ढनकर उन्की ढिढमत करती है. तो उस्का नाम आजाढी और तरक्की पसंढी है.

अगर औरत घर में रेलकर अपने मां-बाप बलेन त्वाँर्थों के लीये धरेलुं कामकाज का धन्तेजाम करे तो ये डेड और जल्लत है. बेकीन हुकानों पर सेल्स गर्ल बनकर अपनी मुस्कराहटों से ब्राह्मकों को मुतवज्जलेड करे या दक्षतरों में अइसरों की नाज बरदारी करे तो वो आजादी और अज्जल है. अज्जल गइलत है. (मजाहिरे उलुम - ६/१८८७/१८)

नवजवानों की जहहाती :-

अक तालीम याज्ञता मुसलमान से मुलाकात लुई उन्हों ने कडा के लमारी औलाहे लमारे कब्जे में (कलेने में) नली है. और यही अकसर वाल्हेन का डाल है अगरये बाज अपनी ज्बान से औसा कलेना पसंद न करेंगे क्युं के औसा कलेने में अपनी शान में कमी लोती है.

पलेले ज्माने में भानदान का मरकज उसके जुजुर्ग (बडे लोग) लुवा करते थे. ईस तरल नई नसल को ये मौका मलता था के वो अपने तनुर्भाकार सरपरस्तों से अख्ठी बातें सीभे और उन्से तरबीयत लासिल करे. बेकीन न्हीद (नये) माहौल से ये निजाम टुट गया है. आज की नई हुनिया में ये दौर आ गया है.

जस्की पेशीनगोई लहीस में धन अल्काज में आयी है. "वो अपने दोस्तकी धताअत करेगा और अपने बाप की नाइरमानी करेगा"

युनांचे आज की नयी नसल अपने दोस्तों के तरीके पर चलती है. उसके अंदर अपने वाल्हेन से सीभने का मिज्जल नही. तनुर्भेकार लोगोंसे सीभने का सिलसीला जे नसल दर नसल जरी था वो अब भत्त लो गया है. और नई नसल के लोग नाअलेल और नातनुर्भेकार लोगोंसे ज्छंदगी की तरबीयत ले रहे है. भेशक ये नये समाजकी सबसे बडी कमजोरी है.

मुसलमानो के धरो में सिई हुन्यवी बातों का माहौल है. वहां दीन की बातों का कोई यर्था नही. मर्दों को उल्माअे किराम की दीनी बातें सुनने का ज्थादा मौका मिलता है बेलाजा मर्दों को याहीअे के वो अपने धरों में उसका यर्था करें. दीनी बातोंकी तालीम लोना याहीअे. मगर आजकल धरों में ईस कीस्म का कोई माहोल नही. अब धरों मे सामाजिक बातों के यर्थे है. धरों मे पार्टीयां करना, पार्टीओ में ज्जना उन्की दीलयशपी का मशगला बन गया है. धरों में टी.वी. और मुवी टेभकर वो झीलमी लीरो और लीरोईन की और भेलाडीयों की अदाओं का यर्था करते है. कोई दीनी

आविम उनके नजदीक इस काबिल नहीं के वो उनके घरों में यर्था का मौजू (विषय) बने.

औरतों के लीये जरूरी बातें :-

उजरत अली (रही.) से मन्कुल है के मर्दों के लीये जे सिद्धतें बुरी है वो औरतों के हकमें अख्ठाईयों में शुमार होती है. जैसे के अभीवी तकब्बुरी, बुज्जदीवी के ये सब सिद्धत मर्दों के लीये जैब है. लेकिन कीसी औरतमें होना अख्ठीबात है. अभीवी की वजह से वो शोहरकी कम आमदनी में भी अख्छे इन्तिजाम के साथ भर्ष करेगी. यार जैसे हर वक्त उसके पास मौजूद होंगे. तकब्बुरी की वजह से कीसी से मुंड न लगायेगी. शोर मचाने वाली होगी जइसी वजह से बहोत से किन्तों से डिक्कालत में रहेगी. बुज्जदीवी की वजह से शरारत और बे भौड़ी और डिम्मत न होगी शोहरका भौड़ लगा रहेगा. उसकी गेर मौजूदगीमें पाक दामन और ईज्जत से रहेगी.

(आदाबुस्सावेहीन - ११)

औरतों और लडकीयों के पास आदाब :-

- ✽ मर्दों से अवाहीदा होकर चले.
- ✽ रास्तों के दरम्यान से न गुजरे बल्के किनारों पर चले. (अबुदावुद)
- ✽ याँदीके जेवरसे काम चलाना बेहतर है. बजनेवाला जेवर न पहने.
- ✽ जे औरत शान और बडाई जहरी करनेके लीये सोने के जेवर पहनेगी तो उसको ईस्की वजह से अजाब होगा. (अबुदावुद)
- ✽ औरतको अपने लोथों में मेलदी लगाते रहेना चालीये. (अबुदावुद)
- ✽ औरतकी पुरबु औसी हो जइसा रंग जहरी हो और पुरबु न आवे. यानी बहोत ही मामुवी पुरबु हो. (अबुदावुद)
- ✽ भारीक कपडा न पहनें. (अबुदावुद)
- ✽ अगर द्रुपडा भारीक हो तो उसके नीचे कपडा लगाये. (अबुदावुद)
- ✽ जे औरते मर्दोंकी शकल इप्तिहार करे उन पर अल्वाहकी लअनत हो. (बुभारी शरीफ)
- ✽ और इरमाया जुजुर (स.अ.व.) ने के हरगीज कोई ना महरम मर्द कीसी औरत के साथ तन्हाईमें न रहे और हरगीज कोई औरत सहर न करे मगर इस हाल में के उसके साथ महरम हो. (बुभारी शरीफ)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرًا اَلْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(११) पर्दा करना

बुरका सर से पांच तक बदन को छुपाने के लीये बेहतरीन थीज है. मगर अब औसा बुरका. बनने लगा है के उसपर बेवजुते बनाये छोते है जस्का मतलब ये लुवा के जे न देभे वो ली देभे. कुछतो कीसी का प्याल डमारी तरफ आये. तौबा ! तौबा ! पर्दा क्या लुवा ? नजर भीचने वाला कपडा बन गया ! और बहोत सी औरतें औसा उंचा बुरका पढेनती है के शलवार या साडी जे पींडलीयों पर छोती है. सबको नजर आती है. औसा बुरका मत पढेनो. जुब नीचा बुरका पढेनो. बहोतसी औरतें बुरका के अंदर से द्रुपट्टाका कुछ डिस्सा बाहरको बटका देती है. ये ली बुरी डरकत है. वो क्या परदा लुवा ? जस्से गैर की नजर अपनी तरफ मुतवज्जे लो. साडी अगर पढेनो तो ईत्नी नीची पढेनो के पींडलीया और टपने छुपे रहे और पुरी आस्तीन का कुर्ता या कमीज पढेन कर जे ईत्ना लंबा लो के पेट और कमर न जुवे. उपरसे साडी पढेनवो पेट और कमर का सप्त पर्दा है. अपने सगे भाई और बापसे ली ईन दोंनों को छुपाओ.

(मजाहिरे उलुम - ६/२०००/२०)

औरतकी असल दीवकशी और रअनाई (डुस्न) उस्की शरम और डया में छुपी लुई छोती है. बे शरम बेबाक (बेअडब) औरत जे डर बह नजर को दअवते नज्जरल दे और डर आगोश (आसपास) वालों की जीनत बने उस्की जुबसुरती कीसी गैरतमंद मई को अपनी तरफ रागीब (आकर्षित) कर सरती है. लेकीन सुकुने जिन नली बन सकती वो ओक भुशनुमा और भुशरंग सांप है जस्से कोई ली बेभौक नली छोता.

औरतोंको पर्दा करना जरूरी है :-

डजरत अब्दुल्लाह ईब्ने मस्ऊद (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया : औरत गोया सतर है. जब वो बाहर निकलती है तो शयतान उस्को ताकते है. और अपनी नजरोका निशाना बनाते है.

(तिमीजी)

यानी जस तरल सतर को छुपा रेडना याडीये ईस तरल औरत को घर में और पर्दे में रेडना याडीये.

जब कोई जातुन बाहर निकलती है तो शयतान ताक जक करते है. दुजुर (स.अ.व.) के ईशाह का मतलब ये है के औरतोंको जहां तक हो सके बाहर निकलना ही नही चाहीये. ताके शयतानों और उसके येलोंको शयतानीयत और शरारत का मौका ही न मीले. अगर जरूरत से निकलना हो तो ईस तरल पहें में निकले के अनंत और नुमाईश जहीर न हो.

पराई औरत को देखकर दीव गंधा हो तो :-

ईन्सान की इतरत है के कोई जाने पीने की मरगुब चीज देखे या पुशुबु ही आ जये तो उसकी ज्वालीश पैदा हो जाती है. गरमीमें सायेदार और पुशनुमा मंजर देखकर वहां ठेकरने और आराम करने को ज्ञ याहता है. ईसी तरल कीसी पराई औरत पर निगाह पडनेसे बाज मरतबा शलवत पैदा हो जाती है. जे बुरे नतीजे तक पहुंचा सकती है. या कमअकम आदमी अक किसमकी बेयेनी में मुब्तलातो हो ही जाता है. ईसवीये नइस और इल का ईवाज करनेवाले प्यारे नबी (स.अ.व.) ने उसका ईवाज भी बताया है.

उजरत जहीर (२.अ.) से रिवायत है के दुजुर (स.अ.व.) ने ईशाह इरमाया- कोई औरत शयतानकी तरल आती और जाती है और अगर कीसीको कोई औरत अच्छी लगे और उसके साथ दीवयस्पी और दीवमें उसकी ज्वालीश पैदा होजये तो उस आदमीको चाहीये के अपनी बीवीके पास जये और अपनी ज्वालीश पुरी करे. ईससे उसकी ईस गंधी ज्वालीशका ईवाज हो जयेगा.

(मुस्लिम शरीफ)

सरयों का ईमान :-

जे मजबुत ईमान रखाता है. के जहीरी लावात से असर न लेता हो चाहे जर्मन-जपान और युरोप की लडकीयां और सारे आलम की टीडीयां सामने आजये कुछ भी हो जये लेकीन कभी मगलुब न होता हो वो अपने ईमान में सरया है.

ये न कहे के लाई क्या करे ? जैसे लावात में नजर कैसे बचाये ? क्या करे घरवालों की ज्वालीश वजल से वीडियो इलम बनवा ली. गाना सुन लीया. ये कमजोर ईमान है.

अल्वाह वाले जहां भी जाते है अल्वाह वाले ही रहते है यही

जिन्के सभ्या छोने की दलीव छे के जिन्के दीव में अल्लाह छे. शेर का दोस्त लोमडी और बंदर से उरेगा ? बस! समज लीजिये ऐसे सिद्दीकी का अल्लाह के यहाँ क्या मकाम होगा ?

सिद्दीक का ईमान ईस कहर कवी और मजबुत छोता छे के ज़लीरी डालात से असर नहीं लेता. कीसी से मरउब (दबता) नहीं. लोगो से डरकर अल्लाह की मरज्ज के भिवाइ कोई काम नहीं करता. वो दोनों ज़हाँ को अल्लाह पर झीदा कर देता छे.

सहाजा (रही.) का कश्क:-

जे शप्स अपनी नजर को गेर महरमों से बचाता छे और अपने नफ्स को शेरवती से रोकता छे. और अपने बातीन को अल्लाह के मुराकबे से भरपुर रभता छे. डलाव रोज़ भाता छे, उस्की इरासत और कश्क कबी भाता नहीं करता.

जे शप्स अपनी नजर को डराम चीजों से नहीं बचाता जिस्का गुमराह नफ्स जिस्के दीव के आछने को गहवा (मेवा) कर देता छे. और नुर को मिटा देता छे.

उजरत असन बसरी (र.अ.) इरमाते छे के उजरत ज़िगर (रही.) के सामने जब कोई जुठ बोवता था तो आप झौरन पड़ेयान लेते.

अल्लामा सुबुकी (र.अ.) इरमाते छे के उजरत ज़िगर (रही.) के सामने जब कोई जुठ बोवताथा तो आप झौरन पड़ेयान लेते .

अल्लामा सुबुकी (र.अ.) ने लीजा छे के उजरत जिस्मान (रही.) के पास अेक अैसा शप्स आया ज्जुस्का रास्ते में अेक औरत से सामना हो गया और जिस्की नजर जिस औरत पर पड़ गछ. उजरत जिस्मान (रही.) ने जिससे इरमाया के तुममे से बाज लोग हमारे पास ईस डाल में आते छे के जिन्की आंभों में जिना का असर छोता छे. तो जिस शप्स ने के कछा के क्या डुजुर (स.अ.व.) के बाद ली “वडी” नाजीव छोती छे ? तो आपने इरमाया के नहीं, ये तो भोमिन की इरासत छे. उजरत जिस्मान गनी (रही.) ने जिस शप्स को अदब शिपाने की गर्ज से ईस बात को ज़लीर किया था. (तज्काने कुबरा.)

गौसुल आजम (२.अ.) का डौल :-

ईशाई इरमाया जस शप्स का ईमान मन्बुत होता है और यकीन नम जाता है वो क्रियामत के वो मामलात जन्की कुआन मज्द में अल्लाह तआला ने भबर दी है. जिनको दीव की आंभ से देपता है. वो नन्नत को और दौज्भ को देपता है. सुर और इरिशतों को जे जिस पर मुकर्रर है. वो देपता है. वो तमाम चीजों को देपता है जैसी के वो लकीकत में है.

गौसुल आजम (२.अ.) ने सिई ईमान को नही बल्के ईमान के मन्बुत हो जाने और यकीन पर नम जाने को कश्क का जरीया करार दीया है. और अंदे पर अल्लाहतआला की भास ईनायत न होतो ईमान मन्बुत क्युं कर हो सकता है?

हलावते ईमानी का नुरजा :-

अल्लाह की मोलब्बत में तकवा ईप्तिथार करने में यानी गुनाह छोडने का गम उठाने में अपनी इराम आरजूओं का भुन करने में अगरये सप्त मुज्जलीदा होता है. लेकिन विलायत और हलावते ईमानी ईसी पर मौकुइ है.

जिस्के भिलाइ अगर कोई रात भर तलज्जुद पढे और दीन भर रोजा रभे और हर साल लज्ज उमरल करे. लेकिन अगर औरतों और लडकीयों से नजर नही बघाता. गुनाहों से नही बघता. ईस ईबादत के बापुजुद ये शप्स इासिक ही रहेगा.

और अेक शप्स सिई इर्ज वाज्ज और सुन्नते मोअक्केदल. अदाकरता है. मगर अल्लाह को नाराज नही करता और नाइरमानी नही करता. नइस और शयतान को ललकारता रहेता है. जनकी बाजी लगाये रहेता है. के अगर गुनाह छोडने से मेरी जन भी यली जयेगी तो मौत को कबुल कर लुंगा. लेकिन अल्लाहतआला को नाराज नही कइंगा. ये शप्स अल्लाह का वली है.

और जे शप्स जते ज गुनाह छोड ने को तैथार नही. लेकिन मरने के बाद सब गुनाह छोड देगा. लेकिन अब जिस्का कोई अजर नही भीवेगा. क्युं के मरने के बाद कोई गुनाह कर ही नही सकता.

(१२) नेक भातुन

औरत की पुंजीया :-

कुर्आन मज्जहमें है के : और जे लोग सोना-यांटी जमा करके रपते है और उन्को अक्लाह की राहमें भय नही करते उन्को अेक हर्दनाक अजाबकी भुशभबरी दे दो. (सरअे तौबा - ३४/३५)

ये आयत कुर्आन मज्जहमें उतरि तो रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमायाके बुरा हो सोनेका और बुरा हो यांटीका. ये बात सलाभा (रही.) पर बलोट भारी लगी. खुंनाये आपसमें कडा के और कौनसा माल हम अपने पास रभे.? उजरत उमर (रही.) ने कडा के अगर तुम याहो तो मैं रसुलुल्लाह (स.अ.व.) के पास जकर उस्की बाबत दरयास्त कइं. सलाभा (रही.) ने कडा जरूर.

उस्के बाद उजरत उमर झाड़क (रही.) रसुलुल्लाह (स.अ.व.) के पास गये और इरमाया के सलाभा (रही.) पर ये बात बलोट शाक (भारी) हो रही है. वो केह रहे है के कीर हम कौनसा माल अपने पास रभे ? रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया :

हा ! तुमसे से जस शप्स को अपनाना है. वो भुदाको याद करने वाली जबांन को अपनाये और वो शुक करनेवाला हील अपनाये और अेक औसी बीवी को अपनाये जे उस्के दीनमें उस्की आभिरत के मामलेमें उस्की मदद करे. (तइसीरे - तिबरी - १०/२१/१२०)

अेक और रिवायत में रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया के क्या तुमको बताउ के बेहतरी भजाना क्या है ? उस्को आहमी अपने लीये जमा करे. बेहतरीन भजाना वो नेक औरत है के जब मर्द उस्की तरफ देभे तो वो उस्को भुश कर दे. और जब वो उसे कोई बात कहे तो वो उसकी तामील (अमल) करे. अब जब वो घरमें मौजूद न हो नइस और माल में उस्की लिझाजत करे. (तइसीर एब्ने कसीर २/३५१)

ईस उदीष में औरत को मर्द के लीये सबसे अच्छा भजाना कडा गया है. और ये बात बिलकुल दुर्रस्त है सोना और यांटी या माल सिई माही (भौतिक) जरूरत पुरा करते है. मगर अेक नेक भातुन घर को और

मानदान को पुशी और सुकुन और मखोब्वत का गेखवारा बनाती है।
नेक भातुन अपने भीठे बोल से घर में मिठाश बिभेरती है। वड अपने अच्छे अख्वाक से पुरे माखौल को ँन्सानियत का माखौल बनाती है।

औरत अपनी सवालीयत और डालातके विडाल से घरकी ँन्चार्य है। घर के ँन्तिजाम में उस्को मरकजी शप्सीयत का दर्ज डालीव डोता है। ँस वीये घरके बनने और बिगडने में उस्का रोल बेडद अडम है। अेक औरत के बनने से घर बनता है। और अेक औरतके बिगडने से घर बिगड जाता है। ँस वीये औरत को “बेडतरिन भजाना” कडा गया है।

औरत की काम्याबी का अडम काम ये है के वो घर को पुशीयों का भाग बनाये। उस्के शोडर को और घरके दुसरे अकराद को उससे पुशीका तोडका मीव रडा डो। शोडर को और घरके अकराद को ये यकीन डो के चाडे वो घर में मौबुद डो या गेर मौबुद। लंमेशा घर में उन्का जिक्र पैर ख्वाडी के साथ किया जायेगा। लंमेशा उन्को वो सुलुक मीवेगा जे उन्की दुनिया और आपिरतके वीये सबसे बेडतर डो।

औरत घरका भजाना है बल्के सबसे अच्छा भजाना। औरत घर के भागका कुल है बल्के सबसे अच्छा कुल। औरत घरकी, दुनिया की रोशनी है। जबके वो समबदार डो और अपने अेडसास के साथ दुसरों के अेडसास को ली जाने और उस्के अंदर ये मबबुत ईस्वा डो के वो डर डालमें अपने उम्दा किरदार को अदा करेगी। जे पावीक ने उस्के वीये मुकर्रर किया है। चाडे उस्के वीये सबर और बरदाश्तकी कुरबानी कुं न देनी परे।
(दीने ँन्सानियत - २१७)

रोजाना की खंडगी :-

औरत की खंडगी सुबड से शाम तक और शामसे सुबड तक डेरी डोनी चाडीये ? उस्का नकशा शरीअत में मुकम्मल तौर पर दीया गया है उस्का पुवासा यहां वीभा जाता है।

सबसे पहलेवा काम सुबडको जल्दी (सवेरे) उठना है। जे भवातीन सुबडको जल्दी नडी उठती वो डर दीन कमअजकम अपने किंमती

दो घंटे भरबाद करती है. ये भरबाद होने वाला वक्त एक हीनमें सिर्फ़ दो घंटा होता है लेकिन अगर ईसी तरह दस साल होता रहे तो भरबाद किये गये घंटोकी मिकदार सात हजार घंटो से भी ज्यादा होजायेगी. ये तो आनदान के सिर्फ़ एक मिनट के भरबाद हुआ घंटे है. ईसी तरह तमाम आनदान के भरबाद हुआ घंटोका हिसाब किया जाये तो वो कितना ज्यादा हो जायेगा.

घरकी आतुन जब सवेरे उठे तो दूसरे भी सवेरे उठेंगे. हीर सब लोग पुजुं करके इजराकी नमाज अदा करेंगे. ईस तरह सवेरे उठना एक तरह बदनको और दूसरी तरह रूको पाक करनेका जरीया बन जायेगा. ईसी तरह सुबह सवेरे उठनेके नतीजेमें हीन भरके सारे प्रोग्राम अपने वक्त पर अंजाम पायेंगे. जइसा शुरू हुईस्त हो तो उसका अंजामभी हुईस्त होगा.

बच्चे तैयार होकर वक्त पर महरसा और स्कूलमें पहुँचेंगे. मर्द तैयार होकर वक्त पर अपने काममें लग जायेंगे. घरकी सड़ाई सुबह सवेरे हो जायेगी. बावरीयाआने (कीयन) से लेकर मार्केट तक हर चीज का निजाम ठीक तौर पर अंजाम पायेगा. घरके पुरे माहोलमें युस्ती और जम्मेदारीकी झीजा दीजाई देगी. पांच वक्त की नमाज जे हर मोमिन मर्द औरत पर इर्ज है वो सही वक्त पर अंजाम दी जाती रहेगी.

आपकी जनना याहीयेके घरका ईन्तजाम और नमाज ये दोनों अलग अलग चीजें नही है बल्के बहोत ज्यादा एक दूसरे के साथ जुडी हुई है.

कुर्आन मज्हदमें ईशाह है : यानी मेरे लीये नमाज कायम करो.

(सुरअे ताहा-१४)

ईससे मालुम हुआ के पांच वक्तकी नमाज अल्लाहके हुकमकी अदायगी है. हर वक्तकी नमाज वो जिक (अल्लाह की याद) है जइसको अदा करनेसे हीन भरके तमाम कामोंमें अल्लाहकी याद जारी रहेगी.

सुबह को सोकर उठे तो ईस अलसास के साथ उठे के निंद कैसी अच्छे नेअमत है. उसने हीन भरकी थकावट दूर कर दी. उसने नया हीन शुरू करने के लीये मुंजे दोबारा ताजा हम कर दीया. ये अलसास आपकी

जबानसे शुक्र के कवीमातकी शकलमें निकल पड़े.

ईसी तरह हीन त्वर आप जे काम करे वो सब आपको भुटाकी याद दीवानेवाला बन जये. अगर आप अपने बर्येको स्कुल लेवने के लीये तैयार कर रली है उस वक्त बर्ये को देपकर आप ये सोचे के ये ईन्सानी बर्या कैसा अज्जब नमुना है. कैसा अज्जब रलमत और अजमत वाला है. वो भुटा ज्जस्ने ईन्सानी बर्ये जैसी अज्जब चीज पैदा की. अगर बर्येको देपकर ये ओइसास नसीब हो जये तो ये सोने और चांटी के तमाम ढेरोंसे जयादा किंमती है.

आप बावरचीपाने में रोटी और सालन पका रली है आपको ये याद आया के ये घेहुं ये यावल ये सञ्जी कुदरतके कैसे अज्जब नमुने है. भुटाने जमीनकी उपरकी तेह को जरभैज (इण्ड्रुप) बनाया. उस्ने लाईड्रोजन और ओकसीजन को मिला कर हेरत अंगेज और अज्जब पानी बनाया. ईस तरह की भेशुमार किंमती चीजोंको पैदा करनेके बाद ये मुम्कीन हुवा के जमीनमें कीसी चीजका बीज डाला जये और पोहे और दरभतकी शकलमें तैयार होकर ईन्सानकी गीजाका सामान बने. जब आप भुटाकी कुदरतके ये नमुने देपकर ईस तरह सोचेंगे तो बावरचीपाना और पुरा घर आपके लीये ईबादतपाना बन जयेगा. आप सिई पांच वक्तके नमाजी न लोगे बल्के जैसे जिक करनेवाले लोगे जे तमाम हीन और तमाम रात जरी रहे.

ईशां की नमाज और घरके जरूरी कामों से इरिग होनेके बाद वो वक्त आ जाता है के आप सो जये. अब आप सोनेकी सुन्नतों पर अमल करते हुअे और कुर्आनमज्जदकी आपरी चार सुरते और आयतुव कुर्सी और तस्बीहे इतिमा पढकर अपने बिस्तर पर सो जये. जब आपने पुरा हीन नेक कामों और पाक ज्वालों में गुजरा है तो अब आपको सुकुनकी निंद आयेगी. रातका आराम करके सुब्ह को उठना आपके लीये जैसा बन जयेगा जैसा होबारा नई ताजगी लासिल हो गई हो.

(हीने ईन्सानियत - २२३)

भोमिन का घर :-

कुर्आन मज्जद में अजवाबे मुतललरात को पिताब करते हुअे

कहा गया है कि “तुम लोग अपने घरों में करार से रहो और ज़ाहलीयतका अंदाज़ धिक्कार न करो. और नमाज़ कायम करो. ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल (स.अ.व.) की धिक्कारत करो. अल्लाह तो यादता है कि तुम ओलवेजैत से आलुहगी (गंदगी) को दूर करे. और तुमको पुरी तरह पाक कर दे और तुम्हारे घरों में अल्लाहकी आयात और लिक्मतकी ज़े तालीम लोती है उसको याद रजो. बेशक अल्लाह बारीक बान है जबर रजनेवाला है. (सुरअे अलज़ाब - ३३ - ३४)

अज़वाजे रसूल (स.अ.व.) को अपने घरों में कीस तरह रेलना याहीये ये बात धिस आयात में बताई गई है. उनके घरको जिक्-नमाज़ और ज़कात व सख़ात की अदायगी का मरकज़ लोना याहीये. ज़हगीके मामलात में अल्लाह रसूलकी धिक्कारत लोनी याहीये. उनके घरोंमें कुर्आन मख़दकी तालीमका यर्था लोना याहीये उनके घरमें लिक्मत और मअरिक्तकी बातों का माखोल दीजाई देना याहीये.

रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ज़हगी ज़स तरह मुसलमानोंकी ज़हगी के लीये नमुना है. धिसी तरह आपका घर भी तमाम घरों के लीये नमुना की हैसियत रजता है. तमाम मुस्लिम मर्हों और तमाम औरतों पर लाज़ीम है कि वो अपने घरों को धिसी ज़ास नमुने पर डाले. ज़स्को रसुले अकरम (स.अ.व.) ने अपनी लयातमें कायम इरमाया है.

मुस्लिम जवातीनको अपने घरों को अमलका मरकज़ बनाना याहीये. घरके माखोलको सादा और जे तकल्लुक लोना याहीये. अरक बरक और यमक दमक वाला घर दुनियाकी याद हीलाता है. और सादा घर आभिरतकी याद हीलाता है. यमक दमक वाले घरमें मादी (भौतिक सुज)वाला जेहन बनता है.

मोमिन ज़ातुन का घर धिबादत का घर लोता है. पांय वक्त की नमाज़ रोज़ा और ज़कात की अदायगी, अल्लाह और रसूल (स.अ.व.) का यर्था कुज़ुल यीज़ोंमें मशगुल लोने के बजये दीनमें मशगुल लोना. ये वो यीज़ है जे मोमिन के घरमें साइ तौर पर नज़र आता है.

मुसलमान के घरों में ज़ुदा और रसूल (स.अ.व.) की धिक्कारत का यर्था लोता है, डर छोटे बडे मामले में ये देजा जता है कि धिस मामलेमें

अल्लाह का हुकूम क्या है और रसुल व पुद्दाकी सुन्नत क्या है ? संछाभा (रही.) की छंढगी में क्या नमुना मीवता है ? ईस तरल डीदायत वेते दुअे धरको ईमान और ईस्लामका धर बना दीया जाता है.

मोमिन का धर पाकीजगी का धर डोता है. जस तरल गुसलवानेमें नडाने से बदन पाक डोजता है. ईसी तरल मोमीनका धर डल की पाकीजगी का मरकज डोता है. उसके धरमें शराइत, ईन्सानियत, संछुदगी, उसुल पसंदी और डक बात का ईकरार करना वगैरल ईस नैसे उंये किरदार का मरकज डोता है. जे लोग ईस किसमके माडोवमें रेडते है उन्की बराबर तरककी डोती रेडती है. जैसे लोग जब दुनियासे जाते है तो आपिरतमें उन्को परवरद्विगार अपना मेडमान बनाते है.

आजकल लोग अपना धर ईस लिडाज से बनाते है के लोग उस्की तामीरी बनावटको अरखण समजे. मोमीन मई और मोमीन औरतको अपना धर ईस लिडाजसे बनाना है के वो अल्लाहतआवाकी पसंदके मुताबिक डो, इरिश्ते वहां आते डो, बरकतोंका नुजुल डो और उस्को दुनिया आपिरतकी बलाईयोंसे बर दीया जाये.

ईस आयतमें अजवाबे मुत्तलडरत को पिताब करते दुअे मुस्लिम औरतों को ये आम डिदायत दी गई है के वो अपने धरोंमें किस तरल रहे. अपने धरों को किस नमुने पर डाले. मुस्लिम जवातीनको अपने धरोंमें किस तरल रेडना याडीये ? दुनियादार औरतों की तरल जेबो जिनत की नुमाईश का तरीका उन्हे ईप्तिधार नडी करना याडीये. उन्का ध्यान ये डोना याडीये के वो अल्लाह की ईबादत गुजर बनजाये. वो अपने मावको पुद्दाके वीये जर्थ करे. छंढगीके मामलोंमें अल्लाह और रसुल (स.अ.व.) के अडकामकी पेरवी करे. वो अल्लाह और रसुल (स.अ.व.) की बातोंको सुनने और समजनेमें अपना वक्त गुजारे. छंढगी गुजरनेका ये तर्ज बंदोको पाक बाज बनाता है और पाक बाज बंदे डी अल्लाहतआवाकी पसंद है. (दीने ईन्सानियत - २२७)

तीन मरहले (गंभीरे) :-

अक औरत को अपनी छंढगी में तीन बडे मरलवों से गुजरना पडता है. सबसे पहले वो अपने मा-बाप के साथ लडकी की सुरत में.

है. ईस बरबादीको अगर पुरी कौम पर डेवा कर डिसाब कीया जये तो ये नुकशान ईत्ना जयादा बढ जयेगा के उस्का शुमार भी नामुन्कीम हो.

जे शप्स दुनिया के मामले में संजुदा हो उस्के पास बेकार चीजों में उलजने का वक्त नही होता. ईसी तरल जे शप्स आभिरत के मामलेमें संजुदा हो वो ऐसी चीजोंमें उलजना पसंद नही करेगा जे उस्को आभिरतके निशानेसे दूर करदे. दीवली से अमृतसर जनेवाला कोलकत्ता के रूप पर सफ़र नही करता. ईसी तरल आभिरतका मुसाफ़िर कभी उन रास्तों पर नही होउगा जे उस्को आभिरतकी मंजीबसे दूर कर देनेवाली हो.

अइसोस की नौबत :-

जे आदमी जवानीकी उम्रको गेर जरूरी चीजोंमें जो देता है तो बादमें उस्के साथ वही अदमीया (दर्दनाक अंजम) पेश आता है. जेउस्को अक शेअरमें ईस तरल नज्म कीया है.

जीस्त का राज जुवा गरदीशे अय्याम के बाद

ईस कडानीका तो आगाज था अंजम के बाद

(दीन - १ - शरीअत - १४१)

वक्त अक अजुब नेअमत :-

वक्त अल्वाउतआवाकी अता की लुई अक ऐसी दौलत है जेउस्को जुदाके सिवा दुसरा कोई लमसे छीन नही सकता और न कोई उसे थुरा सकता है. बरया हो या बुद्धा, मर्द हो या औरत. वक्तकी ये नेअमत सबको बराबर भीवती है. देहाती हो या शेखरी, अमीर हो या गरीब सबके लीये उस्का दरवाज बराबर जुवा लुवा है. गरीब को न अक मीनट कम भीवता है और न मालदार को अक मीनट जयादा भीवता है. अगर कोई वक्त बरबाद कर दे तो कोई उस्का लाथ पकडने वाला नही. मगर उस्को बरबाद करनेका जे नुकशान उठाना पडता है उस्का अंदाजा लगाना भी मुश्कील है. और कभी कभी अक लम्हे की गइलत आदमीको सालों तक पीछे कर देती है. आप वक्तकी किंमत पलेंयाने और ईस माले मुइतके सिवसीवेमें "माले मुइत दीवे बेरलम" का बरताव ईच्छितयार न करे.

(अलफ़ुरकान - ८/१८७६/४२)

अगर आप अक मिनट बरबाद न करे तो घंटा अपने आप

बरबाद होने से बच जायेगा. क्युं के मिनट मिनट के मीलनेसे घंटा बनता है. जिस आदमी ने थोड़े का प्याल रखा उसने गोया पुरे का भी प्याल रखा. क्युं के जब थोडा थोडा मीलकर जमा होता है तो वोही पुरा बन जाता है.

बड़ोतसे लोगोका डाल है के वो जयादाकी झिंकरमें कम को लुवे रेखते है. वो अपने दिमाग को “बड़ोत” की तरफ् ईत्ना लगाते है के थोड़े की तरफ्से उन्की निगाहें छट जाती है. मगर आपरी नतीजा ये होता है के उन्हे कुछ नही मीलता.

अपने मीले लुअे वक्तका अेक लम्हाभी बरबाद न कीजये. लम्होको ईस्तिमाल करके आप महीनों और सालों के मालिक बन सकते है. अगर आपने लम्हो को ખोया तो उसके बाद आप महीनों और सालोंको भी यकीनी तौरपर ખो देंगे.

अगर आप रोजाना अेक घंटा में सिई पांय मिनट ખोते है तो रात दीन के दरम्यान आपने रोजाना दो घंटे ખो दीये. महीने में ६० घंटे और साल में ७२० घंटे आपके बरबाद हो गये. ईसी तरह आदमी अपने मीले लुअे वक्तका बड़ोतसा खिरसा बेकार बरबाद कर देता है. ८० सालकी उम्र पाने वाला आदमी अपनी उम्रके ४० साल भी पुरी तरह ईस्तिमाल नही कर पाता.

वक्त आपका सबसे बडा सरमाया है. वक्तकी बरबाद होनेसे बचाईये.

कुर्आन मज्हदमें ईन्सानकी जंइगी को जमाना (Time) से तशबीह (मिसाल) दी है. जिस तरह टाईम हर लम्हा घटता रेखता है. ईसी तरह ईन्सान हर दीन अपनी जंइगीकी मुकरर मुद्दतको कम करता लुवा मौत की तरफ् बढ रहा है. हीक ईसी तरह जिस तरह बरफ् पीघलकर हर लम्हा कम होती जा रही है.

दूसरे लक्ष्ओमें हर आदमीका काउन्ट डाउन (Count down) हो रहा है. आदमी की कुल उम्र अगर तकदीर में दस लजार दीन थी तो कुल उसकी उम्र ८,८८८ दीन हो जायेगी. अगले दीन ८,८८८ हो जायेगी और उसके बाद ८,८८७ दीन. ईसी तरह आपरी दीन तक.

बुढापे में मशगुली और कमजोरी बढ जाती है :-

बाऊ लोगोंका ये भ्याव होता है के मुस्तकबीव में उन्हें छंढगीके अजेडोंसे जलासी मीव जयेगी. छम्मेदारीयों और मुशकीवातसे नजत मीव जयेगी और क्व वो ज्वानीके दौरसे जयादा क्षरिग और कुरसद में डोगें. लेकीन डकीकत कुछ हुसरी है. मेरे दोस्त ! अक जबरदार वाकीक कार की बात सुनीये....

जैसे जैसे तुम्हारी उम्र बढती जयेगी छम्मेदारीयां भी बढती जयेगी. तुम्हारे तअव्लुकात जयादा और वक्त तंग होजयेगा, ताकत कम होजयेगी. सेहत जराब हो जयेगी, युस्ती कम होजयेगी, ईस लीये तुम अपनी छंढगीके लम्होंकी कहर करो. जे आन तुम्हे डसिव है. उन्को नामालुम और नजरोंसे ओजल मुस्तकबीव के साथ न जेडो.

कीत्ने डी लोग अपनी मुराद न पा सके यहाँ तक के वो मर गये और कीत्नी डसरतें है जे कबरों में अंहर दहन हो गध.

ईमाम जलीज जल बुढापेमें बिमारीयों में मुज्तवा लुअे तो बिस्तर पर पड गये. और अइसोस और रंज करते लुअे ये शेअर पढा करते थे. जइस्का तरजुमा ये है.

“अ्या अब बुढापे में तुम्हे उस्की उम्मीद है के तुम जैसेडी लोगें ? जैसे ज्वानीके दीनों में थे. जुदाकी कसम ! ये तेरे दीव का इरेज है. लला इटा पुराना कपडा नये कपडेकी तरह कड़ा होता है.” ? —

अकलमंद और तौकिक वाला वो शज्स है जे अपने मौजूदा वक्तका अक अक लम्हा कीसी इयदे या नेक अमलमें अर्य करे.

डजरत उमर (रदी.) बेकारी और बे इयदा वक्त की जरबादी को नापसंद इरमाते थे. आपका ईशाद है के जल में तुम मेंसे कीसीको जाली देभता लुं के न दीन के काम में मशगुल. और न आपिरत के काममें मशगुल तो मुंअे ये बात नापसंद है. (वक्तकी अडमियत - १०८)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

वक्तके बारे में पसंदीदा अश्वार :-

-: अरबी अश्वार का तरजुमा :-

- ◆ जे यीजें मेरे हाथसे निकल गइल अब वो मुझे हासिल होनेवाली नली. न ठजलारे अइसोस से, न आरजुआंसे, न अगर मगर से.
- ◆ जे वक्त गुजर गया अत्म हो गया और जइसा इन्तिजार है वो परइअे गैब में है. तेरा तो वो वक्त है जे अब तेरे पेशे निगाह है.
- ◆ इन्सान के हीलकी धडकनें उससे केइती है के तेरी जइंगी भीनटों और सेंकडो का नाम है.
- ◆ अपने आपकी मरनेके बाद के वीथे जिके जेरे के काबिल बनावे. कुं के मरने के बाद इन्सानका जिके उसकी उयाते सानीया है.
- ◆ इन्सानकी अजान उसकी पैदाइशके वक्त ही जाती है और उसकी नमाज मौत तक मोअप्पर कर ही जाती है.
- ◆ जइस शप्सकी राइमें गरमी या शरही इकावट उल दे उसमें कोइ जेरे नली.
- ◆ तेरी जइंगीके गीने युने अंद सांस है. जब भी अेक सांस उसका गुजरे तो ये समजके उसका अेक डिस्सा तुने कम कर दीया.

(वक्तकी आडमियत - ११८)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

